ॐ

श्री छहढाला

(जिज्ञासा-शान्ति)

रचयिता

संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री छहढाला जिज्ञासा-शान्ति
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
रचयिता	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
प्रसंग	:	२२वाँ चातुर्मास २०२० शिवपुरी (म. प्र.)
संस्करण	:	प्रथम
कवर-पृष्ठ	:	प्राची जैन शिवपुरी
लागत मूल्य	:	५०/-
प्रकाशक	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
प्राप्ति स्थान	:	संजीव कुमार जैन 2/251 सुहाग नगर, फिरोजाबाद (उ.प्र.) सम्पर्क-9412811798, 9412623916, 9425128817
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक परिवार

अंतर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस समय पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है वहीं अतिशय क्षेत्र छत्री मंदिर शिवपुरी में प्रवास के दौरान आगम के आधार पर संयमस्वर्ण महोत्सव मण्डित संतशिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्रीविद्यासागरजीमहाराज के परम शिष्य अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज ने प्रस्तुत कृति **'श्री छहढाला'** की रचना करके महान् उपकार किया है। साथ में **जिज्ञासा-शान्ति** देकर विषय को और भी सुदृढ़ बना दिया है। प्रस्तुत कृति सभी भव्यजीवों के धर्मध्यान करने में सहायक बनेगी। यह एक ऐसा ग्रन्थ है जो कि आगम का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रथम सोपान की तरह सिद्ध होगा। सैद्धान्तिक विषय होने के कारण कहीं-कहीं छन्दों में स्खलन वा कठिनाई महसूस हो सकती है। कृपया सँभाल के पढ़ें।

इस कृति के संयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राजेश बोटा, अर्चित, पुनीत, रूपेश, सौरभ, रौनक, पीयूष, अभिषेक, रोहित, कलश पाठशाला की बहिनें प्राची, एश्वर्या, चाहना, आशी, स्वाति, खुशी, प्रतिभा, रूपाली आदि और भी जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सभी को बहुत-बहुत साधुवाद एवं मुनिश्री का आशीर्वाद...।

सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना

विषय सूची

विषय	पृ. क्र.
१. श्री छहढाला पाठावली	५
२. मंगलाचरण	२०
१. श्री प्रथम ढाल (चतुर्गति भ्रमण वर्णन)	२४
२. श्री द्वितीय ढाल (मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र वर्णन)	६०
३. श्री तृतीय ढाल (सम्यग्दर्शन वर्णन)	८४
४. श्री चतुर्थ ढाल (ज्ञान व श्रावकचर्या वर्णन)	१२८
५. श्री पंचम ढाल (बारह भावना वर्णन)	१७८
६. श्री षष्टम ढाल (मुनि चर्या वर्णन)	१९६

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. त.सू.-तत्त्वार्थ सूत्र
२. स.सा.-समयसार
३. ध.पु.-धवला पुस्तक
४. स.त.टी.-समाधितंत्र टीका
५. मू.चा.-मूलाचार
६. भ.आ.-भगवती आराधना
७. स.सि.-सर्वार्थसिद्धि
८. रा.वा.-राजवार्तिक
९. ल.सा.-लब्धिसार
१०. आ.प.-आलाप पद्धति
११. न.च.वृ.-नयचक्र वृत्ति
१२. चौ.ठा.-चौबीस ठाणा
१३. म.पु.-महापुराण
१४. गो.जी.-गोम्मट्टसार जीवकाण्ड
१५. जै.सि.को.-जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश

श्री छहढाला

मंगलाचरण

(दोहा)

भवसुख शिवसुख मार्ग दे, वीतराग विज्ञान।
सम्यग्सार स्वरूप को, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

श्री प्रथम ढाल

चतुर्गति भ्रमण वर्णन

(लघु चौपाई)

१. जीवस्थान वर्णन

अनन्त विस्तृत है आकाश, बहुमध्य में लोकाकाश।
जिसमें तीन लोक छह द्रव्य, अनन्त प्राणी भव्य अभव्य॥

२. जीव-भेद वर्णन

सिद्ध सुखी दुखमय संसार, दुख से बचने खोजें द्वार।
जिनशासन दे जिसका ज्ञान, सुनो! गुनो!! कर लो कल्याण॥

३. संसारी-जीव वर्णन

जग के मूर्तिक जीव अशुद्ध, है अनादि से कर्म विबद्ध।
पंच परावर्तन सो पाएँ, कर्मकथा प्रभु वाँच न पाएँ॥

४. जीव-यात्रा वर्णन

क्षुद्रक भवदुख नित्य निगोद, सहके पाई थावर गोद।
भू जल आग वायु प्रत्येक, दो-दो भेद वनस्पति एक॥

५. त्रस पर्याय की दुर्लभता

त्याग कर्मफल चेतन पाए, दुर्लभ मणि सम त्रस-पर्याय।
कृमि चींटी भ्रमरादि कहाए, विकलत्रय के अति दुख पाए॥

६. पंचेन्द्रिय वर्णन

ज्यों दुर्लभतर मणि संयोग, त्यों पंचेन्द्रिय भव के योग।
अमन-समन के बनें तिर्यंच, निबल-सबल के सहे प्रपंच॥

७. तिर्यंच वर्णन

क्षुधा-तृषा सह ढोए भार, छेद-भेद शीतोष्ण अपार।
सह वध-बन्धन दुख संक्लेश, मरे नरक बिल पाये क्लेश॥

८. नरक दुख वर्णन एवं मनुष्य पर्याय की दुर्लभता

जहाँ सहे दुख चार प्रकार, आयु सागरों की कर पार।
पाई मनुज योनि पर्याय, दुर्लभतम मणि ज्यों चौराह॥

९. मनुष्य गर्भ वर्णन

मिले पुण्य से माँ का गर्भ, नौ-दस माह सहे दुख दर्द।
उलटे मटके सम लटकाए, मल-मूत्रों में सिकुड़े काय॥

१०. मनुष्य पर्याय वर्णन

रोते-रोते पाया जन्म, फिर भी हो परिवार प्रसन्न॥
खेल-खेल में बचपन खोए, यौवन में युवती को रोए॥

११. निष्फल नर पर्याय

प्रौढ़ दशा में घर के भार, ढोकर हुए वृद्ध लाचार।
बिना धर्म नर रत्न गँवाए, मिले सुरों के चार निकाय॥

१२. निष्फल देव पर्याय

भोग-भोग स्वर्गों के भोग, बिन सम्यक्त्व कहाँ सुख योग।
छोड़ स्वर्ग भू-जल तरु होए, दो हजार सागर यों खोए॥

१३. भवचक्र हर्त्ता भावना

मोक्ष योग्य जब किया न बोध, तब जा पहुँचे इतर निगोद।
सो 'विद्या' 'सुव्रत' नत शीश, कु-चक्र हर-दो प्रभु आशीष॥

❑ ❑ ❑

श्री द्वितीय ढाल

मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र वर्णन

(विष्णु)

१. मिथ्यात्व वर्णन

मिथ्यादर्शन ज्ञान आचरण, ये भव-भव दुख दें।
जिन्हें समझकर सुखेच्छु त्यागें, वे कुछ हम कह दें॥
सात तत्त्व छह द्रव्य आदि की, उल्टी श्रद्धाएँ।
मिथ्यादर्शन दो प्रकार का, जिन गुरु बतलाएँ॥

२. अगृहीत मिथ्यात्व वर्णन

प्रथम भेद है अगृहीत जो, मिथ्योदय से हो।
लक्ष्यभूत जीवादि तत्त्व का, ज्ञान न जिससे हो॥
शुद्ध बुद्ध एकत्व अरूपी, जीव अनन्त गुणी।
फिर भी तन को चेतन माने, वो मिथ्यात्व गुणी॥

३. तत्त्वों की विपरीत धारणा

अभिन्न भिन्न अत्यन्त भिन्न जो, अजीव कायों को।
राग द्वेष कर अपना समझे, आस्रव भावों को॥
द्रव्य भाव नौकर्म बन्ध कर, भाव शुभाशुभ हों।
भव तन भोग हितैषी लगते, तो क्या संवर हों॥

४. ज्ञान-चारित्र की विपरीत धारणा

गजस्नानवत् किये निर्जरा, अकाम या सविपाक।
मोक्ष योग्य श्रम ना कर पाए, मिथ्याज्ञान विपाक॥
यों मिथ्या-दृग-ज्ञान आदि की, विषय कषायें जो।
मिथ्या-चारित कहलाती हैं, पाप क्रियायें वो॥

५. गृहीत मिथ्यात्व वर्णन

भेद दूसरा गृहीत मिथ्या-दर्शन अब समझो।
कुगुरु कुदेव कुधर्म शास्त्र की, श्रद्धा से यह हो॥
स्वरूप से विचलित मत वाले, गुरु सब कुगुरु रहे।
भवसागर में हमें डुबाने, पत्थर नाव कहे॥

६. गृहीत मिथ्यात्व का विशेष वर्णन

अस्त्र-शस्त्र तिय वस्त्र आदि धर, जो खुद नाथ हुए।
वे कुदेव उनके अनुयायी, दोनों जगत छुए॥
जिसमें द्रव्य भाव हिंसा की, दुखद प्रतिज्ञा हो।
वो कुधर्म जिसकी श्रद्धा से, गृहीतमिथ्या हो॥

७. गृहीत मिथ्यात्व के भेद

यों त्रय चतु पच आदि तीन सौ, त्रेसठ मत मिथ्या।
संख्य असंख्य अनन्तों भी हों, गृहीत दृग श्रद्धा॥
संशय मोह विपर्यय जिसमें, सभी दोष रहते।
गृहीत मिथ्याज्ञान वही जो, मिथ्यात्वी रचते॥

८. मिथ्यात्व त्याग भावना

माया मिथ्या निदान से जो, बिना भेद-विज्ञान।
करें कुतप वह गृहीतमिथ्या, चारित दुख की खान॥
सो मिथ्या-दृग-ज्ञान-चरण तज, सम्यक्ता पाएँ।
'विद्या' धरकर 'सुव्रत' भजकर, शुद्धात्मा ध्याएँ॥

९. कल्याण हेतु शिक्षा

(दोहा)

मिथ्या चारित ज्ञान तज, होता सम्यग्ज्ञान।
फिर सम्यक्चारित्र धर, बनें सिद्ध भगवान॥

❑❑❑

श्री तृतीय ढाल

सम्यग्दर्शन वर्णन

(विद्योदय-मात्रिक)

१. मोक्षमार्ग दर्शन

प्रज्ञावान भव्य जन जिनको, निजहित भाए।
उन्हें कुशल आचार्य गुरु जी, मोक्ष बताए॥
मोक्ष प्राप्ति पथ सम्यग्र्शन, ज्ञान आचरण।
धर साधन व्यवहार साध्य फिर, निश्चय चेतन॥

२. चेतना के प्रकार

शुद्ध अशुद्ध चेतना दो विध, शास्त्र बताएँ।
ज्ञान चेतना शुद्ध सिद्ध वा, अर्हत पाएँ॥
ज्ञाता-दृष्टा शुद्ध चेतना, परमातम हैं।
अशुद्ध चेतना दो प्रकार के, जीवातम हैं॥

३. चेतना के अन्य प्रकार

प्रथम कर्मफल थावर सब हों, मिथ्यादृष्टि।
कर्म-चेतना त्रस पाते हैं, दोनों दृष्टि॥
हर मिथ्यादृष्टि दुख सहते, हैं बहिरातम।
अन्तर आतम त्रिविध जघन्य व, मध्यम उत्तम॥

४. चेतना के स्वरूप

जघन्य मध्यम व्यवहारी जो, मिथ्या हर के।
तत्त्व स्थान नवदेव आदि पर, श्रद्धा करके॥
अविरत सम्यग्दृष्टि जघन्य, अन्तर-आतम।
देशव्रती वा प्रवृत्ति वाले, मुनि हैं मध्यम॥

५. चेतना के तीन प्रकार

पर के त्यागी शुद्ध-उपयोगी, मुनि हैं उत्तम।
सो हे! आतम तज! बहिरातम, भज! परमातम॥
अन्तर-आतम बनने चर्या, सराग धारो।
सम्यग्दर्शन त्रय प्रकार धर, चरण निखारो॥

६. सम्यग्दर्शन के साधन

शिरोधार्य जिन-आज्ञा कर लें, गुरूपासना।
छः सामान्य विशेष गुणों से, जीव समझना॥
अजीव धर्म अधर्म काल नभ, पुद्गल जग में।
पुद्गल रूपी शेष अरूपी, चतुर भंग में॥

७. द्रव्य-तत्त्व आदि वर्णन

पुद्गल जीव चलें यदि तो दे, धर्म सहारा।
अगर ठहरना चाहें ये तो, अधर्म द्वारा॥
द्रव्यों के परिणमन वर्तना, काल द्विविध है।
जो अवगाह सभी को दे वो, गगन द्विविध है॥

८. आस्रव वर्णन

दो चउ छह बीसों इक्कीसों, अठबीस आदि।
त्यागें ये पुद्गल की माया, भवदुख व्याधि॥
तज अजीव अब सत्तावन विध, आस्रव तजिए।
मिथ्याविरति-प्रमाद कषाय व, योग न धरिए॥

९. सम्यग्दर्शन की सार्थकता

पाँच हेतु ये त्याग बन्ध भी, तजें चतुर्धा।
छह कारण से संवर कर तप, करें निर्जरा॥
कर्म नशा के मिले मोक्ष सों, सम्यक् करना।
प्रशम आदि शुभ सराग सम्यक् लक्षण धरना॥

१०. सम्यग्दर्शन के दोष

गुण विपरीत दोष शंकादिक, त्यागें आठों।
ज्ञान जाति कुल बल तन धन तप, मद तज आठों॥
कुगुरु कुदेव कुधर्म भक्त षट्, अनायतन तज।
देव लोक गुरु मूढ़ दोष कुल, पच्चीसों तज॥

११. सम्यग्दर्शन के चार अंग

अंग धरें निशंक ज्यों अंजन, दाएँ पग सम।
अनन्तमती सम निःकांक्षित हों, बाएँ पग सम॥
उद्वायन सम निर्विचिकित्सा, बायें कर सम।
अमूढ़दृष्टि रेवती जैसे, पीठ अंग सम॥

१२. सम्यग्दर्शन के शेष अंग

उपगूहन श्रेष्ठी जिनेन्द्र ज्यों, गुप्तांगों सम।
वारिषेण सम स्थितिकरण हो, दाएँ कर सम॥
हो वात्सल्य विष्णुमुनि ज्यों, वक्ष हृदय सम।
प्रभावना हो वज्रमुनि ज्यों, उच्च शीश सम॥

१३. सम्यग्दर्शन के प्रभाव

आठ अंग तन सम हों सम्यक्, व्यवहारी में।
अतः न जन्में नरक नपुंसक, पशु नारी में॥
दीन हीन कुल अल्प आयु वा, विकलांगों में।
यों अविरत हैं किन्तु जन्म लें, उच्च कुलों में॥

१४. सम्यग्दर्शन की सार्थकता

सम्यग्दर्शन प्रथम चरण हैं, मोक्षमहल के।
इस बिन सम्यग्ज्ञान चरित्रा, कभी न झलके॥
तीन चार भव में सम्यक् से, निज-हित पा लो।
सो जलने के पहले 'सुव्रत', ज्योति जला लो॥

❑ ❑ ❑

श्री चतुर्थ ढाल

ज्ञान व श्रावकचर्या वर्णन

(हाकलिका)

१ सम्यग्ज्ञान उत्पति हेतु

मिथ्यादर्शन त्याग चुके, जिनशासन स्वीकार चुके।
तो सम्यग्दर्शन होगा, सम्यग्ज्ञान तुरत होगा॥

२. सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान में भेद

एक साथ दोनों होते, साधन साध्य भेद होते।
सम्यग्दर्शन है साधन, ज्ञान उसी का साध्य सदन॥

३. सम्यग्ज्ञान के प्रकार

दो प्रकार के सम्यग्ज्ञान, पहले परोक्ष मति श्रुत ज्ञान।
इन्द्रिय मन से ज्ञान कराए, सकल द्रव्य की कुछ पर्याय॥

४. प्रत्यक्षज्ञान के भेद

विकल सकल दो विध प्रत्यक्ष, अवधि मनः विकला प्रत्यक्ष।
प्रत्यक्ष चेतना से मानें, कुछ रूपी सीमित जानें॥

५. ज्ञान के प्रकार

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय, होते क्षायोपशमिक सदय।
क्षायिक केवलज्ञान अमल, निरावरण प्रत्यक्ष सकल॥

६. केवलज्ञान की विशेषताएँ

ज्ञानावरणी जब सब जाए, तभी अनन्तानन्त कहाए।
अनन्त द्रव्य के गुण पर्याय, युग पद जाने लख असहाय॥

७. केवलज्ञान प्रभाव

दर्पण गोखुर बिम्बित ज्यों, लोकालोक झलकते यों।
शीघ्र मोक्ष का अधिकारी, जग में है महिमा न्यारी॥

८. ज्ञान अभ्यास हेतु प्रेरणा

अतः ज्ञान अभ्यास करो, आठ अंग में हृदय धरो।
उच्चारण हो शुद्ध भला, शब्दाचार अंग पहला॥

९. ज्ञान-अंग वर्णन

शास्त्र अर्थ सम्यक् करना, अर्थाचार क्रमिक करना।
पढ़कर सही अर्थ करना, उभयाचार चित्त धरना॥

१०. ज्ञान अंग वर्णन

योग्य समय स्वाध्याय करें, इसको कालाचार कहें।
शास्त्र विनय करके पढ़ना, विनयाचार इसे कहना॥

११. ज्ञान के अंग

करें त्याग कुछ शास्त्र पढ़ें, ये उपधानाचार कहें।
गुरु श्रुत का बहुमान करें, यह बहुमानाचार धरें॥

१२. ज्ञान के अंग

गुरु श्रुत का ना नाम छिपे, वो अनिह्नवाचार रहे।
ज्ञान अंग ये आठ रहे, बिन संयम दुखभार रहे॥

१३. ज्ञान प्राप्ति हेतु आवश्यक

सो सम्यक्त्वाचरण करो, कुलाचार धर व्यसन हरो।
पाक्षिक श्रावक स्वीकारो, आठ मूलगुण फिर धारो॥

१४. चारित्र बिना ज्ञान की असमर्थता

केवलज्ञान मनःपर्यय, बिन चारित्र न हुए उदय।
सो दो विध धर सकल-विकल, गृहियों का चारित्र विकल॥

१५. नैष्टिक श्रावक का वर्णन

अणु-गुण-शिक्षा व्रत के दल, एकदेश-अणुव्रत मंगल।
अणुव्रत पाँच शीलव्रत सात, बारह व्रत नैष्ठिक के साथ॥

१६. अहिंसा अणुव्रत का वर्णन

त्रस हिंसा नव कोटि से, जहाँ तजें भव भीति से।
थावर हिंसा सीमित हो, प्रथम अहिंसा अणुव्रत वो॥

१७. सत्य अणुव्रत वर्णन

स्थूल झूठ ना खुद बोलें, ना बुलवाने मुख खोलें।
विपद सत्य प्रतिबन्धित हो, सत्य दूसरा अणुव्रत वो॥

१८. अचौर्य अणुव्रत वर्णन

रखी गिरी भूली वस्तु, बिना दान दी पर वस्तु।
खुद ना लें ना दें पर को, है अचौर्य अणुव्रत वो॥

१९. ब्रह्मचर्य अणुव्रत का स्वरूप

पर-नारी के निकट कभी, ना भेजें ना जाएँ कभी।
निज-नारी तक सीमित हो, ब्रह्मचर्य का अणुव्रत वो॥

२०. परिग्रह परिमाण अणुव्रत स्वरूप

धन धान्यादिक दस परिग्रह, कर सीमित बहु ना संग्रह।
इच्छा-मूर्च्छा सीमित हो, परिग्रह परिमाण अणुव्रत वो॥

२१. गुणव्रत का स्वरूप

अणुव्रत का जो उपकारी, गुणव्रत तीन भेद धारी।
गुणव्रत में दिग्व्रत पहला, दिशा सीम कर बाह्य न जा॥

२२. देशव्रत, अनर्थदण्डव्रत का स्वरूप

उसमें काल क्षेत्र कम कर, धरें देशव्रत जीवन भर।
बिना प्रयोजन कर्म तजें, अनर्थदण्ड व्रत पाँच गहें॥

२३. शिक्षा व्रत का स्वरूप

मुनिव्रत की शिक्षा दें जो, चार तरह शिक्षाव्रत वो।
पहला सामायिक करना, पाप त्याग समता धरना॥

२४. प्रौषध-भोग-उपभोग स्वरूप

पर्व अष्टमी चौदस को, प्रौषध का उपवास करो।
भले रहे आवश्यकतम, करें भोग उपभोग नियम॥

२५. अतिथिसंविभाग व्रत स्वरूप व अतिचार

मुनि की पूर्ण व्यवस्था कर, अतिथि-संविभाग व्रत धर।
पाँच-पाँच तज व्रत-अतिचार, अंत समय सल्लेखन धार॥

२६. साधक श्रावक स्वरूप

साधक श्रावक बनकर के, करना समाधि व्रत धर के।
सोलहवें तक स्वर्ग सिधार, स्वर्ग त्याग हों नर अनगार॥

२७. मुनि से मोक्ष स्वरूप

मुनि अरिहन्त जिनेन्द्र बनें, समवसरण से धर्म कहें।
ध्यान लगा निर्वाण गहें, सो 'सुव्रत' मुनि धर्म कहें॥

❑❑❑

श्री पंचम ढाल

बारह भावना

(दोहा)

१. अनित्य भावना

रिश्ते नाते सम्पदा, तन बल भोग अपार।
हैं अनित्य सब कुछ यहाँ, क्षणभंगुर संसार॥

२. अशरण भावना

कौन बचाए मृत्यु से, हवा दवा विज्ञान।
इस अशरण संसार में, शरण भेद विज्ञान॥

३. संसार भावना

देव नारकी नर पशु, सब भोगें दुख भोग।
मोक्ष बिना संसार में, कहीं न सुख संयोग॥

४. एकत्व भावना

नहीं किसी के हम यहाँ, कोई न अपना यार।
यह एकत्व विचार के, आत्म-तत्त्व ही सार॥

५. अन्यत्व भावना

जब तन भी अपना नहीं, फिर क्यों करते पाप।
यम के आगे ना चले, कुछ अन्यत्व विलाप॥

६. अशुचि भावना

मल-मूत्रों की देह दे, सूतक-पातक शोर।
दीक्षा बिन सब व्यर्थ है, अशुचि देह की डोर॥

७. आस्रव भावना

सत्तावन विध से रचें, हम अपना संसार।
कर्मास्रव को रोक के, होगी नैया पार॥

८. संवर भावना

जीवन-रथ पर सारथी, संवर हुआ सवार।
गजरथ से आतम गयी, मोक्षपुरी के द्वार॥

९. निर्जरा भावना

कर्म-कालिमा ने दिया, निज का रूप विगार।
तप-उबटन की निर्जरा, करे आत्म शृंगार॥

१०. लोक भावना

स्वयं सिद्ध नर रूप सम, लोक रहा भ्रम जाल।
इसमें भटकें जीव सब, धर्म बिना बेहाल॥

११. बोधिदुर्लभ भावना

दुर्लभ सम्यग्दर्श है, दुर्लभ सम्यग्ज्ञान।
दुर्लभ मुनि चारित्र सो, तजें मोह अज्ञान॥

१२. धर्म भावना

दुख दें मिथ्यामत सभी, लगते धर्म समान।
धर्म मात्र जिनधर्म है, भक्त करे भगवान॥

१३. उपसंहार

भाकर बारह भावना, होता दृढ़ वैराग्य।
'सुव्रत' देवर्षि बनें, करें मुक्ति से राग॥

❑ ❑ ❑

श्री षष्टम ढाल

मुनिचर्या वर्णन

(ज्ञानोदय)

१. मोक्षमार्ग स्वरूप

है संसार असुख तो सुख क्या, कहाँ मिले किस साधन से।
भव्य जीव की यह जिज्ञासा, शांत हुई गुरु भगवन से॥
सुख है मोक्ष मिले निज में जो, मोक्षमार्ग के साधन से।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्रा, मोक्षमार्ग बनता इनसे॥

२. सकल चारित्र वर्णन

सम्यग्दर्शन दो प्रकार का, साधन प्रथम सराग हुआ।
साध्य दूसरा वीतराग जो, मुनिव्रत धरकर सिद्ध हुआ॥
सो सराग सम्यग्दर्शन धर, वीतराग का यत्न करो।
धरो सकल चारित्र महाव्रत, मुनि बनकर शिव साध्य वरो॥

३. मुनि मूलगुण वर्णन

धारो अट्ठाईस मूलगुण, जिनमें पाँच महाव्रत हैं।
पाँच समिति इन्द्रिय जय पाँचों, सात शेष आवश्यक छै॥
द्रव्य भाव सब हिंसा तजना, प्रथम अहिंसा महाव्रत है।
दुखद सत्य हर झूठ त्यागना, दूजा सत्य महाव्रत है॥

४ . महाव्रत वर्णन

बिन दी वस्तु कभी न लेना, तीजा अचौर्य महाव्रत है।
नव कोटि से स्त्री तजना, ब्रह्मचर्य ये महाव्रत है॥
मोह संग-उपकरण त्यागना, परिग्रह त्याग महाव्रत है।
चार हाथ भू अग्र देखकर, दिन में गति ईर्यापथ है॥

५ . समिति वर्णन

हित-मित आगम सहित बोलना, सुखकर भाषा समिति यही।
बोधि हेतु आहार शुद्धि ही, शुद्ध ऐषणा समिति रही॥
लें रक्खें उपकरण देखकर, आदान निक्षेपण समिति।
दोष रहित मल मूत्र आदि का, त्याग रहा व्युत्सर्ग समिति॥

६ . मुनि मूलगुण वर्णन पंचेन्द्रिय-जय वा आवश्यक

स्पर्श श्रोत्र रस चक्षु नासिका, ये पंचेन्द्रिय जय करना।
समता धर सामायिक करके, चौबीसी की थुति करना॥
करें वन्दना प्रतिक्रमण फिर, स्वामी प्रत्याख्यान करें।
कायोत्सर्ग करें मूर्छा तज, षट्-आवश्यक रोज करें॥

७ . शेष मूलगुण वर्णन

केशलोंच अस्नान नग्नता, थिति-भोजन क्षिति-शयन करें।
अदन्तधावन एक भुक्ति ये, सात शेष गुण ग्रहण करें॥
जैनधर्म के पता-पताका, चलते-फिरते तीर्थ-मुनि।
धारें तप दस धर्म भावना, बाईस परिषह सहें मुनि॥

८ . तेरह प्रकार चरित्र वर्णन

तेरहविध-चारित्र धार ज्यों, ध्यान गुप्ति आसीन हुये।
षट्-कारक के भेद मिटे त्यों, शुद्ध बुद्ध निज लीन हुये॥
वीतराग सम्यग्दर्शन ये, रहा शुद्ध उपयोग यही।
यही स्वरूपाचरण-चरित्रा, निश्चय रत्नत्रय है यही॥

९ . शुद्धोपयोग के स्वामी वर्णन

कायोत्सर्ग दशा निर्वृत्ति, में मुनियों को सम्भव ये।
वस्त्रधारि को कभी न होता, अतुलनीय आतम-सुख ये॥
मुनिमुद्रा का दर्शन दुर्लभ, भव्य जीव को धन्य करे।
अभव्य जीवों को प्रभु जैसा, कहाँ मिले कब धन्य करे॥

१०. शुद्धोपयोग का प्रभाव

यों एकत्व-विभक्त आतमा, ज्ञाता-दृष्टा गुण-श्रेणी।
नय निश्चय व्यवहार पक्ष बिन, ध्याकर चढें क्षपकश्रेणी॥
घाति हरण कर बने केवली, समवसरण अरिहन्त हुये।
दिव्यध्वनि दे तीर्थ प्रवर्तन, करके सिद्ध महन्त हुये॥

११ . सिद्ध स्वरूप वर्णन

सिद्धों का क्या कहना भैया, अनुपम गति ध्रुव अचल रहे।
भव-शव-यात्रा विफल बनाकर, शिवयात्रा में सफल रहे॥
रहें अनन्तानन्त काल तक, प्रभु लोकाग्र शिखर धामी।
त्रय जग में संहार मचे पर, टस से मस ना हों स्वामी॥

१२ . मनुष्य पर्याय की सार्थकता

नर-पर्याय धन्यकर डाली, धन्य चार पुरुषार्थ किए।
पंच परावर्तन दुख त्यागे, सार्थक निज परमार्थ किए॥
अनादि के मिथ्यादर्शन वा, मिथ्याज्ञान चरित तज के।
भेदाभेद धार रत्नत्रय, मोक्ष गये आतम भज के॥

१३. लेखक की अंतिम धर्मभावना

हमको पंचमकाल मिला तो, मोक्ष योग्य श्रम कर ना सकें।
किन्तु महाव्रत अणुव्रत धरके, दुर्गति से तो बच हि सकें॥
इतना भी यदि करन सकें तो, सम्यग्दर्शन प्राप्त करें।
फिर 'विद्या' के 'सुव्रत' बनकर, भव का भ्रमण समाप्त करें॥

❑ ❑ ❑

प्रशस्ति

(दोहा)

कोरोना के काल में, याद किए गुरु मंत्र।
लिखा जिनागम रूप में, श्री छहढाला ग्रन्थ॥१॥
अल्पबुद्धि छद्मस्थ मैं, श्रुत सिद्धान्त अपार।
कमियाँ अतः सुधार के, शुद्ध पढें हों पार॥२॥
स्वतंत्रता दिवस शिवपुरी, शनि दो हजार बीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥३॥

❑ ❑ ❑

श्री छहढाला

जिज्ञासा-शान्ति

मंगलाचरण

(दोहा)

भवसुख शिवसुख मार्ग दे, वीतराग विज्ञान।
सम्यग्सार स्वरूप को, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

अर्थ– देवगति व मनुष्यगति सम्बन्धी सर्वोत्कृष्ट सांसारिक सुख एवं आत्मिक सुख व मोक्ष सम्बन्धी सुख का मार्ग वीतराग विज्ञान अर्थात् जिनशासन देता है। ऐसे सम्यग्सार स्वरूप को मन-वचन-काय रूप ध्यान से मेरा/हमारा नमोऽस्तु हो।

भावार्थ– सांसारिक सुख एवं मोक्ष सुख देने वाला जिनशासन है अतः जब तक मोक्ष प्राप्त नहीं होता तब तक संसार में दुर्गति दुख चक्र से बचने के लिए जिनशासन ही शरणभूत है।

जिज्ञासा १. मंगलाचरण किसे कहते हैं ?

शान्ति– मंगलमय आचरण या मांगलिक आचरण को मंगलाचरण कहते हैं अर्थात् 'मं' यानि पापों को 'गल' यानि गलाना अर्थात् जिसमें पापों को गलाया जाता है, जिसमें पापों को नष्ट किया जाता है, या जो पापों से बचाता है वह मंगलाचरण कहलाता है। अथवा 'मंग' यानि पुण्य को 'ल' यानि लाता है अर्थात् जो पुण्य को लाता है वह मंगलाचरण कहलाता है। तात्पर्य यह हुआ कि जो पाप को गलाता है और पुण्य को लाता है वह मंगलाचरण कहलाता है।

जिज्ञासा २. मंगलाचरण क्यों किया जाता है ?

शान्ति– किसी कार्य को निर्विघ्न ही नहीं, सानन्द ही नहीं बल्कि सातिशय सम्पन्न करने हेतु मंगलाचरण किया जाता है। अथवा किसी ग्रन्थ का स्वाध्याय करने के पूर्व ६ बातों का कथन करना अनिवार्य होता है। १. मंगल २. निमित्त ३. हेतु ४. प्रमाण ५. शास्त्र का नाम ६. शास्त्र-कर्ता। इनमें प्रथम मंगलाचरण है इसलिए किसी भी शास्त्र को प्रारम्भ करने के पूर्व मंगलाचरण किया जाता है।

जिज्ञासा ३. मंगलाचरण कितने प्रकार का होता है ?

शान्ति– मंगलाचरण दो प्रकार का होता है–

१. मुख्य मंगलाचरण–परमेष्ठी आदि का गुण स्मरण करना, अधर्म का नाश करना और धर्म का स्वीकार करना आदि जैसे- णमोकार मंत्र, चत्तारि दण्डक आदि।

२. गौण मंगलाचरण–पूर्ण कलश, अक्षत, पुष्प आदि।

मंगलचारण दो प्रकार का यह भी होता है–

१. निबद्ध मंगलाचरण–स्वयं बनाकर मंगलाचरण करना।

२. अनिबद्ध मंगलाचरण–दूसरों का बना हुआ मंगलाचरण करना।

मंगलाचरण तीन प्रकार का भी होता है–

१. आदि मंगलाचरण–शास्त्र के प्रारम्भ में मंगलाचरण करने से शिष्यगण शास्त्र के पारगामी होते हैं।

२. मध्य मंगलाचरण–शास्त्र के मध्य में मंगलाचरण करने से विद्या की प्राप्ति निर्विघ्न होती है।

३. अंत मंगलाचरण–शास्त्र के अंत में मंगलाचरण करने से विद्या का फल प्राप्त होता है।

मंगल चार प्रकार का भी होता है–

१. द्रव्य मंगलाचरण–नमस्कार रूप वचन आदि।

२. भाव मंगलाचरण–कषाय आदि का त्याग कर परमेष्ठी गुण स्मरण।

३. लौकिक मंगलाचरण–अष्ट मंगल द्रव्य आदि।

४. लोकोत्तर मंगलाचरण–पवित्र द्रव्य क्षेत्र आदि।

जिज्ञासा ४. मंगलाचरण के क्या प्रयोजन होते है ?

शान्ति– मंगलाचरण के निम्न प्रयोजन होते हैं–

१. तद्गुण लब्धि–परमेष्ठी गुण अपनी आत्मा में प्रकट करने हेतु।

२. श्रेयोमार्ग सिद्धि–आत्म कल्याण हेतु।

३. नास्तिकता का परिहार–देव शास्त्र गुरु का श्रद्धान करने हेतु।

४. निर्विघ्न कार्य सिद्धि—स्वाध्याय के विघ्न टालने हेतु।
५. कृतज्ञता ज्ञापन—किए गए उपकार को स्वीकार करने हेतु।
६. शिष्टाचार पालन—धर्म परम्परा अनुसार विनय आदि करने हेतु।
७. शिक्षा प्रदान—श्रुत परम्परा को अक्षुन्न बनाए रखने हेतु।

जिज्ञासा ५. ढाल किसे कहते हैं।

शान्ति— जैसे युद्ध में सैनिक अपनी रक्षा हेतु शस्त्र-ढाल प्रयोग करते हैं, वैसे ही कर्मयुद्ध में चेतन अपनी रक्षा हेतु शास्त्र रूपी ढाल का प्रयोग करते हैं अर्थात् कर्म युद्ध में स्वाध्याय करते हुए अपनी रक्षा करना ढाल कहलाता है अथवा ढाल यानि चाल, चाल यानि लय या गति अर्थात् किसी शास्त्र को पढ़ने की लय को ढाल कहते हैं अर्थात् शास्त्र में प्रयोग किए जाने वाले छन्दों को ढाल कहते हैं। तात्पर्य यह हुआ कि श्री छहढाला ग्रन्थ में छह छन्दों का प्रयोग किया गया है, अगर किसी ग्रन्थ में छह से कम या छह से अधिक छन्द होंगे तो उस ग्रन्थ को युक्ति के अनुसार छहढाला कहना उचित नहीं होगा।

जिज्ञासा ६. जब पहले से छहढाला ग्रन्थ था तो श्री छहढाला लिखने की क्या आवश्यकता है?

शान्ति— जिनके देव दिगम्बर, जिनके गुरु दिगम्बर और जिनके शास्त्र दिगम्बर आचार्य/मुनि प्रणीत होते हैं, उनको ही हम दिगम्बर जैन कहते हैं, इस युक्ति के अनुसार शास्त्र दिगम्बर आचार्य/मुनि के द्वारा प्रणीत होना चाहिए तभी हमारा दिगम्बरत्व सुरक्षित रहेगा। इस अभाव की पूर्ति हेतु 'श्री छहढाला' का अवतरण हुआ है। हम आपको किसी भी शास्त्र पढ़ने का निषेध नहीं कर रहे हैं, हम आपका दिगम्बरत्व सुरक्षित करने की युक्ति बता रहे हैं।

जिज्ञासा ७. इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमें अन्य ग्रन्थ नहीं पढने चाहिए?

शान्ति— नहीं! हमने ऐसा नहीं कहा बल्कि हमारा आशय यह है कि हमें मुख्य रूप से निर्ग्रन्थ रचित ग्रन्थ का ही स्वाध्याय करना चाहिए क्योंकि यही केवलीप्रणीत धर्म की परम्परा है। इसी को आर्ष परम्परा भी कहते हैं।

जिज्ञासा ८. धर्म मार्ग अपनाने से मोक्षमार्ग और मोक्ष आदि प्राप्त होते हैं या सांसारिक सुख भी प्राप्त होते हैं ?

शान्ति— जी हाँ! धर्मपथ अपनाने से केवल पारलौकिक सुख ही प्राप्त नहीं होते अपितु सांसारिक सुख भी प्राप्त होते हैं। अगर ऐसा नहीं माना जाएगा तो धर्मात्मा व्यक्ति को संसार में दरिद्र होकर रहना पड़ेगा जबकि ऐसा देखने में नहीं आता। अतः धर्म से भवसुख और शिवसुख दोनों प्राप्त होते हैं।

जिज्ञासा ९. वीतराग विज्ञान क्या कहलाता है ?

शान्ति— तीर्थंकर प्रकृति का उदय होने पर जब केवलज्ञान होता है और समवसरण में अरिहन्त प्रभु विराजमान होते हैं तो यही सर्वज्ञ-दशा और आत्मिक-दशा वीतराग-विज्ञानता कहलाती है। जिसका प्रारम्भ रत्नत्रयधारी मुनि अवस्था से होता है।

जिज्ञासा १०. सम्यग्सार स्वरूप क्या कहलाता है ?

शान्ति— जैसे पुष्पों का सार इत्र होता है और गोरस का सार घी होता है, ऐसे ही जीवन का सर्वोत्तमसार, सम्यग्सार स्वरूप ज्ञान चेतना है। यह मुख्य रूप से सिद्ध अवस्था में एवं गौण रूप से अरिहन्त अवस्था में पाई जाती है और यही सम्यग्सार स्वरूप कहलाता है।

जिज्ञासा ११. मार्ग किसे कहते हैं ?

शान्ति— जो महापुरुषों के द्वारा स्वीकार किया जाता है अथवा जिस पर चलकर महापुरुष मुक्त होते हैं अथवा जिस पर चलने से हमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति होती है उसे मार्ग कहते हैं। हमें अभी तक लक्ष्य की सिद्धि या मुक्ति प्राप्त नहीं हुई है इसलिए यह कहा जा सकता है कि हम अभी तक कोल्हू के बैल की तरह चल रहे हैं किन्तु मार्ग पर नहीं चले।

जिज्ञासा १२. मोक्षमार्ग किसे कहते हैं ?

शान्ति— सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र की एकता के स्वरूप को मोक्षमार्ग कहते हैं इसी का वर्णन नवीन श्री छहढाला में पढ़ने और समझने को मिलेगा। (ता.सू. १-१)

श्री प्रथम ढाल

चतुर्गति भ्रमण वर्णन

१. जीवस्थान वर्णन

(लघु चौपाई)

अनन्त विस्तृत है आकाश,
बहुमध्य में लोकाकाश।
जिसमें तीन लोक छह द्रव्य,
अनन्त प्राणी भव्य-अभव्य॥

अर्थ— अनन्त विस्तार वाले आकाश के बहुमध्य भाग में लोकाकाश है। इस लोकाकाश में तीनलोक हैं जिनमें छह प्रकार के द्रव्य पाए जाते हैं। जिनमें अनन्त जीव भव्य और अभव्य के रूप में निवास करते हैं।

भावार्थ— अनन्त विस्तार वाले उस स्थान को जिसमें छह द्रव्य, भव्य-अभव्य जीव आदि पाए जाते हैं उसको लोकाकाश कहते हैं।

जिज्ञासा १. अनन्त किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिस राशि में अनन्त का गुणा, अनन्त का भाग अथवा अनन्त घटाने का परिणाम अनन्त ही आए, उसे अनन्त कहते हैं।

जिज्ञासा २. बहुमध्य क्या कहलाता है ?

शान्ति— जिसमें एकदम केन्द्र न होकर आसपास में भी कुछ विस्तार होता है, उसे बहुमध्य कहते हैं।

जिज्ञासा ३. भव्य जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिन संसारी जीवों में अपनी आत्मा में रत्नत्रय प्रकट करने की क्षमता होती है, उस योग्यता वाले जीवों को भव्य जीव कहते हैं और उस योग्यता को भव्यता कहते हैं।

जिज्ञासा ४. भव्य जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

शान्ति— भव्य जीव तीन प्रकार के होते हैं-

१. निकट या आसन्न भव्य—जो जीव अल्पसमय में अर्थात् दो-तीन भवों में रत्नत्रय प्रकट कर मुक्त होते हैं, उन्हें निकट भव्य

कहते हैं।

२. दूरभव्य—जो जीव भविष्य में बहुत समय के बाद रत्नत्रय प्रकट करके मोक्ष प्राप्त करेंगे, उन्हें दूरभव्य कहते हैं।

३. दूरानुदूर भव्य (अभव्य वत् भव्य)—जो जीव भविष्य में बहुत आगे समय जाकर भी रत्नत्रय प्रकट नहीं कर पाते हैं और भव्य होकर भी अभव्य जैसा जीवन व्यतीत करते हैं, उन्हें दूरानुदूर भव्य कहते हैं। (स.तं.)

जिज्ञासा ५. अभव्य जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिन जीवों के पास रत्नत्रय शक्ति के रूप में तो रहता है, परन्तु उसकी अभिव्यक्ति करने में वे कभी समर्थ नहीं होते हैं अर्थात् जो जीव तीन-काल में तीन-लोक में कभी भी अपनी आत्मा में रत्नत्रय प्रकट नहीं कर सकते, उन्हें अभव्य जीव कहते हैं।

जिज्ञासा ६. लोक किसे कहते हैं ?

शान्ति— आकाश के उस स्थान को जिसमें जीव आदि षट्-द्रव्य पाए जाते हैं, उसे लोक कहते हैं।

जिज्ञासा ७. लोक कितने होते हैं ?

शान्ति— लोक तीन होते हैं-

१. अधोलोक—सुमेरु पर्वत की जड़ के नीचे के लोक के स्थान को अधोलोक कहते हैं। यहाँ भवनवासी और व्यन्तर देवों तथा नीचे के स्थान में नारकियों का निवास होता है।

२. मध्यलोक—सुमेरु पर्वत की जड़ से लेकर चोटी तक के सम्पूर्ण विस्तार को मध्यलोक कहते हैं। यहाँ मनुष्य, तिर्यंच, ज्योतिषी देव और व्यन्तर देव निवास करते हैं।

३. ऊर्ध्वलोक—सुमेरु पर्वत की शिखर के ऊपर के लोक के स्थान को ऊर्ध्वलोक कहते हैं। यहाँ कल्पवासी और कल्पातीत देव निवास करते हैं और लोकशिखर लोकान्त में सिद्ध परमेष्ठी विराजमान रहते हैं। लेकिन स्थावर जीव तीनों लोकों में पाए जाते हैं।

जिज्ञासा ८. द्रव्य किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिन पदार्थों में द्रवणशीलता, परिणमनशीलता पाई जाती है, उन्हें द्रव्य कहते हैं अथवा जिनमें गुण और पर्याय पाए जाते हैं, उन्हें द्रव्य कहते हैं। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये द्रव्य होते हैं। (त.सू. ५-३८)

जिज्ञासा ९. द्रव्य कितने होते हैं ?

शान्ति– द्रव्य अनन्तानन्त होते हैं।

जिज्ञासा १०. अरे! हमने तो सुना है कि द्रव्य छह होते हैं और आप यहाँ अनन्तानन्त बता रहे हैं, तो फिर दोनों में से हम सत्य किसे मानें ?

शान्ति– आपका कहना यद्यपि सत्य है तथापि वहाँ पर द्रव्य छह कहने का तात्पर्य प्रकारवाची से है न की संख्या से और यहाँ हमने प्रकार न बताकर संख्या बतलाई है। यही युक्ति, तत्त्व, इन्द्रियाँ आदि में भी अपेक्षा रखती हैं।

जिज्ञासा ११. आकाश किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव आदि सभी द्रव्यों को अवगाहन या स्थान देता है, वह आकाश कहलाता है। इसका विस्तार सभी दिशाओं में अनन्त होता है। (त.सू ५-९)

जिज्ञासा १२. क्या आकाश के प्रकार भी होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! आकाश के दो प्रकार होते हैं–
१. अलोकाकाश और २. लोकाकाश।

जिज्ञासा १३. अलोकाकाश किसे कहते है ?

शान्ति– आकाश के जिस भाग में केवल आकाश ही रहता है उसे अलोकाकाश कहते हैं।

जिज्ञासा १४. लोकाकाश किसे कहते हैं ?

शान्ति– लोक को ही लोकाकाश कहते हैं।

२. जीव-भेद वर्णन

सिद्ध सुखी दुखमय संसार,
दुख से बचने खोजें द्वार।
जिनशासन दे जिसका ज्ञान,
सुनो! गुनो!! कर लो कल्याण॥

अर्थ– उन छह द्रव्यों और भव्य-अभव्य रूप अनन्त प्राणियों से भरे तीन-लोक में सिद्ध जीव जो कि लोक शिखर पर निवास करते हैं वे तो सुखी है किन्तु पूरा संसार दुखी है और दुख से बचने के लिए मार्ग खोजता है इस मार्ग हेतु जिनशासन-जैनधर्म ज्ञान देता है। इस ज्ञान को सुनकर-चिन्तनकर अपना कल्याण करना चाहिए।

भावार्थ– संसार में सिद्ध जीव तो सुखी हैं अन्य शेष सभी जीव दुखी हैं। इस दुख से बचने हेतु जिनेन्द्र प्रभु का शासन धर्ममार्ग बताता है जिसके द्वारा हमें अपना कल्याण करना चाहिए।

जिज्ञासा १ . सिद्ध किन्हें कहते हैं ?

शान्ति– संसारी प्राणी जब अपने अष्ट कर्मों को नष्ट कर लेते हैं तो उन मुक्त जीवों को सिद्ध कहते हैं।

जिज्ञासा २. सुख किसे कहते हैं ?

शान्ति– 'सु' अर्थात् अच्छा 'ख' अर्थात् संवेदन। जिस गुण के कारण अच्छा संवेदन होता है उसे सुख कहते हैं।

जिज्ञासा ३. दुख किसे कहते हैं ?

शान्ति– 'दु' अर्थात् बुरा 'ख' का अर्थात् संवेदन। जिस गुण से बुरा संवेदन होता है उसे दुख कहते हैं।

जिज्ञासा ४. संसार किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिसमें जीव भली-भांति जन्म-मरण करते हुए दुख भोगते रहते हैं उस चक्र को संसार कहते हैं अथवा जो समीचीन रूप से सरकता है, वह संसार कहलाता है अथवा संसरण करने को संसार कहते हैं। (स.सि पृ. ११९)

'सृ' धातु गति के अर्थ में आती है–
'सं' यानि समीचीन 'सार' यानि सरकना।
जो सम्यक् सरकता है,
वह संसार कहलाता है। (मूकमाटी पेज.१६१)

जिज्ञासा ५. जिनशासन किसे कहते हैं ?

शान्ति– अनादिकाल से चले आ रहे और अनन्तकाल तक चलने वाले जिनेन्द्र भगवान के उपदेशों के मार्ग को जिनशासन कहते हैं अथवा जिस शासन में लीन होकर अनन्तानन्त जीव संसार-सागर से पार हो जाते हैं उन सभी जीवों के शरणभूत आश्रय को जिनशासन कहते हैं। (मू.चा. ११५)

जिज्ञासा ६. क्या जिनशासन के अलावा और कोई शासन भी होते हैं ?

शान्ति– नहीं! तीन-लोक में और तीन-काल में मात्र एक जिनशासन ही होता है। इसी को जिनधर्म भी कहते हैं। अन्य सभी तो व्यक्ति विशेष के द्वारा चलाए गए मत कहलाते हैं और मत को धर्म मानना उचित नहीं है।

जिज्ञासा ७. क्या धर्म में और मत में अन्तर होता है ?

शान्ति– जी हाँ! जो धारण किया जाए या जो धारण करने वाले को उच्च स्थान पर पहुँचाता है वह अनादि-अनन्त परम्परा धर्म है किन्तु जो व्यक्ति विशेष से चलाई जाने वाली या अवस्था विशेष से उत्पन्न होने वाली परम्परा है उसे मत कहते हैं।

जिज्ञासा ८. क्या मत धर्म नहीं है ?

शान्ति– जी हाँ! मत धर्म नहीं है क्योंकि मत अर्थात् विचार या मान्यता। जब एक व्यक्ति के विचार के बहुत से लोग अनुयायी मिल जाते हैं तो उस धारा को मत कहते हैं।

जिज्ञासा ९. ज्ञान किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिसके द्वारा कुछ जाना जाए या जो हमें कुछ जनवाता हो, बताता हो वह ज्ञान कहलाता है अथवा जो राग से विरक्त करे, मोक्षमार्ग से अनुक्त करे और मैत्री से संयुक्त करे जिनशासन में वह ज्ञान है। (मू.चा. २६८)

जिज्ञासा १०. क्या सुने बिना, चिन्तन किए बिना अपना कल्याण नहीं हो सकता ?

शान्ति– हाँ! जैसे बिना उपदेश के शिक्षा प्राप्त करना या किसी मार्ग पर चलना कठिन होता है वैसे ही उपदेश सुने बिना, उस पर चिन्तन किए बिना और उसका आचरण किए बिना अपना कल्याण असम्भव है।

जिज्ञासा ११. कल्याण किसे कहते हैं ?

शान्ति– अनादिकाल से संसारी प्राणी अपने कर्मों के द्वारा दुखी और अशान्त हैं और इन कर्मों को नष्ट कर अपनी चेतना से सुख शांति प्रकट करने को कल्याण कहते हैं, इसी का नाम निर्वाण भी है।

जिज्ञासा १२. क्या संसार में कोई सुखी नहीं होता ?

शान्ति– हाँ! संसार में कोई भी जीव सुखी नहीं होता क्योंकि संसार में सुख लेश मात्र भी नहीं है। संसार में तो सुखाभास होता है अतः सभी प्राणी दुख से डरते हैं और सुख चाहते हैं।

जिज्ञासा १३. सुखाभास क्या कहलाता है ?

शान्ति– पंचेन्द्रिय के विषय में जो क्षणिक आनन्द प्राप्त होता है लेकिन जो दुख का निमित्त बनता है वह क्षणिक सुख ही सुखाभास कहलाता है। इसमें सुख नहीं होता मात्र सुख की कल्पना होती है सो यह दुख ही कहलाता है इसलिए संसारी प्राणी इससे बचने हेतु मार्ग खोजते हैं।

३. संसारी-जीव वर्णन

जग के मूर्तिक जीव अशुद्ध,
हैं अनादि से कर्म विबद्ध।
पंच परावर्तन सो पाएँ,
कर्म-कथा प्रभु वाँच न पाएँ॥

अर्थ— संसारी जीव सभी मूर्तिक और अशुद्ध हैं और अनादिकाल से कर्मों से बँधे हुए हैं। इस कारण पंच परावर्तन रूपी संसार दुख को प्राप्त करते हैं। यह कर्मकथा कहने में केवली प्रभु भी असमर्थ हैं।

भावार्थ— अनादिकालीन जीव कर्म के संयोग सम्बन्ध के कारण जीव की संसार की कथा इतनी विशाल हो गई है कि जिसको कहने में अनन्त केवली भी समर्थ नहीं हो सकते।

जिज्ञासा १. मूर्तिक जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति— कर्मों से सम्बद्ध जो संसारी जीव होते हैं वे सब व्यवहारनय से मूर्तिक ही होते हैं।

जिज्ञासा २. हमने तो सुना है कि जीव अमूर्तिक होते हैं और आप कह रहे हैं कि संसारी जीव मूर्तिक होते हैं, तो हम किसे सत्य मानें ?

शान्ति— जी हाँ! आपने सही सुना है, लेकिन शक्ति-स्वभाव की अपेक्षा से या मुक्त जीव या शुद्ध जीव अमूर्तिक होते हैं किन्तु सांसारिक जीव मूर्तिक या रूपी ही होते हैं।

जिज्ञासा ३. क्या जीव शुद्ध-अशुद्ध भी होते हैं ?

शान्ति— जी हाँ! सभी संसारी जीव जो कर्मों से लिप्त होते हैं वे सब अशुद्ध होते हैं और मुक्त जीव या सिद्ध परमेष्ठी सभी शुद्ध होते हैं।

जिज्ञासा ४. क्या अरिहन्त परमेष्ठी भी अशुद्ध होते हैं ?

शान्ति— जी हाँ! अरिहन्त परमेष्ठी भी संसारी होने से पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं हैं, अभी उनके चार तरह के कर्म शेष होने से वे अर्द्ध-अशुद्ध या अर्द्ध-शुद्ध हैं। इसलिए उन्हें अशुद्ध ही माना जाएगा। पर इतना

अवश्य हैं कि हम और आप संसारी प्राणियों के जैसे अरिहन्त परमेष्ठी अशुद्ध नहीं होते हैं।

जिज्ञासा ५. अनादि क्या कहलाता है ?

शान्ति– भूत में जिस समय अवधि की शुरुआत का कोई ओर-छोर नहीं होता, उसे अनादि कहते हैं।

जिज्ञासा ६. पंचपरावर्तन क्या कहलाते हैं ?

शान्ति– जिनके निमित्त से संसारी जीव दुख भोगते हैं। उन्हें परावर्तन कहते हैं और इनकी संख्या पाँच होने से इन्हें पंचपरावर्तन कहते हैं।

जिज्ञासा ७. पंचपरावर्तन के नाम क्या हैं ?

शान्ति– पंचपरावर्तन के नाम निम्न हैं–

१. द्रव्य परावर्तन २. क्षेत्र परावर्तन ३. काल परावर्तन ४. भाव परावर्तन और ५. भव परावर्तन। (स.सि. ११९)

जिज्ञासा ८. क्या परावर्तन और परिवर्तन में अन्तर होता है ?

शान्ति– नहीं। परावर्तन और परिवर्तन में शब्द भेद है, अर्थ भेद नहीं।

जिज्ञासा ९. कर्मकथा किसे कहते हैं ?

शान्ति– अष्टकर्मों के निमित्त से संसारी प्राणियों का चार गतियों और चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करते हुए अनादिकाल से दुख भोगने की कथा को कर्मकथा कहते हैं।

जिज्ञासा १०. आपने कहा कि ''कर्मकथा प्रभु वाच न पाएँ'' तो क्या केवलज्ञान से बड़ी होती है कर्मकथा ?

शान्ति– जी हाँ! क्योंकि अनादिकाल से आई हुई कर्मकथा अनन्तानन्त होती है। अगर इसका वर्णन अनन्त केवली भी करने लग जाएँ तो भी उसका अन्त सम्भव नहीं है।

जिज्ञासा ११. क्या संसार के सभी जीव कर्मों से सम्बद्ध होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! सभी संसारी प्राणी कर्मों से सम्बद्ध होते हैं। संसार में कर्म रहित जीव रुकते ही नहीं है।

४. जीव-यात्रा वर्णन

क्षुद्रक भवदुख नित्य निगोद,
सहके पायी थावर गोद।
भू जल आग वायु प्रत्येक,
दो-दो भेद वनस्पति एक॥

अर्थ— संसारी प्राणी की यात्रा क्षुद्रक-भवदुख, नित्यनिगोद के दुखों को सहकर प्रारम्भ हुई, फिर पंचस्थावर-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति के भेदों से होकर आगे बढ़ी।

भावार्थ— क्षुद्रक-भवदुख रूप नित्य निगोद से संसारी प्राणी अपनी यात्रा प्रारम्भ करके पंचस्थावरों से अपनी यात्रा को आगे बढ़ाता है।

जिज्ञासा १. क्षुद्रक-भव क्या कहलाता है?

शान्ति— किसी जीव के सबसे लघु पर्याय की स्थिति/आयु को क्षुद्रक-भव कहते हैं। अथवा सूक्ष्मलब्धि-अपर्याप्तक जीव के एक अन्तर्मुहूर्त में जितने जन्म-मरण होते हैं उन्हें क्षुद्रक-भव या क्षुद्र-भव या क्षुल्लक भव जिनेन्द्र भगवान कहते हैं। अथवा देह की जघन्य या न्यूनतम स्थिति को क्षुद्रक-भव कहते हैं।

जिज्ञासा २. एक क्षुद्रक-भव में सूक्ष्मलब्धि-अपर्याप्तक जीव कितनी बार जन्म-मरण करते हैं?

शान्ति— मनुष्य के ३७७३ श्वासोच्छवासों का एक मुहूर्त होता है और एक श्वासोच्छवास में लब्धि-अपर्याप्तक जीव १८ बार जन्म और १८ बार मरण करते हैं।

जिज्ञासा ३. क्या एक श्वास में १८ बार जन्म-मरण सम्भव हो सकते हैं?

शान्ति— जी हाँ! जिनेन्द्र भगवान का उपदेश-सिद्धांत अत्यन्त सूक्ष्म है जो कि श्रद्धा की आँखों से ही समझा जा सकता है।

जिज्ञासा ४. क्षुद्रक-भव को दुख क्यों कहा?

शान्ति— संसार में जन्म-मरण ही सबसे बड़े दुख हैं। और एक श्वास में १८ बार जन्म-मरण होना ही सबसे बड़ा दुख है।

जिज्ञासा ५. थावर किसे कहते हैं।

शान्ति– थावर अर्थात् स्थावर। एक-इन्द्रिय जीवों को स्थावर कहते हैं। अथवा जिन जीवों में मात्र स्पर्शन इन्द्रिय होती है उन्हें स्थावर जीव कहते हैं।

जिज्ञासा ६. क्या स्थावर और निगोदिया जीवों में अन्तर होता है ?

शान्ति– जी हाँ! वनस्पति काय के अंतर्गत बादर निगोदिया जीवों का अवस्थान पाया जाता है और सूक्ष्मजीव पूरे लोक में पाए जाते हैं।

जिज्ञासा ७. सूक्ष्मजीव किसे कहते हैं।

शान्ति– जो जीव किसी से बाधित नहीं होते हैं और न ही किसी को बाधा देते हैं, वे सूक्ष्मजीव कहलाते हैं।

जिज्ञासा ८. बादरजीव किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव स्वयं बाधित होते हैं और दूसरों को बाधा देते हैं, उन्हें बादर जीव कहते हैं।

जिज्ञासा ९. जीव किसे कहते है ?

शान्ति– जो अपने प्राणों के द्वारा जीता था, जीता है, और जीएगा उसे जीव कहते हैं।

जिज्ञासा १०. प्राण किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस शक्ति के द्वारा जीवन चलता है उसे प्राण कहते हैं।

जिज्ञासा ११. प्राण कितने होते हैं ?

शान्ति– एक जीव की अपेक्षा से प्राण दस होते हैं।

जिज्ञासा १२. दस प्राणों के नाम क्या हैं ?

शान्ति– पाँच इन्द्रियाँ, मन-वचन-काय ये तीन बल, आयु और श्वासोच्छवास ये दस प्राण होते हैं।

जिज्ञासा १३. स्थावर-जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

शान्ति– स्थावर-जीव पाँच प्रकार के होते हैं–
१. पृथ्वीकायिक २. जलकायिक ३. अग्निकायिक ४.वायु-कायिक और ५. वनस्पतिकायिक। इनमें पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु ये सभी जीव प्रत्येक जीव होते हैं किन्तु वनस्पति के दो प्रकार होते हैं। (त.सू. २-१३)

जिज्ञासा १४. वनस्पति के दो प्रकार कौन-कौन से होते हैं ?

शान्ति– १. साधारण वनस्पति और २. प्रत्येक वनस्पति।

जिज्ञासा १५. साधारण वनस्पति किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिनमें एक शरीर के अनन्त जीव स्वामी होते हैं, जिनके जन्म-मरण, सुख-दुख आदि एक साथ होते हैं, उन्हें साधारण वनस्पति कहते हैं। इन्हें ही निगोद जीव कहते हैं।

जिज्ञासा १६. निगोद जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

शान्ति– निगोद जीव दो प्रकार के होते हैं–
१. नित्य निगोद और २. इतर निगोद।

जिज्ञासा १७. नित्य निगोद किसे कहते हैं ?

शान्ति– प्रचुर कलंक भावों के कारण जो जीव अनादिकाल से निगोद में दुख भोगते रहते हैं और जिन्होंने आज तक त्रस पर्याय को प्राप्त नहीं किया उन्हें नित्य निगोद कहते हैं।

जिज्ञासा १८. इतर निगोद किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव एक बार नित्य निगोद पर्याय से निकलकर त्रस पर्याय में भ्रमण करके पुनः निगोद पर्याय को प्राप्त हुए हैं, उन्हें इतर निगोद कहते हैं।

जिज्ञासा १९. प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस जीव के एक शरीर का स्वामी एक जीव होता है, या जिन जीवों का शरीर पृथक-पृथक होता है उन्हें प्रत्येक वनस्पति जीव कहते हैं। तात्पर्य यह हुआ की जितने प्रत्येक जीव होते है उतने प्रत्येक शरीर होते हैं।

जिज्ञासा २०. प्रत्येक वनस्पति जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

शान्ति– दो प्रकार के होते हैं– १. सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति और २. अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति।

जिज्ञासा २१. सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिन जीवों के शरीर के आश्रित बादर निगोद जीव रहते हैं, उन्हें सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति कहते हैं।

जिज्ञासा २२. अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिन जीवों के शरीर के आश्रित बादर निगोद जीव नहीं रहते हैं उन्हें अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति कहते हैं।

जिज्ञासा २३. क्या जीव पर्याप्तक और अपर्याप्तक भी होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! जीव पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं।

जिज्ञासा २४. पर्याप्तक जीव किन्हें कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव जन्म के बाद अपनी छहों पर्याप्तियाँ पूर्ण करने के उपरान्त ही मरण को प्राप्त होते हैं, उन्हें पर्याप्तक जीव कहते हैं।

जिज्ञासा २५. अपर्याप्तक जीव किन्हें कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव जन्म के बाद अपनी छहों पर्याप्तियाँ पूर्ण करने के पूर्व ही मरण को प्राप्त होते हैं, उन्हें अपर्याप्तक जीव कहते हैं।

जिज्ञासा २६. पर्याप्ति किसे कहते हैं ?

शान्ति– गृहीत आहारवर्गणा को खल-रस आदि रूप में परिणमन कराने की शक्ति की पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं।

जिज्ञासा २७. पर्याप्तियाँ कितनी होती हैं ?

शान्ति– पर्याप्तियाँ छह होती हैं–

१. आहार—आहार वर्गणा को खल, रस भाग में करने की शक्ति की पूर्णता।

२. शरीर—खल, रस भाग को रुधिर आदि में करने की शक्ति की पूर्णता।

३. इन्द्रिय—आहार वर्गणा को इन्द्रिय, इन्द्रिय-विषयरूप करने की शक्ति की पूर्णता।

४. श्वासोच्छ्वास—आहार वर्गणा को श्वासोच्छ्वास रूप करने की शक्ति की पूर्णता।

५. भाषा—भाषा वर्गणा को चार प्रकार भाषारूप करने की शक्ति की पूर्णता।

६. मन—अनुभूत अर्थ को स्मरणरूप मनोवर्गणा से रचित पुद्गल प्रचय। (ध. पु. १)

५. त्रस पर्याय की दुर्लभता

त्याग कर्मफल चेतन पाए,
दुर्लभ मणि सम त्रस-पर्याय।
कृमि चींटी भ्रमरादि कहाए,
विकलत्रय के अति दुख पाए॥

अर्थ— स्थावर पर्याय को अर्थात् कर्मफल चेतना को त्यागकर जीव दुर्लभमणि के समान त्रस-पर्याय को प्राप्त होता हुआ क्रमशः कृमि आदि दो इन्द्रिय, चींटी आदि तीन इन्द्रिय और भ्रमर आदि चार इन्द्रिय होता हुआ विकलत्रय के अत्यधिक दुख भोगता है।

भावार्थ— संसार भ्रमण में जीव कर्मफल चेतना को त्यागकर दुर्लभमणि सम त्रस-पर्याय को पाकर विकलत्रय के अत्यधिक दुख भोगता है।

जिज्ञासा १. कर्मफल चेतना किसे कहते हैं ?

शान्ति— एक इन्द्रिय जीव कर्मफल को भोगते हुए जीवन व्यतीत करते हैं, उनकी इस चेतना को कर्मफल चेतना कहते हैं।

जिज्ञासा २. क्या और कोई चेतना भी होती है ?

शान्ति— जी हाँ! आचार्य श्री कुन्दकुन्द महाराज के अनुसार चेतना तीन प्रकार की होती है, जिनका वर्णन हम तृतीय ढाल में करने वाले हैं।

जिज्ञासा ३. दुर्लभमणि क्या कहलाती है ?

शान्ति— अरे! आप दुर्लभमणि भी नहीं जानते, खैर! कोई बात नहीं। दुर्लभमणि वह रत्न-मणि होती है जो बड़ी कठिनाई से प्राप्त होती है और बड़ी मूल्यवान होती है। जैसे—चिंतामणि रत्न, पारसमणि रत्न इत्यादि।

जिज्ञासा ४. यहाँ त्रस पर्याय को दुर्लभमणि के समान कहने का क्या तात्पर्य है ?

शान्ति— त्रस पर्याय को दुर्लभमणि के समान कहने का तात्पर्य यह है कि यह त्रसपर्याय बड़ी कठिनाई या दुर्लभता से प्राप्त होने वाली चिंतामणि रत्न या पारसमणि रत्न के समान मानी गई है।

जिज्ञासा ५. त्रस पर्याय किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिन जीवों में विकास के क्रम में एक स्थान से दूसरे स्थान तक गति करने की योग्यता या चलने-फिरने की योग्यता आ जाती है या जिनका त्रस नामकर्म का उदय होता है उन्हें त्रसजीव कहते हैं।

जिज्ञासा ६. विकलत्रय किसे कहते हैं ?

शान्ति– विकल अर्थात् इन्द्रियों की अपेक्षा से जीवों के अपूर्ण शरीर या अपूर्ण पर्याय को विकल कहते हैं और ये तीन प्रकार के होने से इन्हें विकलत्रय कहते हैं।

जिज्ञासा ७. इन्द्रिय किसे कहते हैं ?

शान्ति– जीवों को जिन लक्षणों के द्वारा पहचाना जाता है, उन्हें इन्द्रिय कहते हैं।

जिज्ञासा ८. इन्द्रियाँ कितनी होतीं हैं ?

शान्ति– इन्द्रियाँ अनन्तानन्त होती हैं। (स.सि. पृ.१२६)

जिज्ञासा ९. अरे! हमने तो सुना है कि इन्द्रियाँ पाँच होती हैं और आप यहाँ अनन्तानन्त कह रहे हैं, तो सत्य किसे मानें ?

शान्ति– आपका कहना यद्यपि सत्य है, तथापि इन्द्रियाँ एक जीव की अपेक्षा से पाँच होती हैं या पाँच प्रकार की होती हैं। किन्तु इन्द्रियों की संख्या सब जीवों की अपेक्षा से अनन्तानन्त होती है।

जिज्ञासा १०. इन्द्रियाँ कितने प्रकार की होती हैं ?

शान्ति– इन्द्रियाँ पाँच प्रकार की होती हैं– १. स्पर्श २. रसना ३. घ्राण ४. चक्षु और ५. कर्ण।

जिज्ञासा ११. शरीर और चेतना में क्या अन्तर होता है ?

शान्ति– संसार दशा में चेतना शरीर के साथ ही रहती है। चेतना और शरीर यह दोनों अलग-अलग तत्त्व हैं।

जिज्ञासा १२. शरीर कितने प्रकार के होते हैं ?

शान्ति– शरीर पाँच प्रकार के होते हैं–१. औदारिक २. वैक्रियिक ३. आहारक ४. तैजस और ५. कार्मण। (त.सू. २/२६)

६. पंचेन्द्रिय वर्णन

ज्यों दुर्लभतर मणि संयोग,
त्यों पंचेन्द्रिय भव के योग।
अमन-समन के बनें तिर्यंच,
निबल-सबल के सहे प्रपंच॥

अर्थ– जैसे दुर्लभतर मणि संयोग होती है वैसे ही दुर्लभतर पंचेन्द्रिय पर्याय होती है उसमें अमनस्क असंज्ञी, समनस्क संज्ञी तिर्यंच बनकर बलहीन या बलवान की पीड़ाओं को सहन किया।

भावार्थ– दुर्लभतर मणि संयोग के समान पंचेन्द्रिय तिर्यंच बनकर संज्ञी-असंज्ञी और बलहीन या बलवान की कर्म-क्रियाओं में रत रहकर दुख सहे।

जिज्ञासा १. पहले आपने दुर्लभमणि कहा था, यहाँ आप दुर्लभतर मणि क्यों कह रहे हैं ?

शान्ति– जो मुश्किल से प्राप्त हो उसे दुर्लभ कहते हैं और जो महा मुश्किल से प्राप्त हो उसे महादुर्लभ या दुर्लभतर कहते हैं।

जिज्ञासा २. मणिसंयोग किसे कहते हैं ?

शान्ति– किसी जीव को मुश्किल से किसी मणि का प्राप्त हो जाना ही मणिसंयोग कहलाता है।

जिज्ञासा ३. पंचेन्द्रिय भव किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस पर्याय में पाँचों इन्द्रियों की पूर्णता प्राप्त हो जाती है उसे पंचेन्द्रिय भव कहते हैं।

जिज्ञासा ४. अमन जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिन जीवों के पास पाँच इन्द्रियाँ होने के बाद भी मन नहीं होता है उन्हें अमन या असंज्ञी जीव कहते हैं। इन्हें असैनी जीव भी कहते हैं।

जिज्ञासा ५. समनस्क जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिन जीवों के पास पाँच इन्द्रियाँ होने के बाद मन भी होता है उन्हें समनस्क या संज्ञी जीव कहते हैं। इन्हें ही सैनी जीव भी कहते हैं।

जिज्ञासा ६. निबल जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति— जो जीव अपने मन, वचन और कायबल से कमजोर होते हैं उन्हें निबल जीव कहते हैं।

जिज्ञासा ७. सबल जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति— जो जीव मन, वचन, काय से बलवान होते हैं उन्हें सबल जीव कहते हैं।

जिज्ञासा ८. प्रपंच क्या कहलाता है ?

शान्ति— अपने द्वारा किया गया क्रिया-कर्म प्रपंच कहलाता है अथवा संसार के क्रिया-कर्म प्रपंच कहलाते हैं।

जिज्ञासा ९. मन के क्या कार्य होते हैं ?

शान्ति— हित और अहित का विचार करना या शिक्षा या उपदेश आदि ग्रहण करना मन के कार्य होते हैं या श्रुत मन का विषय है। (त.सू. २-२१)

जिज्ञासा १०. क्या अमन-समन के भेद पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में ही होते हैं या अन्य कहीं भी होते हैं ?

शान्ति— नहीं! नहीं!! एकेन्द्रिय से लेकर चार इन्द्रिय तक सभी जीव तिर्यंच असंज्ञी, सम्मूर्च्छन और नपुंसक ही होते हैं किन्तु पंचेन्द्रियों में अमन-समन दोनों भेद पाए जाते हैं।

जिज्ञासा ११. क्या देव, नारकी और मनुष्य भी बिना मन वाले होते हैं?

शान्ति— नहीं! नहीं!! देव, नारकी और मनुष्य सभी मन वाले संज्ञी जीव ही होते हैं। ये जीव कभी भी बिना मन वाले नहीं होते।

जिज्ञासा १२. अमन-समन के साथ आपने पंचेन्द्रिय का उल्लेख क्यों नहीं किया ?

शान्ति— अमन-समन कह देने से पंचेन्द्रिय अपने आप समझ लिया जाता है क्योंकि अमन-समन के भेद अन्य नहीं पाए जाते हैं।

जिज्ञासा १३. सम्मूर्च्छन जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति— जो जीव आयु कर्म के निमित्त से बिना माता-पिता के आसपास की जन्म योग्य सामग्री एकत्रित कर जन्म लेते हैं उन्हें सम्मूर्च्छन

जीव कहते हैं।

जिज्ञासा १४. नपुंसक जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति– सभी जीव तीन वेद वाले होते हैं–

१. स्त्री वेद–जिस कर्म के उदय से जीव स्त्री के भावों को प्राप्त होते है वे स्त्री वेद वाले कहलाते हैं।

२. पुरुष वेद–जिस कर्म के उदय से जीव पुरुषों के भावों को प्राप्त होते हैं वे पुरुष वेद वाले कहलाते हैं।

३. नपुंसक वेद–जिस कर्म के उदय से जीव नपुंसक के भावों को प्राप्त होते हैं वे नपुंसकवेद वाले कहलाते हैं। (स.सि.पृ. ३०१)

जिज्ञासा १५. तिर्यंच जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति– तिर्यंच आयु और गति नाम कर्म के उदय से जो जीव निगोद से लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीवन जीते हैं उन्हें तिर्यंच जीव कहते हैं।

जिज्ञासा १६. क्या सिद्ध जीव भी स्त्री पुरुष या नपुंसक वेद वाले होते हैं ?

शान्ति– नहीं! सिद्ध जीव तो तीनों वेदों से रहित वेदातीत होते हैं।

जिज्ञासा १७. क्या सभी को निबल-सबल के प्रपंच सहने पड़ते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! इसके बिना संसार यात्रा आगे नहीं बढ़ती पर सबको सहना पड़े यह अनिवार्य नहीं क्योंकि कुछ जीव ऐसे भी होते हैं जो निगोद से निकलकर मनुष्य बनकर अपना कल्याण कर लेते हैं।

जिज्ञासा १८. क्या तिर्यंच बनना जरूरी है ?

शान्ति– जी हाँ! इसके बिना संसार यात्रा प्रारम्भ ही नहीं होती।

जिज्ञासा १९. फिर तिर्यंच पर्याय से मुक्ति क्यों नहीं होती ?

शान्ति– क्योंकि मुक्ति के योग्य सामग्री का अभाव तिर्यंच पर्याय में रहता है।

७. तिर्यंच वर्णन

क्षुधा तृषा सह ढोए भार,
छेद-भेद शीतोष्ण अपार।
सह वध बन्धन दुख संक्लेश,
मरे नरक बिल पाए क्लेश॥

अर्थ— भूख-प्यास सहन करते हुये तिर्यंच जीव भार ढोते हैं और छेद-भेद, शीत-उष्ण आदि के अनेक दुख सहन करते हैं।

भावार्थ— इस छन्द में तिर्यंचों के दुखों का वर्णन किया गया हैं।

जिज्ञासा १. क्या तिर्यंचों में और भी दुख होते हैं ?

शान्ति— जी हाँ! भूख-प्यास, छेदन-भेदन, सर्दी और गर्मी आदि के अनेक दुख होते हैं।

जिज्ञासा २. छेदन-भेदन क्या कहलाते हैं ?

शान्ति— तिर्यंचों के अंग-उपांगों को किसी पैने हथियार से छेद करने को छेदन कहते हैं और शरीर से अंग-उपांगों को बिल्कुल अलग कर देने को भेदन कहते हैं।

जिज्ञासा ३. वध-बन्धन दुख क्या कहलाते हैं।

शान्ति— प्राणियों के प्राणों का वियोग करना वध कहलाता है, और उन्हें अपने नियंत्रण में परतंत्र रखना बन्धन कहलाता है।

जिज्ञासा ४. संक्लेश किसे कहते हैं ?

शान्ति— असाता वेदनीय के बन्ध योग परिणाम को संक्लेश कहते हैं।

जिज्ञासा ५. साता वेदनीय के बन्ध योग परिणाम को क्या कहते हैं ?

शान्ति— विशुद्धि। जीव के परिणामों की निर्मलता को विशुद्धि कहते हैं।

जिज्ञासा ६. संक्लेश और विशुद्धि का क्या फल मिलता है ?

शान्ति— संक्लेश से दुर्गति, दुख-दरिद्रता और रोग-शोक प्राप्त होते हैं। विशुद्धि से सद्गति सुख-संपन्नता और स्वस्थ-निरोगी होते हैं।

जिज्ञासा ७. नरक बिल के दुख कैसे प्राप्त होते हैं ?

शान्ति— अरे भाई! अभी-अभी तो बताया कि संक्लेश से दुर्गति प्राप्त होती है और नरक भी दुर्गति है सो नरक बिल के दुख भी संक्लेश

से प्राप्त होते हैं।

जिज्ञासा ८. नरक बिल किसे कहते हैं ?

शान्ति– अधोलोक में सात नरक भूमियों में सात नरक होते हैं। जिनमें ४९ पटल व ८४ लाख नरक बिल होते हैं। जैसे–चूहे आदि के तरह-तरह के बिल जमीन के अन्दर होते हैं वैसे ही बिल नारकी जीवों के नरक में होते हैं किन्तु उनमें कहीं कोई दरवाजा-खिड़की या उजाला नहीं होता। चाहे तो नरक का चार्ट देख सकते हैं।

८. नरक दुख वर्णन एवं मनुष्य पर्याय की दुर्लभता

जहाँ सहे दुख चार प्रकार,
आयु सागरों की कर पार।
पाई मनुज योनि पर्याय,
दुर्लभतम मणि ज्यों चौराह॥८॥

अर्थ– नरकों में चार प्रकार के दुख सहन करता हुआ जीव सागरों पर्यंत आयु को भोगता हुआ ज्यों चौराहे पर दुर्लभतम मणि प्राप्त होती है वैसे ही मनुष्य पर्याय को प्राप्त करता है।

भावार्थ– नरकों से निकलकर जीव दुर्लभतम मनुष्य पर्याय को प्राप्त होता है।

जिज्ञासा १. नरकों में चार प्रकार के दुख कौन-कौन से होते हैं ?

शान्ति– नरकों में निम्न चार प्रकार के दुख होते हैं– १. क्षेत्र जनित दुख २. शारीरिक दुख ३. मानसिक दुख और ४. असुरकृत दुख।

जिज्ञासा २. नारकी जीवों के क्षेत्र-जनित दुख किन्हें कहते हैं ?

शान्ति– नारकी जीव नरक में उत्पन्न होते ही जो तरह-तरह की दुख-वेदनाएँ भोगते हैं उन्हें क्षेत्र-जनित दुख कहते हैं। जैसे–

१. विषैली दुर्गंधित मिट्टी भक्षण कर मरण तुल्य दुख भोगना।
२. वैतरणी नदी में जल के भ्रम में दुख पाना।
३. बिल में प्रवेश करने पर अग्नि में जलना।
४. छाया के भ्रम में सेमर तरु के असि-सम पत्तों से छिलना।
५. नरक बिलों की मिट्टी अंधकार और शीतोष्ण के दुख सहना।
६. मेरु वत् लोहे के गलने-जमने सम शीतोष्ण की बाधाएँ सहना।

जिज्ञासा ३. नारकी जीवों के शारीरिक दुख किसे कहते हैं ?

शान्ति– नरकों में नारकियों के शरीर में जो तरह-तरह के दुख उत्पन्न होते हैं उन्हें शारीरिक दुख कहते हैं। जैसे–

१. जन्म के समय छत्तीस प्रकार के आयुधों पर गिरना।
२. यंत्रों से काटा और पेला जाना।
३. अंग-उपांग चूर्ण-चूर्ण कर उबलते हुए तेल में डालना।
४. नारकियों के टुकड़े-टुकड़े कर उन्हें खाना।
५. लोहा और ताँबा पिघलाकर नारकियों को पिलाना।

६. तप्त लोहे की पुतलियों से आलिंगन कराना।
७. समस्त पुद्गल खाने पर भी भूख शांत ना हो इतनी भूख लगने पर भी खाने को एक अन्न का कण भी ना मिलना और दुर्गंधित मिट्टी का भक्षण करने पर मरण तुल्य वेदना होना।
८. प्यास लगने पर समस्त समुद्रों का जल पीने पर भी प्यास शांत ना होना और पीने को एक बूँद भी ना मिलना।
९. जितने रोग संसार में होते हैं वे सभी नारकी जीवों के शरीर में होते हैं।
१०. शरीर की विक्रिया, आकृति, हुंडकसंस्थान और अशुभता से बुरे शरीर का होना।
११. वैक्रियिक शरीर होकर भी सात कुधातु रूप अशुभ सामग्री सहित शरीर होना।

जिज्ञासा १०. नारकियों के मानसिक दुख किसे कहते हैं ?

शान्ति– नरकों में नारकियों को हमेशा यह विचार आता है कि हम नरकों के दुख से कब तिरेंगे। ऐसा भाव सदा बना रहता है, यही मानसिक दुख है। जैसे–

१. अग्नि के अंगारे, लोहे की गर्म पुतलियाँ और खम्भे हमें छूने वाले हैं।
२. हमें परस्पर लड़ाने वाले यम तुल्य असुर खाने के लिए आने वाले हैं।
३. संताप जनक भयंकर पशुओं की ध्वनियाँ आने वाली हैं।
४. असिपत्र वन में सेमर के पत्र मेरे ऊपर गिरने वाले हैं।
५. वैतरणी नदी में मैं डूबने वाला हूँ, डूब कर मरने वाला हूँ।
६. अग्नि के बिलों में मैं गिरने वाला हूँ फिर भी मैं मरता क्यों नहीं हूँ ? क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? इत्यादि।

जिज्ञासा ११. नारकियों के असुरकृत दुख क्या कहलाते हैं ?

शान्ति– तीसरी पृथ्वी तक असुरकुमार जाति के देव नारकियों को क्रोधित कर आपस में लड़ाते हैं, इन्हें ही असुरकृतदुख कहते हैं। जैसे–

१. तपे हुए लोहे का रस पिलाने को उत्तेजित करना।
२. लौह-स्तंभ, पुतलियों को तपाकर आलिंगन कराने को तैयार करना।
३. यंत्रों से पेलने या काटने को प्रेरित करना।
४. पूर्वभव के बैर का स्मरण कराकर परस्पर में लड़ाना।
५. शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर चूल्हे में डालने को प्रेरित करना।
६. अशुभ विक्रिया कर अस्त्र-शस्त्र बनकर आपस में लड़ाने को प्रेरित करना इत्यादि।

जिज्ञासा १२. क्या चार प्रकार के दुखों के अतिरिक्त नारकियों को अन्य दुख भी होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! नारकियों का पूरा जीवन दुखों की बहुलता में ही बीतता है। पूरी वेदना होने पर भी उनकी अकाल मृत्यु नहीं होने जैसे महादुख होते हैं।

जिज्ञासा १३. सप्त कुधातु तो औदारिक शरीर में पाई जाती है, वैक्रियिक शरीर में कैसे ?

शान्ति– आपने सत्य कहा किन्तु नारकियों का वैक्रियिक शरीर सप्तधातु का ना होकर उनसे लिप्त अवश्य रहता है।

जिज्ञासा १४. क्या नारकी जीव कभी शुभ विक्रिया नहीं करते ?

शान्ति– जी नहीं! नारकी जीव देवों के समान पृथक विक्रिया नहीं कर पाते और चाहने पर भी शुभ विक्रिया नहीं होती अशुभ ही होती है।

जिज्ञासा १५. अशुभ विक्रिया कैसी होती है ?

शान्ति– प्रारम्भ के छह नरकों में अस्त्र-शस्त्र एवं सातवें नरक में कीड़ों के रूप विक्रिया होती है।

जिज्ञासा १६. आपने नरकों का वर्णन तो किया पर अभी तक यह नहीं बताया कि नारकी जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति– पाप कर्म की अधिकता के फलस्वरूप असहनीय दुखों को भोगने वाले जीव नारकी कहलाते हैं। जो कभी परस्पर प्रीति को प्राप्त नहीं होते अथवा जो हमेशा हिंसा आदि कार्यों में रत होते हैं उन्हें

नारकी कहते हैं। उनकी गति को निरत या नरक गति कहते हैं। अथवा जो आपस में प्राणियों को गिराता है पीसता है उसे नरक कहते हैं, उनकी गति को नरक गति कहते हैं। जो प्रीति में न-रत हैं उन्हें नरत कहते हैं या जो रमते नहीं उन्हें नरत या नरक कहते हैं।

जिज्ञासा १७. क्या नारकियों को यह दुख कुछ समय के लिए ही सहन करने पड़ते हैं या जीवन भर ?

शान्ति– जन्म से लेकर मरण तक पूरे जीवन भर नारकियों को दुख सहने पड़ते है।

जिज्ञासा १८. क्या सभी नारकियों की आयु सागरों में होती है ?

शान्ति– नहीं! नहीं!! नारकियों की जघन्य आयु दस हजार वर्ष एवं उत्कृष्ट आयु तैंतीस सागर होती है।

जिज्ञासा १९. मनुष्य योनि किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस जन्म में जीव संसार की पूर्ण यात्रा कर इस यात्रा पर विराम भी लगा सकता है उस जन्म को मनुष्य योनि कहते हैं या जिस पर्याय से सभी गतियों में जाना सम्भव है उसे मनुष्य योनि कहते हैं।

जिज्ञासा २०. दुर्लभतम मणि किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो मणि दुर्लभ ही नहीं बल्कि अत्यन्त-अत्यन्त दुर्लभ होती है उसे दुर्लभतम मणि कहते हैं।

जिज्ञासा २१. मनुष्य पर्याय कैसी दुर्लभतम मणि है ?

शान्ति– जैसे किसी बहुत भीड़ वाले चौराहे पर दुर्लभतम मणि का मिलना अत्यन्त दुर्लभ होता है वैसे ही चार गतियों के जीवों वाली भीड़ में मनुष्य पर्याय का मिलना अत्यन्त दुर्लभतम है।

जिज्ञासा २१. दुर्लभ, दुर्लभतर और दुर्लभतम कहने का क्या तात्पर्य हैं ?

शान्ति– यहाँ पर आगे-आगे दुर्लभता बढ़ने के क्रम को बतलाया गया है अर्थात् निगोद से त्रस पर्याय दुर्लभ है, त्रस पर्याय से पंचेन्द्रिय बनना दुर्लभतर है और धर्म पालन करने योग्य मनुष्य बनना दुर्लभतम है।

९. मनुष्य गर्भ वर्णन

मिले पुण्य से माँ का गर्भ,
नौ-दस माह सहे दुख दर्द।
उलटे मटके सम लटकाए,
मल-मूत्रों में सिकुड़े काय॥९॥

अर्थ— संसार चक्र में भ्रमण करता हुआ जीव नरकों की सागरों पर्यन्त आयु को भोग कर बड़े पुण्य से माँ के गर्भ में जन्म लेकर नौ-दस माह तक उलटे मटके के समान लटका हुआ मल-मूत्रों में सिकुड़ता हुआ दुख-दर्द सहन करता है।

भावार्थ— मनुष्य पर्याय में जीव नौ-दस माह तक पुण्य कहे जाने वाले गर्भ में दुख सहन करता है।

जिज्ञासा १. माँ के गर्भ को पुण्य क्यों कहा ?

शान्ति— चौरासी लाख योनियों में मात्र संज्ञी पंचेन्द्रिय कर्मभूमिज मनुष्य संयम की अपेक्षा से पुण्य पर्याय है।

जिज्ञासा २. गर्भ क्या कहलाता है ?

शान्ति— जहाँ स्त्री का रज और पुरुष का वीर्य मिलकर जीव का जन्म होता है उस अवस्था विशेष को जो स्त्री के उदर में पलता है उसे ही गर्भ कहते हैं। (त.सू. २-३१)

जिज्ञासा ३. क्या गर्भ में जीव उल्टे मटके जैसा रहता है ?

शान्ति— जी हाँ! और एक-दो दिन नहीं बल्कि पूरे नौ-दस माहों तक तैरता हुआ जैसा, सिर नीचे और पैर ऊपर कर सिकुड़ा हुआ जैसा रहता है।

जिज्ञासा ४. क्या मल-मूत्रों में रहना पड़ता है ?

शान्ति— जी हाँ! वह भी बिना हाथ-पैर हिलाए-डुलाए पूरी पीड़ा सहन करते हुए रहना पड़ता है।

जिज्ञासा ५. गर्भ में खाने-पीने को क्या मिलता है ?

शान्ति— कुछ नहीं।

जिज्ञासा ६. गर्भ में जीवन कैसे चलता है ?

शान्ति— गर्भस्थ शिशु की नाभि से एक नाल माँ के उदर से जुड़ी रहती है। इसी से माँ के खाए-पिए अन्न-पान से जीवन चलता है।

जिज्ञासा ७. क्या नरकों से निकलकर जीव मनुष्य ही होते हैं ?

शान्ति— नहीं! नरकों से निकलकर जीव मनुष्य और तिर्यंच कुछ भी बन सकते हैं।

जिज्ञासा ८. फिर यहाँ मनुष्य क्यों बने ?

शान्ति— गति-चक्र या संसार-भ्रमण का वर्णन होने से क्रमशः बताया गया है।

जिज्ञासा ९. क्या जैसे आपने बताया है वह सत्य है या मात्र भयभीत करने के लिए कहा गया है ?

शान्ति— नहीं! नहीं!! यह मनमानी या मनवाणी नहीं है बल्कि यह तो जिनवाणी है, इसमें कभी भी शंका नहीं करना चाहिए अर्थात् जो कहा गया है वह शत-प्रतिशत सत्य है।

जिज्ञासा १०. क्या सभी जीव गर्भ जन्म के द्वारा ही उत्पन्न होते हैं ?

शान्ति— नहीं! संसारी जीवों के जन्म तीन प्रकार के होते हैं-

१. सम्मूर्च्छन जन्म—शरीर के योग्य परमाणुओं को माता-पिता के बिना ही एकत्रित कर जन्म लेना।

२. गर्भ जन्म—स्त्री के उदर में रज और वीर्य के मिलने से जो जन्म होता है उसे गर्भ जन्म कहते हैं।

३. उपपाद जन्म—माता-पिता के बिना देव-नारकियों के निश्चित स्थान पर उत्पन्न होने को उपपाद जन्म कहते हैं। (त.सू. २-३१)

जिज्ञासा ११. कौन-कौन से जीवों का कौन-कौन सा जन्म होता है ?

शान्ति— जन्म की व्यवस्था इस प्रकार है-

१. देव-नारकियों का उपपाद जन्म होता है।

२. जरायुज, अंडज और पोत इन तीन प्रकार के जीवों का गर्भज जन्म होता है।

३. एक इन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक सभी तिर्यंच जीव नियम से सम्मूर्च्छन जन्म वाले ही होते हैं और पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीव गर्भज और सम्मूर्च्छन दोनों जन्म वाले होते हैं। (त.सू २-३४,३५)

जिज्ञासा १२. मनुष्यों का कौन सा जन्म होता है ?

शान्ति— पर्याप्तक मनुष्य का जन्म नियम से गर्भज ही होता है किन्तु लब्धि-अपर्याप्तक मनुष्य का जन्म सम्मूर्च्छन जन्म होता है।

१०. मनुष्य पर्याय वर्णन

रोते-रोते पाया जन्म,
फिर भी हो परिवार प्रसन्न॥
खेल-खेल में बचपन खोए,
यौवन में युवती को रोए॥

अर्थ— मनुष्य का जन्म रोते-रोते हुआ, फिर भी संतान उत्पत्ति के हर्ष से सारा परिवार प्रसन्न होता है और बालक खेल-खेल में अपना बचपन नष्ट करके ज्यों ही यौवन में प्रवेश करता है तो उसको स्त्री आदिक भोग प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न होती है।

भावार्थ— जन्म से लेकर यौवन तक की यात्रा संसारी प्राणी की कैसे होती है इसका वर्णन इस छन्द में है।

जिज्ञासा १. क्या सभी संसारी प्राणी रोते-रोते ही जन्म लेते हैं ?

शान्ति— जी हाँ! महापुरुषों के अतिरिक्त अन्य सभी संसारी प्राणी का जन्म रोते-रोते ही होता है।

जिज्ञासा २. जन्म के समय रोने का कारण क्या है ?

शान्ति— जन्म के समय शरीर के अंग-उपांग सिकुड़ने से अत्यन्त पीड़ा होने के कारण वह रोते-रोते ही जन्म लेता है।

जिज्ञासा ३. एक तरफ जन्म का दुख और अन्य तरफ परिवार की प्रसन्नता, यह कैसे सम्भव है ?

शान्ति— चूँकि संतान से कुल आगे बढ़ता है या धर्म की परम्परा आगे बढ़ती है इसलिए परिवार को संतान उत्पत्ति होने पर प्रसन्नता होना स्वाभाविक है किन्तु जन्म लेने वाला प्राणी इससे अपरिचित होकर दुखी होता है।

जिज्ञासा ४. ऐसा होना ज्ञान है या अज्ञान ?

शान्ति— धर्मात्मा व्यक्ति इन घटनाओं से वैराग्य का पाठ सीखते हैं और अज्ञानी व्यक्ति मोह-राग का पाठ सीखते हैं। इसलिए यह ज्ञान भी है और अज्ञान भी है।

जिज्ञासा ५. परिवार किसे कहते हैं ?

शान्ति– जहाँ चारों तरफ से बन्धन और दुख के निमित्त उपस्थित होते हैं अथवा धर्म के अभाव में जहाँ संसार की शिक्षा मिलती है उसे परिवार कहते हैं।

जिज्ञासा ६. बच्चे बचपन में नहीं खेलेंगे तो कब खेलेंगे ?

शान्ति– जिनवाणी खेलने का निषेध नहीं करती है किन्तु धर्म के बिना हर कार्य दुखवर्धक है ऐसा उपदेश देती है।

जिज्ञासा ७. क्या सभी बच्चे बचपन में खेल खेलकर अपना बचपन नष्ट करते हैं ?

शान्ति– जैनधर्म के अनुसार आठ वर्ष से कम आयु वाले जीवों को बच्चा कहा जाता है और इससे अधिक आयु वाले जीवों को वयस्क कहा जाता है। तो जो जीव धर्म पालन करते हुए रहते हैं वे अपना बचपन या जीवन नष्ट नहीं करते।

जिज्ञासा ८. यौवन में युवती को रोना क्या अनिवार्य है ?

शान्ति– नहीं! सांसारिक सुखों में सबसे बड़ा सुख स्त्री का सुख होता है और स्त्री के अभाव में संसारी प्राणी दुखी होता है। अतः अपने आप को सुखी करने के लिए युवती को खोजता है और धर्मात्मा इनसे पृथक-विरक्त होता है।

जिज्ञासा ९. अगर यौवन में सभी पृथक-विरक्त हो जाएंगे तो संसार कैसे चलेगा?

शान्ति– अरे! संसार की चिंता करने वाले भोले प्राणी, पहले अपनी चिंता करो। जैसा आपने कहा वैसा कभी भी सम्भव हो ही नहीं सकता सो संसार और मोक्षमार्ग दोनों चलते ही रहेंगे।

जिज्ञासा १०. संसार से विरक्त हुए बिना संसार से मुक्ति नहीं मिल सकती क्या?

शान्ति– अरे! भाई जिससे राग करोगे वही तो मिलेगा ना। अगर संसार से विरक्त ना होंगे तो संसार छूटेगा कैसे ? जैसे दो मुख वाली सुई से सिलाई करना असम्भव है।

११. निष्फल नर पर्याय

प्रौढ़ दशा में घर के भार,
ढोकर हुए वृद्ध लाचार।
बिना धर्म नर रत्न गँवाए,
मिले सुरों के चार निकाय॥

अर्थ– मनुष्य प्रौढ़-दशा में गृहस्थ जीवन में प्रवेश करके गृहस्थी के सारे कर्तव्यों को करता-करता बूढ़ा होकर लाचार हो जाता है, फिर भी मनुष्य को अपने पूरे जीवन में धर्म रूपी रत्न-सम्पत्ति संभाल कर नहीं रखने के कारण स्वर्ग के देवो के चार निकायों में जन्म लेकर दुखी होना पड़ता है।

भावार्थ– मनुष्य पर्याय में अपनी जीवन यात्रा आगे बढ़ाता हुआ मनुष्य बूढ़ा होकर लाचार तो हो जाता है किन्तु धर्म पथ पर चलना उसे स्वीकार नहीं होता है इसी से उसकी देव दुर्गति हो जाती है।

जिज्ञासा १. प्रौढ़-दशा किसे कहते हैं ?

शान्ति– यौवन अवस्था के आने के बाद ग्रहस्थ जीवन में प्रवेश करने पर जो अवस्था प्राप्त होती है उसे प्रौढ़-दशा कहते हैं।

जिज्ञासा २. क्या घर गृहस्थी भार होती है ?

शान्ति– जी हाँ! घर गृहस्थी अगर उपहार होती तो इसमें रहने वाले सभी लोग खुश नजर आते लेकिन ऐसा दिखता ही नहीं है, अतः घर गृहस्थी भार ही है।

जिज्ञासा ३. क्या घर गृहस्थी का भार ढोना पड़ता है ?

शान्ति– जी हाँ! घर गृहस्थी को दार्शनिकों ने भी भार ही कहा है जो प्रारम्भ में बड़ी आकर्षक भले ही लगे किन्तु अंत में भार ही प्रतीत होती है।

जिज्ञासा ४. वृद्ध होने का क्या कारण है ?

शान्ति– मनुष्य पर्याय का स्वभाव ही वृद्ध होने का कारण है।

जिज्ञासा ५. पर आप तो कह रहे हैं कि घर गृहस्थी के भार ढोकर लाचार होते हैं, तो सत्यता क्या है ?

शान्ति– दोनों बातें सत्य हैं क्योंकि घर गृहस्थी के भार ढोने ही पड़ते हैं, जो हमें अंत में लाचार और परतंत्र बनाते ही हैं।

जिज्ञासा ६. लाचार और परतंत्र कैसे बनते हैं ?

शान्ति– वृद्ध-दशा में इन्द्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं तथा मन, वचन और काय की शक्तियाँ क्षींण होने से प्राणी लाचार हो जाते हैं।

जिज्ञासा ७. धर्म-रत्न किसे कहते हैं ?

शान्ति– अपनी आत्मा से सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूपी रत्न प्रकट करना ही धर्म रत्न कहलाते हैं।

जिज्ञासा ८. सुरों के चार निकाय किसे कहते हैं ?

शान्ति– देवों के चार प्रकार को सुरों के चार निकाय कहते हैं।

जिज्ञासा ९. देवों के चार निकाय कौन-कौन से होते हैं ?

शान्ति– देवों के चार निकाय निम्न होते हैं– १. भवनवासी देव २. व्यन्तर देव, ३. ज्योतिषी देव, ४. वैमानिक देव। (त.सू. ४-१)

जिज्ञासा १०. देव पर्याय तो पुण्य से प्राप्त होती है, तो क्या बिना धर्म के प्राप्त हो सकती है ?

शान्ति– जी हाँ! देव पर्याय पुण्य से प्राप्त होती है किन्तु भवनत्रिक, देव दुर्गति कहलाती है। जो बिना धर्म के भी प्राप्त हो सकती है।

जिज्ञासा ११. तो क्या देवों को भी दुख होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! देवों में भोगों के प्रति आसक्ति होना ही देवों के दुख हैं।

जिज्ञासा १२. क्या देवों को कुछ और भी दुख होतें हैं ?

शान्ति– जी हाँ! देवों में विशेष रूप से मानसिक दुख होते हैं और यही उनके संक्लेश का निमित्त भी बनते हैं।

जिज्ञासा १३. धर्म रत्न वाले जीव देवों के कौन से निकाय में उत्पन्न होते हैं ?

शान्ति– धर्म रत्न वाले जीव अगर देवों में उत्पन्न होते हैं तो मात्र वैमानिक देवों में ही उत्पन्न होते हैं।

१२. निष्फल देव पर्याय

भोग-भोग स्वर्गों के भोग,
बिन समयक्त्व कहाँ सुख योग।
छोड़ स्वर्ग भू-जल तरु होए,
दो हजार सागर यों खोए॥

अर्थ— सम्यग्दर्शन रूपी रत्न के बिना स्वर्गों के भोगों को भोग-भोग कर भी लेश मात्र आत्मिक सुख प्राप्त नहीं होता और संक्लेश करते हुए स्वर्गों की आयु पूर्ण कर पृथ्वी, जल और वनस्पतिकायरूप एक-इन्द्रिय में उत्पन्न होना पड़ता है। इस तरह त्रस पर्याय के दो-हजार सागर वर्ष पूर्ण व्यतीत हो जाते हैं।

भावार्थ— सम्यग्दर्शन के बिना संसार चक्र में जीव स्वर्गों से मरकर एक-इन्द्रिय में उत्पन्न हो जाता है और त्रस काल पूरा समाप्त कर देता है।

जिज्ञासा १. स्वर्गों के भोग किन्हें कहते हैं ?

शान्ति— स्वर्गों में पैदा होते ही एक देव को कम से कम बत्तीस देवियाँ प्राप्त होतीं हैं और स्त्री सुख सबसे बड़ा सांसारिक सुख देव भोगते हैं। और अन्य इन्द्रियों के सभी सुख भी देव भोगते हैं। यही स्वर्गों के भोग हैं।

जिज्ञासा २. क्या सम्यग्दर्शन के बिना कभी सुख प्राप्त नहीं होते ?

शान्ति— जी हाँ! सम्यग्दर्शन के या रत्नत्रय के अभाव में न तो मोक्ष प्राप्त होता है, न आत्मिक सुख प्राप्त होता है और न ही संसार के उच्च स्तरीय सुख प्राप्त होते हैं।

जिज्ञासा ३. स्वर्ग में देवों का भी मरण होता है, क्या ?

शान्ति— और नहीं तो क्या! भले ही उन्हें अमर कहा जाता है फिर भी अपनी आयु पूर्ण कर उन्हें मरना ही पड़ता है।

जिज्ञासा ४. क्या स्वर्ग के देव मरकर एक-इन्द्रिय ही होते हैं या किन्हीं अन्य पर्याय में भी जन्म लेते हैं ?

शान्ति— स्वर्ग के देव अगर बिना सम्यग्दर्शन के संक्लेश के साथ मरण करते हैं तो अग्नि और वायुकायिक को छोड़कर तीन एक-इन्द्रिय

में उत्पन्न हो सकते हैं या अन्य तिर्यंचों-मनुष्यों में भी उत्पन्न हो सकते हैं किन्तु यदि सम्यग्दर्शन के साथ उत्पन्न होते हैं तो उच्च कुलीन मनुष्य ही बनते हैं।

जिज्ञासा ५. क्या देव गति से सीधे मोक्ष प्राप्त नहीं होता ?

शान्ति— अरे! नहीं!! नहीं!!! मोक्ष तो मात्र मनुष्य गति से ही प्राप्त होता है और वह भी चतुर्थकाल में।

जिज्ञासा ६. क्या स्वर्ग के देव मरण करके नरक नहीं जाते ?

शान्ति— नहीं! स्वर्ग के देव मरण करके या तो मनुष्य बनते हैं या तिर्यंच। नारकी कभी नहीं।

जिज्ञासा ७. चतुर्थकाल क्या कहलाता है ?

शान्ति— कालचक्र के परिवर्तन में काल अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी के भेद से दो प्रकार का होता है। अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी काल के भी छह-छह भेद होते हैं। वर्तमान अवसर्पिणी काल के छह भेद इस प्रकार हैं-

१. सुखमा-सुखमा काल (प्रथमकाल) २. सुखमा काल (द्वितीय-काल) ३. सुखमा-दुखमा काल (तृतीयकाल) ४. दुखमा-सुखमा काल (चतुर्थकाल) ५. दुखमा काल (पंचमकाल) ६.दुखमा-दुखमा काल (षष्टमकाल)। इनमें दुखमा-सुखमा काल को ही चतुर्थकाल कहते हैं।

जिज्ञासा ८. क्या चतुर्थकाल को छोड़कर अन्य कालों में मोक्ष प्राप्त नहीं होता?

शान्ति— नहीं! कुछ अपवादों को छोड़कर चतुर्थकाल के अलावा किसी काल में भी मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता।

जिज्ञासा ९. क्या देव मरण करके एक-इन्द्रिय में तक उत्पन्न हो जाते हैं ?

शान्ति— अरे भाई! पहले भी आपसे कहा था कि जिनवाणी में शंका नहीं करनी चाहिए और आप पुनः वही कह रहे हैं, यह यह बात ठीक नहीं है। जी हाँ! देव मरण करके एक-इन्द्रिय में तक उत्पन्न हो जाते हैं।

जिज्ञासा १०. देवों का एक-इन्द्रिय में उत्पन्न होने का कारण क्या है?

शान्ति– संक्लेश परिणाम। संक्लेश परिणामों में विशुद्धि का अभाव होता है, जो दुर्गति का कारण बनते हैं।

जिज्ञासा ११. देवों को किस बात से संक्लेश होता है?

शान्ति– जब देवों की आयु छह माह शेष बचती है, तो उसी समय-अवधि में उनकी नवीन आयु के बन्ध का अवसर भी आता है, और उसी समय उनके गले में डली हुई माला मुरझा जाती है, मुरझाई हुई माला को देखकर सम्यग्दृष्टि को सुख होता है, कि अब हम मनुष्य पर्याय को प्राप्त कर संयम धारण करेंगे और मिथ्यादृष्टि देव अपने भोग-विलास को छूटता हुआ जानकर दुखी होते हैं, यही उनका संक्लेश का कारण होता है।

जिज्ञासा १२. दो हजार सागर क्या कहलाता है?

शान्ति– यह समय का परिचायक है, दो हजार सागर वर्ष त्रस पर्याय में रहने की अधिकतम स्थिति या आयु है।

जिज्ञासा १३. सागर क्या कहलाता है?

शान्ति– समय की ईकाई की मापक विधि को सागर कहते हैं। जो एक विशाल समय का द्योतक है।

१३. भवचक्र हर्त्ता भावना

मोक्ष योग्य जब किया न बोध,
तब जा पहुँचे इतर निगोद।
सो 'विद्या' 'सुव्रत' नत शीश,
कु-चक्र हर-दो प्रभु आशीष॥

अर्थ— मोक्ष के योग्य यदि ज्ञान या रत्नत्रय आदि का आचरण नहीं करते तो त्रस काल पूरा व्यतीत कर जीव पुनः निगोद में पहुँच जाते हैं। और इन्हीं निगोद जीवों को इतर निगोद भी कहते हैं इसलिए इस चतुर्गति रूप संसार के कु-चक्र हरने के लिए आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य सुव्रतसागर प्रभु को नमोऽस्तु करके आशीर्वाद चाहते हैं।

भावार्थ— यदि त्रस काल में जीव मोक्ष प्राप्त नहीं करते तो उन्हें पुनः निगोद के भयंकर दुख सहने को जाना ही पड़ता है।

जिज्ञासा १. मोक्ष योग्य बोध क्या कहलाता है?

शान्ति— सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के योग्य आचरण हेतु ज्ञान प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करना मोक्ष के योग्य ज्ञान या बोध कहलाता है।

जिज्ञासा २. क्या बोध और बोधि में अन्तर होता है?

शान्ति— जी हाँ! बोध अर्थात् सम्यग्ज्ञान या केवलज्ञान बोधि अर्थात् रत्नत्रय।

जिज्ञासा ३. इतर निगोद किसे कहते हैं?

शान्ति— संसारी जीव की यात्रा नित्य निगोद से प्रारम्भ होती है और त्रस काल में अगर वे अपना कल्याण नहीं करते तो वापिस उन्हें निगोद पर्याय में जाना पड़ता है और इन्हीं जीवों को इतर निगोद या इतर निगोदिया जीव कहते हैं।

जिज्ञासा ४. नित्य निगोद और इतर निगोद जीवों के दुख में क्या कुछ अन्तर होता है?

शान्ति— जी नहीं! नित्य निगोद और इतर निगोद जीवों के दुख में कोई अन्तर नहीं होता बस उनकी संज्ञा में अन्तर होता है।

जिज्ञासा ५. कु-चक्र किसे कहते हैं ?

शान्ति— चौरासी लाख योनियों एवं चार गतियों में संसारी जीवों का वहीं-वहीं बार-बार जन्म-मरण करते हुए उत्पन्न होना ही कु-चक्र कहलाता है या संसार-चक्र को ही कु-चक्र कहते है।

जिज्ञासा ६. क्या कु-चक्र से निकलने का कोई मार्ग होता है ?

शान्ति— जी हाँ! कु-चक्र से निकलने के लिए सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र रूपी धर्म को स्वीकार कर मोक्षमार्ग पर चलना ही कु-चक्र से निकलने का मार्ग है।

जिज्ञासा ७. क्या प्रभु या गुरु के आशीष से कु-चक्र समाप्त हो सकता है ?

शान्ति— जी हाँ! सच्चे देव-शास्त्र-गुरु संसार रूपी दुख के कु-चक्र को समाप्त करने में निमित्त बनते हैं।

जिज्ञासा ८. क्या कु-चक्र समाप्त करने में अन्य कोई सहायता नहीं करते ?

शान्ति— जी नहीं! जो स्वयं संसार के चक्र में उलझे हों वह संसार चक्र समाप्त नहीं कर सकते और सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के अतिरिक्त सम्पूर्ण जगत संसार में उलझा ही है।

जिज्ञासा ९. क्या एक बार संसार चक्र में से मुक्ति पाने पर पुनः संसार चक्र में आते हैं ?

शान्ति— जी नहीं! एक बार संसार चक्र से मुक्ति पाने पर अनन्तकाल व्यतीत होने पर भी एवं तीनलोक में प्रलय आने पर भी मुक्त जीव संसार चक्र में लौटकर पुनः कभी नहीं आते।

जिज्ञासा १०. गुरु-प्रभु का आशीष कु-चक्र हरने में कैसे निमित्त बनता है ?

शान्ति— व्यवहारनय से या बहिरंग निमित्त से।

जिज्ञासा ११. व्यवहारनय किसे कहते हैं ?

शान्ति— जो सम्यग्ज्ञान आत्मा के अतिरिक्त बाहरी साधनों को बताता है, या वस्तु के आंशिक ज्ञान को व्यवहारनय कहते हैं तथा सम्पूर्ण ज्ञान को प्रमाण कहते हैं।

श्री प्रथम ढाल का सारांश

संसारी जीव की संसार अवस्था में यात्रा अनादि काल से चल रही है और इस यात्रा का प्रारम्भ नित्य निगोद के रूप में सभी जीवों का होता है, फिर क्रमशः पंच स्थावर से गुजरता हुआ यह जीव दुर्लभमणि के समान विकलत्रय अर्थात् दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय और चार इन्द्रिय आदि जीवों की पर्याय के दुखों को भोगता हुआ दुर्लभतर मणि पर्याय की भाँति पंचेन्द्रिय पर्याय को प्राप्त होता है। यहाँ पर पंचेन्द्रिय के संज्ञी-असंज्ञी भेदों में कभी बलहीन बनकर, कभी बलवान बनकर दुखों को सहन करता है अर्थात् जब वह बलहीन बना तो बलवालों के द्वारा सताया गया और जब बलवान बना तो बलहीनों को सताता रहा।

इस प्रकार यह तिर्यंचों के अत्यन्त दुखों को सहन करता हुआ नरक की यात्रा को प्रारम्भ करता है। नरक में चार तरह के अर्थात शारीरिक, क्षेत्रजन्य, मानसिक और परकृत दुखों को सहन करता हुआ दुर्लभतम मणि-पर्याय के समान मनुष्य पर्याय को प्राप्त होता है। यहाँ उसे मनुष्य गति के कष्टों का सामना करना पड़ता है और धर्म के अभाव में मृत्यु को प्राप्त होकर वह देवों के चार निकायों में से किसी एक निकाय में उत्पन्न होता है। यहाँ पर भी धर्म के अभाव में भोगों की आसक्ति में लिप्त हुआ वह प्राणी अपने जीवन के अंत में संक्लेश करता हुआ मृत्यु को प्राप्त होता है और मर करके एक-इन्द्रिय सम्बन्धी वायु और अग्निकायिक को छोड़कर पृथ्वी, जल या वनस्पति किसी एक में उत्पन्न होकर पुनः निगोद में उस समय उत्पन्न हो जाता है जब त्रस पर्याय के दो हजार सागर वर्ष व्यतीत हो जाते हैं और इस जीव को ही जैन धर्म में इतर निगोद की संज्ञा दी है।

इस तरह से संसारी प्राणी का चार गतियों का और चौरासी लाख योनियों का चक्र अनादि काल से चलता रहता है और यदि धर्म का अर्थात सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का आश्रय नहीं लिया जाता है तो यह चक्र अनन्तकाल तक चलता ही रहता है। इन दुखों से बचने का अगर कोई मार्ग है तो वह है रत्नत्रय रूपी सम्यक् धर्म। इसी बात को ध्यान में रखकर संसारी प्राणी अपने संसार-चक्र से बचने के लिए अपने गुरु-प्रभु से आशीष माँगता है और नमोऽस्तु करते हुए यही प्रार्थना करता है कि हमें अपने संसार-चक्र से बचने के लिए आप आशीर्वाद दें।

॥ इस प्रकार श्रीछहढाला की प्रथम ढाल समाप्त हुई ॥

❑ ❑ ❑

श्री द्वितीय ढाल

मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र वर्णन

१. मिथ्यात्व वर्णन

(विष्णु)

मिथ्यादर्शन ज्ञान आचरण, ये भव-भव दुख दें।
जिन्हें समझकर सुखेच्छु त्यागें, वे कुछ हम कह दें॥
सात-तत्त्व छह-द्रव्य आदि की, उल्टी श्रद्धाएँ।
मिथ्यादर्शन दो प्रकार का, जिन गुरु बतलाएँ॥

अर्थ— मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र यह जीव को भव-भव दुख देने वाले हैं जिन्हें समझकर सुख की इच्छा रखने वाले लोग त्याग देते हैं उन्हीं को हम कुछ कहने वाले हैं सात तत्त्व छह द्रव्य आदि की विपरीत मान्यताएँ मिथ्यादर्शन कहलाती हैं यह मिथ्यादर्शन दो प्रकार का होता है ऐसा जिनेन्द्र भगवान और निर्ग्रंथ गुरु बतलाते हैं।

भावार्थ— मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र संसारी प्राणियों को भव-भव में दुख देने वाले होते हैं सुख की इच्छा रखने वाले इन्हें त्याग देते हैं।

जिज्ञासा १. मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र क्या कहलाते हैं?

शान्ति— सम्यग्दर्शन के विपरीत भाव को मिथ्यादर्शन कहते हैं, सम्यग्ज्ञान के विपरीत भाव को मिथ्याज्ञान कहते हैं और सम्यक्चारित्र के विपरीत भाव को मिथ्याचारित्र या मिथ्या-आचरण कहते हैं।

जिज्ञासा २. मिथ्यादर्शन कैसा होता है?

शान्ति— सच्चे देव-शास्त्र-गुरु और अपनी आत्मा के स्वरूप को विपरीत रूप में स्वीकार करना या सही रूप में स्वीकार नहीं करना यही मिथ्यादर्शन का स्वरूप है।

जिज्ञासा ३. मिथ्याज्ञान कैसा होता है?

शान्ति— मिथ्यादर्शन के साथ काम करने वाले या रहने वाले ज्ञान को मिथ्याज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा ४. मिथ्याचारित्र किसे कहते हैं ?

शान्ति— मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान पूर्वक धारण किए गए चारित्र को मिथ्याचारित्र कहते हैं अथवा राग-द्वेष रूप हिंसात्मक प्रवृत्ति को बढ़ाने वाले चारित्र को मिथ्याचारित्र कहते हैं।

जिज्ञासा ५. यह हमें भव-भव दुख कैसे दे सकते हैं ?

शान्ति— मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र के कारण संसारी प्राणी को कभी मुक्ति प्राप्त नहीं हो पाती और वह संसार में भ्रमण करता रहता है और यही उसके दुख देने का कारण है।

जिज्ञासा ६. सुखेच्छु किसे कहते हैं ?

शान्ति— जो जीव सुख की इच्छा रखने वाले होते हैं उन्हें सुखेच्छु कहते हैं।

जिज्ञासा ७. सात तत्त्व क्या कहलाते हैं ?

शान्ति— तत्त्व तो अनन्त-अनन्त होते हैं परन्तु यहाँ पर सात तत्त्वों का तात्पर्य है सात प्रकार के तत्त्व।

जिज्ञासा ८. तत्त्व किसे कहते हैं ?

शान्ति— अपने भाव को अपने स्वभाव को तत्त्व कहते हैं। जो जिसका स्वभाव होता है उसके रूप में परिणमन करने को तत्त्व कहते हैं।

जिज्ञासा ९. उल्टी श्रद्धा क्या कहलाती है ?

शान्ति— कोई जीव अगर अपनी श्रद्धा, मान्यता और विश्वास को जैसा होता है वैसा ना कर के विपरीत बनाता है तो उसे उल्टी श्रद्धा कहते हैं।

जिज्ञासा १०. क्या गुरु और जिनेन्द्र भगवान मिथ्यादर्शन त्यागने का उपदेश देते हैं?

शान्ति— जी हाँ! जिनेन्द्र भगवान और उनके अनुयायी निर्ग्रंथ दिगम्बर गुरु सर्वप्रथम धर्म को स्वीकार करने के पहले मिथ्यादर्शन को त्यागने का ही उपदेश देते हैं।

जिज्ञासा ११. तो क्या मिथ्यादर्शन इतना घातक होता है ? कि जिसके साथ धर्म नहीं बन सकता ?

शान्ति— जी हाँ! मिथ्यादर्शन सबसे ज्यादा घातक होता है इसके साथ

कभी भी धर्म का पलना सम्भव नहीं है इसलिए सर्वप्रथम इसके त्याग का उपदेश है।

जिज्ञासा १२. मिथ्यादर्शन क्या होता है?

शान्ति– जो अपने स्वरूप से और सच्चे धर्म आदि के स्वरूप से हमें परिचित नहीं होने देता या उन पर विश्वास नहीं करने देता अथवा उन्हें मान्यता नहीं देता वही मिथ्यादर्शन कहलाता है।

जिज्ञासा १३. क्या जिनेन्द्र भगवान के उपदेश और गुरु के उपदेश के बिना मिथ्यादर्शन त्यागना सम्भव नहीं होता?

शान्ति– जी हाँ! जिनेन्द्र भगवान और गुरु के उपदेश के बिना हमें हित और अहित की पहचान नहीं होती तो फिर मिथ्यादर्शन की पहचान कैसे होगी अतः जिनेन्द्र भगवान के उपदेश और गुरु के उपदेश के बिना मिथ्यादर्शन त्यागना असम्भव है।

जिज्ञासा १४. मिथ्यादर्शन के दो प्रकार कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति– मिथ्यादर्शन के दो प्रकार निम्न होते हैं–
१. अगृहीत मिथ्यादर्शन और २. गृहीत मिथ्यादर्शन।

जिज्ञासा १५. अगृहीत मिथ्यादर्शन क्या कहलाता है?

शान्ति– जो मिथ्यादर्शन अनादिकाल से हमारी आत्मा के साथ विभाव रूप में जुड़ा रहता है उसे ही अगृहीत मिथ्यादर्शन कहते हैं।

जिज्ञासा १६. गृहीत मिथ्यादर्शन किसे कहते हैं?

शान्ति– जो हम वर्तमान में अपनी मान्यताओं के द्वारा विपरीत मान्यताओं को स्वीकार करते हैं उसे गृहीत मिथ्यादर्शन कहते हैं।

२. अगृहीत मिथ्यात्व वर्णन

प्रथम भेद है अगृहीत जो, मिथ्योदय से हो।
लक्ष्यभूत जीवादि तत्त्व का, ज्ञान न जिससे हो॥
शुद्ध बुद्ध एकत्व अरूपी, जीव अनन्त गुणी।
फिर भी तन को चेतन माने, वो मिथ्यात्व गुणी॥

अर्थ– दो विध मिथ्यादर्शन में प्रथम गृहीत मिथ्यादर्शन जो कि मिथ्यात्व के उदय से होता है जिसमें लक्ष्यभूत जीवादि तत्त्व का ज्ञान नहीं होने से शुद्ध-बुद्ध एकत्व, अरूपी और अनन्तगुणी चेतन को तन के रूप में मानता है, इसी को अगृहीत मिथ्यात्व कहते हैं।

भावार्थ– मिथ्यात्व के उदय से संसारी जीव में अगृहीत मिथ्यात्व होता है जिससे लक्ष्य भूत जीव आदि तत्त्व और शुद्ध आत्म तत्त्व का श्रद्धान ना हो कर के तन को ही चेतन मान लिया जाता है।

जिज्ञासा १. मिथ्यादर्शन का उदय क्या कहलाता है?

शान्ति– अनादिकाल से आत्मा में जुड़े हुए मिथ्यात्व के उदय होने पर जो विपरीत भाव उत्पन्न होते हैं उन्हें मिथ्यादर्शन का उदय कहते हैं।

जिज्ञासा २. लक्ष्यभूत जीव आदि तत्त्व किन्हें कहते हैं?

शान्ति– प्राणी के जीवन के उद्देश्य को लक्ष्य कहते हैं और मोक्षमार्ग की अपेक्षा से प्राणी का लक्ष्य शुद्ध आत्म तत्त्व या मोक्ष होता है।

जिज्ञासा ३. शुद्ध-बुद्ध एकत्व अरूपी अनन्तगुणी आत्मा किसकी होती है?

शान्ति– सभी संसारी जीवों के पास शक्ति की अपेक्षा से होती है किन्तु अभिव्यक्ति की अपेक्षा से मात्र सिद्ध परमेष्ठियों की होती है।

जिज्ञासा ४. तन को चेतन मानने का क्या कारण है?

शान्ति– मिथ्यात्व के उदय से संसारी जीव स्वरूप को स्वीकार नहीं कर पाता इसलिए शरीर को ही चैतन्य स्वरूप स्वीकार कर लेता है।

जिज्ञासा ५. अगर तन को चेतन मानते हैं तो क्या बाधा उत्पन्न होती है?

शान्ति– अगर तन को चेतन मानते हैं तो पूरा जैनधर्म नष्ट हो जाएगा, उसके सिद्धान्त ही नष्ट हो जाएंगे और फिर कुछ भी शेष नहीं बचेगा क्योंकि चैतन्य स्वभाव जड़ में परिवर्तित हो जाएगा और जड़ नश्वर होने से पूरा संसार ही नष्ट हो जाएगा अतः संसार के

समस्त अस्तित्त्व के नष्ट होने का प्रसंग उपस्थित हो जाएगा जो कि अनुचित होगा।

जिज्ञासा ६. चेतन को तन मान लेते हैं इसमें क्या बाधा आएगी ?

शान्ति– अरे! भाई कान को ऐसे पकड़ो या वैसे तात्पर्य तो वही है ना, अतः इसमें भी वही समस्या उत्पन्न होगी।

जिज्ञासा ७. जीव तत्त्व किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिसमें जानने देखने और सुख को अनुभव करने की क्षमता होती है उसे जीव तत्त्व कहते हैं।

जिज्ञासा ८. जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

शान्ति– जीव दो प्रकार के होते हैं–संसारी जीव और मुक्त जीव।(त.सू.२-१०)

जिज्ञासा ९. संसारी जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव संसार में चौदह गुण स्थानों में रहकर अपना जीवन यापन करते हैं उन्हें संसारी जीव कहते हैं।

जिज्ञासा १०. मुक्त जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव चौदह गुणस्थानों को पार करके मुक्त हो जाते हैं उन्हें मुक्त जीव कहते हैं।

जिज्ञासा ११. यहाँ पर जीव तत्त्व का व्याख्यान करने का उद्देश्य क्या है ?

शान्ति– यहाँ पर जीव तत्त्व का व्याख्यान करके उसका स्वरूप बताकर यह बताना चाहते हैं कि अगर इससे विपरीत श्रद्धान किया तो आपका जीव तत्त्व के प्रति मिथ्यादर्शन अथवा विपरीत मान्यता होने से मिथ्यादर्शन हो जाएगा।

जिज्ञासा १२. जीव तत्त्व का विपरीत श्रद्धान क्या कहलाता है ?

शान्ति– जैन सिद्धान्तों में जीव तत्त्व का जैसा स्वरूप बताया गया है वैसा स्वरूप स्वीकार ना करके उससे अलग अपने मन से स्वरूप स्वीकार करना जीव तत्त्व का विपरीत श्रद्धान माना जाता है।

जिज्ञासा १३. क्या अन्य तत्त्वों के भी विपरीत श्रद्धान होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! अन्य सभी तत्त्वों के भी विपरीत श्रद्धान होते हैं उनको हम क्रमशः आगे-आगे कहेंगे।

३. तत्त्वों की विपरीत धारणा

अभिन्न भिन्न अत्यन्त भिन्न जो, अजीव कायों को।
राग द्वेष कर अपना समझे, आस्त्रव भावों को॥
द्रव्य भाव नौकर्म बन्ध कर, भाव शुभाशुभ हों।
भव तन भोग हितैषी लगते, तो क्या संवर हों॥

अर्थ– जो चेतन से भिन्न-अभिन्न और अत्यन्त भिन्न होते हैं ऐसे अजीव कायों को राग वश अपना समझता है, आस्त्रव भावों को अपना समझकर द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म रूप शुभाशुभ बन्ध करता है और जिसे भव तन भोग हितैषी लगते हैं वह संवर कैसे माना जाएगा।

भावार्थ– अजीव आस्त्रव और संवर तत्त्व के विषय में और बन्ध तत्त्वों के विषय में इस छन्द में विपरीत श्रद्धा कैसी होती है यह बताया गया है।

जिज्ञासा १. अभिन्न पदार्थ किसे कहते हैं?

शान्ति– जो पदार्थ शरीर में एकमेक होकर संयोग सम्बन्ध के साथ रहते हैं उन्हें अभिन्न पदार्थ कहते हैं। जैसे–कर्म, शरीर और इन्द्रियाँ आदि।

जिज्ञासा २. भिन्न पदार्थ किसे कहते हैं?

शान्ति– जो पदार्थ शरीर से भिन्न होकर भी अपने माने जाते हैं उन्हें भिन्न पदार्थ कहते हैं। जैसे पत्नी, बच्चे, वस्त्र, आभूषण आदि।

जिज्ञासा ३. अत्यन्त भिन्न पदार्थ किसे कहते हैं?

शान्ति– जो पदार्थ स्पष्ट रूप से हमसे अलग दिखाई देते हैं उन्हें अत्यन्त भिन्न पदार्थ कहते हैं। जैसे दुकान, मकान आदि।

जिज्ञासा ४. अजीव काय किसे कहते हैं?

शान्ति– जो वस्तुएँ शरीर के रूप में होती हैं किन्तु जिनमें चेतना का गुण नहीं पाया जाता उन्हें अजीव काय कहते हैं।

जिज्ञासा ५. राग-द्वेष क्या कहलाता है?

शान्ति– मोह रूपी दादा के दो बेटे हैं। एक का नाम राग है दूसरे का नाम

द्वेष है। राग की माया बेटी है और लोभ बेटा है। द्वेष के भी दो बेटे हैं एक क्रोध और दूसरा मान। इस प्रकार से मोह का यह परिवार होगा इसका विस्तार और भी ज्यादा है। राग मोह का ही एक रूप है जो हमें वस्तु के वास्तविक स्वरूप से परिचय ना करा कर गाफिल कर देता है उसको ही हम राग कहते हैं और वस्तु को अपना मानने लगते हैं। द्वेष से वस्तु हमें अप्रिय लगती है और हम उसको त्यागने का प्रयास करते हैं।

जिज्ञासा ६. आस्त्रव भाव किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिन भावों के द्वारा कर्म रूप पुद्गल वर्गणायें कर्म के रूप में बदलकर आत्मा से सम्बन्धित हो जातीं हैं उन भावों को आस्त्रव भाव कहते हैं अथवा कर्मों के आने के द्वार को आस्त्रव कहते हैं।

जिज्ञासा ७. द्रव्यकर्म किसे कहते हैं ?

शान्ति— जो कर्म पुद्गल के रूप में आत्मा से जुड़ते हैं उन्हें द्रव्यकर्म कहते हैं। जैसे ज्ञानावरणादि आठ कर्म।

जिज्ञासा ८. भाव कर्म किसे कहते हैं ?

शान्ति— राग-द्वेष आदि करने वाले भावों को भावकर्म कहते हैं।

जिज्ञासा ९. नोकर्म किसे कहते हैं ?

शान्ति— छह पर्याप्तियाँ और औदारिक, वैक्रियिक एवं आहारक शरीर यह मिलकर नोकर्म कहलाते हैं अथवा बाहरी साधन जो हमें उपलब्ध होते हैं उन सब को हम नोकर्म कहते हैं।

जिज्ञासा १०. शुभाशुभ भाव किसे कहते हैं ?

शान्ति— जो भाव पुण्य देकर हमारी आत्मा को पवित्र करते हैं उन्हें शुभभाव कहते हैं और जो भाव पाप देकर हमारी आत्मा को अपवित्र करते हैं उन्हें अशुभ भाव कहते हैं।

जिज्ञासा ११. भव-तन भोग किसे कहते हैं ?

शान्ति— संसार और शरीर में रहने वाले पंचेन्द्रिय सम्बन्धी विषयों को भव-तन भोग कहते हैं।

जिज्ञासा १२. संवर क्या कहलाता है ?

शान्ति– कर्मों के आस्रव को रोकने का नाम संवर है। (स.सि. पृ.११)

जिज्ञासा १३. अगर हमें संसार के और शरीर के भोग अच्छे लगते हैं तो इसमें क्या बाधा उत्पन्न होती है ?

शान्ति– अगर हमें संसार, शरीर और भोगों में आनन्द आने लगता है तो हम आत्मा के आनन्द से वंचित रह जाते हैं और यही हमारा दुख का कारण बनता है इसी को विपरीत श्रद्धान कहते हैं।

जिज्ञासा १४. अजीव काय का विपरीत श्रद्धान क्या कहलाता है ?

शान्ति– आत्मा से भिन्न-अभिन्न और अत्यन्त भिन्न पदार्थों को आत्मा के रूप में या अपना मान लेना अजीव तत्त्व का विपरीत श्रद्धान है।

जिज्ञासा १५. आस्रव तत्त्व का विपरीत श्रद्धान किसे कहते हैं ?

शान्ति– पंचेन्द्रिय के विषयों को राग-द्वेष करके अपना हितैषी समझ लेना इसको ही आस्रव तत्त्व का विपरीत श्रद्धान कहते हैं।

जिज्ञासा १६. बन्ध तत्त्व का विपरीत श्रद्धान क्या कहलाता है ?

शान्ति– द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म के द्वारा शुभाशुभ भाव करते हुए आस्रव करके अपनी आत्मा से एकमेक कराना ही बन्ध तत्त्व का विपरीत श्रद्धान है।

जिज्ञासा १७. संवर तत्त्व का विपरीत श्रद्धान क्या कहलाता है ?

शान्ति– सांसारिक भोग और शरीर को ही अपना हितकारी मानना संवर तत्त्व का विपरीत श्रद्धान माना जाता है।

४. ज्ञान-चारित्र की विपरीत धारणा

गजस्नानवत् किये निर्जरा, अकाम या सविपाक।
मोक्ष योग्य श्रम ना कर पाए, मिथ्याज्ञान विपाक॥
यों मिथ्या-दृग-ज्ञान आदि की, विषय कषायें जो।
मिथ्या-चारित कहलाती हैं, पाप क्रियायें वो॥

अर्थ– गजस्नान के समान निर्जरा करता हुआ संसारी प्राणी अकाम या सविपाक निर्जरा तो करता है किन्तु मोक्ष के योग्य पुरुषार्थ नहीं करता हुआ मात्र मिथ्याज्ञान का फल ही पाता है इस प्रकार से मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र की विषय और कषाय से सम्बन्धित क्रियाएँ जो कि पाप क्रियाएँ होती हैं, वही मिथ्याचारित्र कहलाती हैं।

भावार्थ– अकाम या सविपाक निर्जरा गजस्नान के समान करते हुए मोक्ष के योग्य श्रम ना करने पर संसारी प्राणी मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान के साथ मिथ्याचारित्र की पाप क्रियाओं में लगा रहता है।

जिज्ञासा १. गजस्नान के समान निर्जरा क्या कहलाती है?

शान्ति– जैसे हाथी पानी में स्नान कर अपने शरीर को शुद्ध पवित्र बनाकर बाहर निकलकर अपनी सूंड से धूल को अपने शरीर पर डाल देता है इस प्रकार से स्नान करने के द्वारा हाथी जितना पवित्र या शुद्ध होता है उससे कहीं ज्यादा धूल डालने पर पुनः अपवित्र हो जाता है इसी प्रकार से संसारी प्राणी थोड़ी बहुत निर्जरा तो करता है किन्तु संसार के कार्यों में लिप्त होकर उनसे कहीं ज्यादा कर्म बन्ध कर लेता है, इसी को शास्त्रों में गजस्नान के समान निर्जरा कहा गया है। (द्र.सं.टी. ३६)

जिज्ञासा २. निर्जरा कितने प्रकार की होती है?

शान्ति– निर्जरा दो प्रकार की होती है–
१. द्रव्य निर्जरा और २. भाव निर्जरा।

जिज्ञासा ३. द्रव्य निर्जरा किसे कहते हैं?

शान्ति– द्रव्य कर्मों का आंशिक रूप से आत्मा से अलग होना द्रव्य निर्जरा कहलाता है। (स.सि.पृ. ११)

जिज्ञासा ४. भाव निर्जरा किसे कहते हैं ?

शान्ति– आत्मा से राग-द्वेष आदि विकारी भावों का अलग होना ही भाव निर्जरा कहलाती है।

जिज्ञासा ५. अकाम निर्जरा किसे कहते हैं ?

शान्ति– कर्मों के आंशिक झड़ने को निर्जरा कहते हैं किन्तु जो निर्जरा मोक्षमार्ग में कार्यकारी नहीं होती उसे अकाम निर्जरा कहते हैं। (त.सू. ६-२०)

जिज्ञासा ६. सविपाक निर्जरा किसे कहते हैं ?

शान्ति– वह निर्जरा जो अपने कर्म की आयु पूरी होने पर होती है उसे सविपाक निर्जरा कहते हैं जो सब संसारी जीवों सदा होती है। जैसे पके हुए पत्तों का अपने समय से पेड़ से झड़ जाना।

जिज्ञासा ७. अविपाक निर्जरा किसे कहते हैं ?

शान्ति– जैसे समय के पूर्व अधपके हुए फलों को तोड़कर किसी भी तरीके से उन्हें पकाना और प्रयोग में लाना होता है उसी तरह से समय के पूर्व ही कर्मों को उदय में लाकर नष्ट कर देना या तप द्वारा समय से पहले कर्म का झड़ना अविपाक निर्जरा कहलाती है। जो तपस्वियों को होती है। यह मिथ्या व सम्यक् दो प्रकार की है। मोक्षमार्ग में सम्यक् कार्यकारी है। (द्र.सं.टी. ३६)

जिज्ञासा ८. मोक्ष-योग्य श्रम क्यों नहीं कर पाए ?

शान्ति– मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र के द्वारा किए गए सारे कर्म मोक्ष के योग्य श्रम करने से रोकते हैं और इन्हीं के कारण मोक्षयोग्य श्रम नहीं कर पाए।

जिज्ञासा ९. मिथ्याज्ञान विपाक क्या कहलाता है ?

शान्ति– मोक्षमार्ग के योग्य अथवा तत्त्वों के सम्यग्ज्ञान करने के योग्य जो ज्ञान नहीं होता उसको मिथ्याज्ञान कहते हैं और इसका पक कर फल देना ही इसका विपाक कहलाता है।

जिज्ञासा १०. विषय-कषाय क्या कहलाते हैं ?

शान्ति— पंचेन्द्रिय के विषयों में रमण करना उनमें राग-द्वेष करना पंचेन्द्रिय के विषय कहलाते हैं। क्रोध, मान, माया और लोभ आदि सोलह कषाय के साथ हास्य, रति आदि नौ नोकषायों में रमण करना कषाय कहलाती हैं। इस प्रकार से पंचेन्द्रिय के विषय और कषायों में रमण करना यह विषय-कषाय कहलाते हैं।

जिज्ञासा ११. मिथ्याचारित्र क्या कहलाता है ?

शान्ति— मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान के द्वारा अपने आचरण को विषय-कषाय के साथ करना या पाप क्रियाओं में लीन रहना मिथ्या-चारित्र कहलाता है।

जिज्ञासा १२. पाप क्रियाएँ किन्हें कहते हैं ?

शान्ति— जिन क्रियाओं में हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह की भूमिका रहती है उन्हें पाप क्रियाएँ कहते हैं।

जिज्ञासा १३. पाप क्रियाएँ मिथ्याचारित्र कैसे कहलातीं हैं ?

शान्ति— पाप क्रियाएँ मोक्षमार्ग से, तत्त्व के श्रद्धान से और आत्मा के कल्याण से दूर करती हैं इसलिए मिथ्याचारित्र कहलाती हैं।

जिज्ञासा १४. क्या मिथ्याचारित्र का कार्य मोक्षमार्ग से दूर करना होता है ?

शान्ति— जी हाँ! मिथ्याचारित्र का कार्य मोक्षमार्ग से, मोक्ष से और वस्तु तत्त्व से दूर करना ही होता है।

जिज्ञासा १५. आप क्या कहना चाहते हैं ?

शान्ति— हम अपनी तरफ से कुछ भी नहीं कहना चाहते हैं हम जिन-आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए यह कहना चाहते हैं कि मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र जीव के लिए कभी भी कल्याण-कारी नहीं हो सकते हैं क्योंकि जो कार्य संसारी प्राणियों को ही हितकारी नहीं हैं तो वह स्वयं को कैसे हितकारी हो सकते हैं।

५. गृहीत मिथ्यात्व वर्णन

भेद दूसरा गृहीत मिथ्या-दर्शन अब समझो।
कुगुरु कुदेव कुधर्म शास्त्र की, श्रद्धा से यह हो॥
स्वरूप से विचलित मत वाले, गुरु सब कुगुरु रहे।
भवसागर में हमें डुबाने, पत्थर नाव कहे॥

अर्थ– मिथ्यादर्शन के दो प्रकार में दूसरा प्रकार गृहीत मिथ्यादर्शन का अब हमें समझना चाहिए। कुगुरु, कुदेव, कुधर्म और कुशास्त्र आदि की श्रद्धा करने से गृहीत मिथ्यादर्शन होता है। जो अपने स्वरूप से विचलित हो चुके हैं ऐसे मत वाले गुरुओं को कुगुरु कहा जाता है। यह कुगुरु हमारे लिए संसार सागर में पत्थर की नाव के समान डुबाने वाले होते हैं जो स्वयं डूबेंगे और हमें भी डुबाएंगे।

भावार्थ– गृहीत मिथ्यादर्शन के अन्तर्गत कुगुरु, कुदेव, कुधर्म और कुशास्त्र आदि की श्रद्धा करके हम भवसागर में डूबते रहते हैं।

जिज्ञासा १. गृहीत मिथ्यादर्शन किसे कहते हैं?

शान्ति– जो मिथ्यादर्शन हम अपनी मान्यता के अनुसार स्वीकार करते हैं अपने बुद्धिपूर्वक बल से स्वीकार करते हैं उसे गृहीत मिथ्यादर्शन कहते हैं।

जिज्ञासा २. गृहीत मिथ्यादर्शन किन को स्वीकार करने पर होता है?

शान्ति– गृहीत मिथ्यादर्शन कुगुरु, कुदेव, कुधर्म और कुशास्त्र आदि को स्वीकार करने पर होता है अथवा इनकी श्रद्धा करने पर होता है।

जिज्ञासा ३. कुगुरु किसे कहते हैं?

शान्ति– शास्त्रों में गुरु का जो स्वरूप बतलाया है उससे भ्रष्ट हुए या उससे विचलित होकर स्वच्छन्द प्रवृत्ति करने वाले गुरुओं को कुगुरु कहते हैं।

जिज्ञासा ४. कुदेव किसे कहते हैं?

शान्ति– शास्त्रों में देवों-भगवंतों का जो स्वरूप बतलाया है उसको छोड़कर अन्य सभी देव कुदेव कहलाते हैं।

जिज्ञासा ५. कुधर्म किसे कहते हैं ?

शान्ति– अनेकान्त स्याद्वाद लक्षण वाले और अहिंसा लक्षण वाले धर्म के वस्तु स्वरूप को बताने वाला धर्म कहलाता है, इससे विपरीत जो भी है उसको हम कुधर्म कहते हैं।

जिज्ञासा ६. कुशास्त्र क्या कहलाते हैं ?

शान्ति– कुगुरु और कुधर्म को बताने वाली बातों के शास्त्रों को कुशास्त्र कहते हैं।

जिज्ञासा ७. स्वरूप से विचलित गुरु किन्हें कहते हैं ?

शान्ति– शास्त्रों में गुरु के स्वरूप को जिस प्रकार बतलाया है उस प्रकार स्वीकार ना करके मनमाने तरीके से स्वरूप को स्वीकार करना स्वरूप से विचलित गुरु कहलाते हैं।

जिज्ञासा ८. क्या सभी कुगुरु संसार-सागर में डुबाने वाले पत्थर की नाव होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! जो संसार-सागर से मुक्ति का मार्ग बताने में असमर्थ हैं, वह गुरु संसार सागर से पार कैसे लगाएंगे अर्थात् जो स्वयं डूबे हों वह किसी को पार कैसे करा सकते हैं। सो उन्हें पत्थर की नाव कहना उचित है।

जिज्ञासा ९. पत्थर की नाव कहने का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति– जैसे पानी में पत्थर की नाव तैर ही नहीं सकती उसी प्रकार से कुगुरु, कुदेव और कुधर्म की नाव संसार-सागर में तैर ही नहीं सकती, निश्चित रूप से उसका डूबना पक्का है।

६. गृहीत मिथ्यात्व का विशेष वर्णन

अस्त्र-शस्त्र तिय वस्त्र आदि धर, जो खुद नाथ हुए।
वे कुदेव उनके अनुयायी, दोनों जगत छुए॥
जिसमें द्रव्य भाव हिंसा की, दुखद प्रतिज्ञा हो।
वो कुधर्म जिसकी श्रद्धा से, गृहीतमिथ्या हो॥

अर्थ— अस्त्र-शस्त्र, पुत्र-कलत्र और वस्त्र के साथ रहकर भी जो अपने आप को भगवान या देव मानते हैं वह सब कुदेव कहलाते हैं और उनके अनुयायी दोनों मिलकर संसार ही बढ़ाते हैं। जिसमें द्रव्य भाव हिंसा के दुखदायक संकल्प होते हैं वह सब कुधर्म कहलाते हैं। इस प्रकार से कुगुरु, कुदेव, कुधर्म की श्रद्धा को ही गृहीत मिथ्यादर्शन कहते हैं।

भावार्थ— कुदेव, कुगुरु, कुशास्त्र की श्रद्धा करने पर जो भाव उत्पन्न होता है उसे गृहीत मिथ्यादर्शन कहते हैं।

जिज्ञासा १. अस्त्र किसे कहते हैं?

शान्ति— अपनी रक्षा करने के लिए या अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए जिन आयुधों को फेंक कर मारा जाता है उन्हें अस्त्र कहते हैं।

जिज्ञासा २. शस्त्र किसे कहते हैं?

शान्ति— जिन हथियारों को हाथ में लेकर ही चलाया जाता है उन्हें शस्त्र कहते हैं।

जिज्ञासा ३. तिय किसे कहते हैं?

शान्ति— अपनी विवाहित स्त्री या पत्नी को तिय कहते हैं।

जिज्ञासा ४. वस्त्र किसे कहते हैं?

शान्ति— जिन साधनों के द्वारा हम अपने शरीर को ढँककर अपने दिगम्बरत्व पर आवरण डालते हैं उनको वस्त्र कहते हैं।

जिज्ञासा ५. क्या कोई अस्त्र-शस्त्र, पुत्र-कलत्र और वस्त्र आदि के साथ भगवान हो सकता है?

शान्ति— यही तो मैं आपसे पूछ रहा हूँ कि क्या मात्र अकेला नाम रखने पर या बाहरी साधनों को रखने पर कोई भगवान् बन सकता है,

नहीं ना! तो फिर उन्हें हम भगवान् कैसे कह सकते हैं अर्थात् नहीं कह सकते।

जिज्ञासा ६. कुदेव के अनुयायी क्या कहलाते हैं?

शान्ति— जो भगवान् नहीं हैं उनको भगवान् मानकर उनके बताए हुए कपोल-कल्पित पथ पर चलने वाले लोगों को कुदेव के अनुयायी कहते हैं।

जिज्ञासा ७. कुदेव और उनके अनुयायी संसार को कैसे छूते हैं?

शान्ति— चूँकि कुदेव स्वयं संसार में भटके हुए हैं और उनके जो भी अनुयायी होंगे वह भी निश्चित रूप से संसार में ही भटकेंगे इसलिए दोनों जगत छूने वाले हुए। अर्थात् दोनों चिर-संसारी होते हैं।

जिज्ञासा ८. द्रव्य-भावहिंसा की दुखद प्रतिज्ञा क्या कहलाती है?

शान्ति— जिन क्रियाओं में मन-वचन-काय से द्रव्य के साथ, भाव के साथ हिंसा की जाती है, जो दुख को देने वाली होती है, ऐसे संकल्प को ही दुखद प्रतिज्ञा कहते हैं।

जिज्ञासा ९. दुखद प्रतिज्ञा को कुधर्म क्यों कहते हैं?

शान्ति— जिसके द्वारा अपने को और पर को सुख शान्ति प्राप्त हो उसी को धर्म कहा जाता है और जो दूसरों को दुख दे करके अपने आप को सुखी करने का प्रयत्न करता है उसको धर्म कैसे कहा जा सकता है इसी को कुधर्म कहते हैं।

७. गृहीत मिथ्यात्व के भेद

यों त्रय चतु पच आदि तीन सौ, त्रेसठ मत मिथ्या।
संख्य असंख्य अनन्तों भी हों, गृहीत दृग श्रद्धा॥
संशय मोह विपर्यय जिसमें, सभी दोष रहते।
गृहीत मिथ्याज्ञान वही जो, मिथ्यात्वी रचते॥

अर्थ– इस तरह से तीन, चार और पाँच प्रकार आदि का होता हुआ तीन सौ त्रेसठ मत भी होते हैं और संख्यात-असंख्यात अनन्त प्रकार का भी गृहीत मिथ्यादर्शन होता है। जिस ज्ञान में संशय, मोह और विपर्यय दोष रहते हैं और जो मिथ्यादृष्टि लोग रचते हैं उसे गृहीत मिथ्याज्ञान कहते हैं या जो गृहीत मिथ्यादर्शन के साथ ज्ञान होता है उसे गृहीत मिथ्याज्ञान कहते हैं।

भावार्थ– मिथ्यादर्शन के दो, तीन, चार आदि अनेक भेदों का वर्णन करते हुए संख्यात, असंख्यात और अनन्त भेदों को भी बताया है तथा साथ में गृहीत मिथ्याज्ञान क्या कहलाता है इसका भी यहाँ पर व्याख्यान किया गया है।

जिज्ञासा १. मिथ्यादर्शन के तीन भेद कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति– मिथ्यादर्शन के तीन भेद निम्न होते हैं–
१. संशय मिथ्यादर्शन २. अभिगृहीत मिथ्यादर्शन और
३. अनभिगृहीत मिथ्यादर्शन। (ध. १, भ.आ. ५६)

जिज्ञासा २. मिथ्यादर्शन के चार भेद कौन.कौन से होते हैं?

शान्ति– मिथ्यादर्शन के चार भेद निम्न होते हैं–
१. क्रियावादी मिथ्यादर्शन २. अक्रियावादी मिथ्यादर्शन ३. अज्ञानी मिथ्यादर्शन और ४. वैनयिक मिथ्यादर्शन। (स.सि. टी. ८-१)

जिज्ञासा ३. मिथ्यादर्शन के पाँच भेद कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति– मिथ्यादर्शन के पाँच भेद निम्न होते हैं–
१. एकांत मिथ्यादर्शन २. वैनयिक मिथ्यादर्शन ३. विपरीत मिथ्यादर्शन ४. संशय मिथ्यादर्शन और ५. अज्ञान मिथ्यादर्शन। (स.सि. टी. ८-१)

जिज्ञासा ४. मिथ्यादर्शन के तीन सौ त्रेसठ मत कैसे बनते हैं?

शान्ति– मिथ्यादर्शन के दो, तीन, चार और पाँच आदि भेद और उपभेदों

की संख्या के विस्तार केआधार पर मिथ्यादर्शन के तीन सौ त्रेसठ भेद भी हो जाते हैं। (रा.वा.टी. ८-१)

जिज्ञासा ५. मिथ्यादर्शन के संख्यात-असंख्यात और अनन्त भेद कैसे होते हैं?

शान्ति– मिथ्यादर्शन के संख्यात-असंख्यात और अनन्त भेद इसी तरह से विस्तार करने पर प्राप्त हो जाते हैं। (रा.वा.टी. ८-१)

जिज्ञासा ६. अभिगृहीत मिथ्यादर्शन क्या कहलाता है?

शान्ति– दूसरों का उपदेश सुनकर जीवादि तत्त्वों के अस्तित्त्व में अथवा उनके धर्मों में श्रद्धा नहीं करना अभिगृहीत मिथ्यादर्शन कहलाता है। (भ.आ. ५६)

जिज्ञासा ७. अनभिगृहीत मिथ्यादर्शन क्या कहलाता है?

शान्ति– दूसरों के उपदेश के बिना ही जो मिथ्यात्व कर्म के उदय से अतत्त्व श्रद्धान किया जाता है। उसे अनभिगृहीत मिथ्यादर्शन कहते हैं।

जिज्ञासा ८. गृहीत मिथ्याज्ञान क्या कहलाता है?

शान्ति– जो मिथ्यादृष्टि लोग मिथ्यादर्शन के सम्बन्ध में कपोल-कल्पित शास्त्रों की रचना या सिद्धान्तों की रचना या मान्यताओं की रचना करते हैं वह सब गृहीत मिथ्याज्ञान कहलाता है।

जिज्ञासा ९. गृहीत मिथ्याज्ञान की और क्या विशेषताएँ होती हैं?

शान्ति– गृहीत मिथ्याज्ञान में सारे दोष उत्पन्न होते हैं अथवा जिस ज्ञान में सारे दोष रहते हैं उस ज्ञान को गृहीत मिथ्याज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा १०. गृहीत मिथ्याज्ञान में कौन-कौन से विशेष दोष पाए जाते हैं?

शान्ति– गृहीत मिथ्याज्ञान में विशेष रूप से तीन दोष पाए जाते हैं–
१. संशय २. मोह और ३. विपर्यय।

जिज्ञासा ११. गृहीत मिथ्याज्ञान का संशय दोष क्या कहलाता है?

शान्ति– सम्यक्धर्म के सिद्धान्तों में शंका करना कि क्या वास्तव में ऐसा होता है अथवा नहीं। इस दोष को ही संशय गृहीत मिथ्याज्ञान कहते हैं अथवा ऐसा ज्ञान या सिद्धान्त रच देना जिसको पढ़कर या सुनकर सम्यक्धर्म में संशय उत्पन्न होने लगे उसको संशय गृहीत मिथ्याज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा १२. गृहीत मिथ्याज्ञान का मोहदोष किसे कहते है ?

शान्ति– गृहीत मिथ्याज्ञान रचने पर उसमें वस्तु स्वरूप का वर्णन नहीं हो पाता है और जहाँ पर वस्तु स्वरूप का अभाव हो उस अवस्था को ही मोह कहते हैं। गृहीत मिथ्याज्ञान में यह सब देखने को अवश्य ही मिलता है।

जिज्ञासा १३. गृहीत मिथ्याज्ञान का विपर्यय दोष क्या कहलाता है ?

शान्ति– जिस ज्ञान में धर्म के विपरीत ही कथन किया जाता है उसको गृहीत मिथ्याज्ञान का विपर्यय दोष कहते है। जैसे–अहिंसा से धर्म होता है किन्तु हिंसा में धर्म बता देना यह गृहीत मिथ्याज्ञान का विपर्यय दोष कहलाता है।

जिज्ञासा १४. जो ज्ञान व्यक्ति विशेष के द्वारा रचा जाता है क्या वह सब मिथ्याज्ञान कहलाएगा ?

शान्ति– जी हाँ! धर्म किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा बनाया गया नहीं होता है। धर्म तो अनादि-अनन्तकालीन परम्परा को कहते हैं। यदि किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा बनाया जाएगा तो वह धर्म नहीं कहलाएगा। किसी व्यक्ति विशेष ने कुछ ज्ञान या शास्त्रों की रचना की है तो वह सब मिथ्या की कोटि में ही आएगा।

जिज्ञासा १५. क्या जितने भी शास्त्र पाए जाते हैं वह सब मिथ्या की कोटि में आएंगे ?

शान्ति– जी नहीं! जो शास्त्र सिद्धान्त की परम्पराओं और चली आ रही पूर्व आचार्यों की परम्पराओं के अनुसार रचित किए जाते हैं जिनमें संशय, मोह और विपर्यय यह दोष नहीं पाए जाते हैं और जो अनेकान्त स्याद्वाद का पोषण करने वाले ग्रन्थ होते हैं उन्हें मिथ्या ग्रन्थ नहीं कह सकते वह सब सम्यक् ग्रन्थ कहलाते हैं। हाँ! इतना अवश्य है कि जो संशय, विपर्यय और मोह इन दोषों के साथ व्यक्ति विशेष द्वारा रचे जाते हैं वे सब मिथ्याज्ञान की कोटि वाले ग्रन्थ कहलाते हैं।

जिज्ञासा १६. गृहीत मिथ्याज्ञान के और दोष क्या हो सकते हैं ?

शान्ति– गृहीत मिथ्याज्ञान स्वयं अज्ञान की श्रेणी में आता है, इससे बड़ा दोष और क्या हो सकता है। जो ज्ञान स्वयं भटका हो और अपने अनुयायियों को भटकाता हो वह सम्यग्ज्ञान नहीं हो सकता।

८. मिथ्यात्व त्याग भावना

माया मिथ्या निदान से जो, बिना भेद-विज्ञान।
करें कुतप वह गृहीतमिथ्या, चारित दुख की खान॥
सो मिथ्या-दृग-ज्ञान-चरण तज, सम्यक्ता पाएँ।
'विद्या' धरकर 'सुव्रत' भजकर, शुद्धात्मा ध्याएँ॥

अर्थ– माया, मिथ्या और निदान से सहित तथा भेद-विज्ञान से रहित जो मिथ्यादृष्टि लोग तप करते हैं उसे कुतप कहते हैं और इस विधि के लिए जो आचरण स्वीकार किया जाता है उसको ही गृहीत मिथ्याचारित्र कहते हैं। जो दुख देने वाला होता है। इस विध मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र को त्याग कर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को धारण कर अपनी शुद्ध आत्मा को ध्याना चाहिए ऐसा परम पूज्य आचार्य गुरुवर 'श्री विद्यासागर' जी महाराज के शिष्य तथा इस ग्रन्थ के रचयिता 'सुव्रतसागर' महाराज कहते हैं।

भावार्थ– जो आचरण माया, मिथ्या और निदान के साथ अपनी आत्मा के ज्ञान से रहित होता है वह सभी गृहीत मिथ्याचारित्र कहलाता है। इस दुख से बचें और सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का आचरण करते हुए अपनी आत्मा का ध्यान करें।

जिज्ञासा १. माया किसे कहते हैं?

शान्ति– छल, कपट, प्रपंच, वंचना और निकृति यह सब माया के ही नाम हैं जिसके माध्यम से हमें स्वरूप का ज्ञान नहीं हो पाता है उसको हम माया कहते हैं।

जिज्ञासा २. निदान किसे कहते हैं?

शान्ति– पंचेन्द्रिय के विषय और सांसारिक भोग की अपेक्षा से भविष्य में किसी विशेष पद की आकांक्षा रखना निदान कहलाता है।

जिज्ञासा ३. भेद-विज्ञान किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस ज्ञान के द्वारा आत्मा अलग है, शरीर अलग है, इस प्रकार का ज्ञान होता है, इस प्रकार की अनुभूति होती है, उस ज्ञान को भेद-विज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा ४. भेद-विज्ञान और ज्ञान में कोई अन्तर होता है क्या ?

शान्ति– जी हाँ! किसी वस्तु की जानकारी लेने का नाम ज्ञान है और उसकी अनुभूति का नाम भेद विज्ञान है।

जिज्ञासा ५. कुतप किसे कहते हैं ?

शान्ति– वह त्याग-तपस्या जो मोक्षमार्ग में अथवा सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र में कार्यकारी नहीं होते हैं, उन सब को कुतप कहते हैं।

जिज्ञासा ६. गृहीत मिथ्याचारित्र किसे कहते हैं ?

शान्ति– वह चारित्र जो सम्यक्चारित्र नहीं है जिसे जीव स्वयं अपनी अज्ञानता के वशीभूत होकर स्वीकार करते हैं और जिसका आचरण करके संसार में भटकते रहते हैं उसे गृहीत मिथ्याचारित्र कहते हैं।

जिज्ञासा ७. क्या गृहीत मिथ्याचारित्र दुख देने वाला होता है ?

शान्ति– जी हाँ! गृहीत मिथ्याचारित्र केवल दुख ही नहीं देता बल्कि दुखों का भण्डार देता है, अनन्त संसार देता है। इसलिए इसको त्याग करने का उपदेश इस ग्रन्थ के रचयिता देते हैं।

जिज्ञासा ८. सम्यक्ता किसे कहते हैं ?

शान्ति– सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को सम्यक्ता कहते हैं अर्थात् मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र को त्यागना ही सम्यक्ता है।

जिज्ञासा ९. शुद्ध-आत्मा कैसी होती है ?

शान्ति– जिस आत्मा में राग-द्वेष, क्रोध, मान, माया और लोभ आदि कषायें और पंचेन्द्रियों के विषय के प्रसंग नहीं होते उस आत्मा को शुद्ध-आत्मा कहते हैं।

श्री द्वितीय ढाल का सारांश

जिनशासन के अनुसार मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र ये तीनों मिलकर के प्राणियों को भव-भव तक दुख देते रहते हैं, किन्तु जो सुख की इच्छा रखने वाले लोग होते हैं वह इन्हें त्याग कर और अपनी आत्मा को सुखी बनाते हैं, किन्तु जब तक हम मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र के स्वरूप को नहीं समझेंगे तब तक उन्हें नहीं त्याग पाएंगे। इसलिए इन्हें समझने के लिए हमें इस बात पर विचार करना है कि आखिर तत्त्वों की विपरीत श्रद्धा होती कैसी है। सात प्रकार के तत्त्व, छह प्रकार के द्रव्य आदि-आदि की उल्टी श्रद्धाएँ या विपरीत मान्यताएँ ही मिथ्यादर्शन कहलाती हैं। ऐसी जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा है।

मिथ्यादर्शन दो प्रकार का होता है– गृहीत और अगृहीत। जो अनादिकालीन मिथ्यादर्शन के उदय से मिथ्यादर्शन होता है वह है अगृहीत मिथ्यात्व। जिसमें हम लक्ष्य भूत जीव-आदि तत्त्वों का सम्यग्ज्ञान नहीं कर पाते हैं और शुद्ध-बुद्ध एकत्व अरूपी और अनन्तगुणी चेतना को शरीर तक ही सीमित कर के मानते हैं यही सबसे बड़ा दोष होता है इसको ही जिनशासन में मिथ्यात्व माना है।

जो आत्मा से भिन्न-अभिन्न और अत्यन्त-भिन्न पदार्थ होते हैं। उनको अज्ञानता के कारण अपना मानना यही अजीव तत्त्व के प्रति विपरीत श्रद्धान है। राग-द्वेष करके आस्रव भावों को अपना समझना यह आस्रव तत्त्व का विपरीत श्रद्धान है। द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म आदि के संयोग से शुभाशुभ बन्ध करने को उचित मानना यह बन्ध तत्त्व का विपरीत श्रद्धान है। जिस व्यक्ति को संसार भोग और विषय-कषाय हितैषी लगते हैं और ऐसा ही मानना संवर तत्त्व का विपरीत श्रद्धान है। यदि कोई व्यक्ति गजस्नान के समान निर्जरा करता है और उसी को उचित मानता है तो यह निर्जरा तत्त्व का विपरीत श्रद्धान है, और मोक्ष के योग्य श्रम या पुरुषार्थ नहीं करना यह मोक्ष तत्त्व का विपरीत श्रद्धान है। ऐसा करता हुआ प्राणी मिथ्याज्ञान को ही पाता है और उनके फल पा करके दुखी होता है। इस प्रकार से मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान आदि की सम्मिलित प्रक्रियाओं को मिथ्याचारित्र कहते हैं। यह मिथ्याचारित्र राग-द्वेष से सम्बन्धित पाप क्रियाओं वाला होता है।

गृहीत मिथ्यादर्शन के विषय में यहाँ पर समझाया गया है कि कुदेव, कुगुरु, कुधर्म आदि की जो श्रद्धाएँ होती हैं वह सब गृहीत मिथ्यादर्शन कहलातीं हैं। जो व्यक्ति वस्तु स्वरूप से विचलित हैं और अपने आपको गुरु मानता है वह कुगुरु

कहलाता है। वह हमें संसार सागर में डुबाने के लिए पत्थर की नाव के समान कहा गया है। जो व्यक्ति अस्त्र-शस्त्र, पुत्र-कलत्र, वस्त्र आदि धारण कर अपने आप को भगवान मानता है उसको जिनशासन में कुदेव की संज्ञा दी गई हैए और उनके अनुयायी दोनों ही अनन्त संसारी होते हैं। जिसमें द्रव्य-भाव की हिंसा के दुखद संकल्प होते हैं, उसको कुधर्म कहते हैं और यही गृहीत मिथ्यादर्शन कहलाता है।

इस प्रकार से दो प्रकार का, तीन प्रकार काए, चार प्रकार का, पाँच प्रकार का और तीन सौ त्रेसठ प्रकार का मिथ्यादर्शन होता है। साथ-साथ में संख्यात-असंख्यात और जीवों की अपेक्षा से व भावों की अपेक्षा से अनन्त प्रकार का भी मिथ्यादर्शन होता है।

जिस ज्ञान में संशय विपर्यय और मोह आदि सभी दोष रहते हैं उस ज्ञान को गृहीत मिथ्याज्ञान कहते हैं जो कि मिथ्यात्वी लोगों के द्वारा रचा जाता है। माया, मिथ्या व निदान से सहित होता हुआ और बिना भेद-विज्ञान के जो कुतप किया जाता है अथवा चारित्र धारण किया जाता है उसको गृहीत मिथ्याचारित्र कहते हैं। जो कि दुखों का भण्डार होता है इस प्रकार से इस ढाल में रचनाकार या लेखक कहते हैं कि हमें मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र को त्यागकर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को धारण करते हुए अपनी आत्मविद्या को प्रकट करना चाहिए यही रचनाकार का भाव है। और वह चाहते हैं कि इस प्रकार से हम अपनी आत्मा का ध्यान कर संसार-सागर से पार हों अर्थात् संसार में भटकाने का अगर कोई साधन है तो मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र है तथा यदि संसार से पार लगाने वाला कोई साधन है तो वह है सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र है इसलिए मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचरित्र को त्याग कर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को धारण कर अपनी आत्मा का ध्यान अवश्य करें। इसलिए इस ढाल में मिथ्यादर्शन के स्वरूप को समझाकर उससे बचने का उपाय भी बताया है। और मोक्ष के योग्य श्रम या पुरुषार्थ नहीं करना यह मोक्ष तत्त्व का विपरीत श्रद्धान है। ऐसा करता हुआ प्राणी मिथ्याज्ञान को ही पाता है और उनके फल पा करके दुखी होता है। इस प्रकार से मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान आदि की सम्मिलित प्रक्रियाओं को मिथ्याचारित्र कहते हैं। यह मिथ्याचारित्र राग-द्वेष से सम्बन्धित पाप क्रियाओं वाला होता है।

॥ इस प्रकार श्रीछहढाला की द्वितीय ढाल समाप्त हुई ॥

❑ ❑ ❑

श्री तृतीय ढाल

सम्यग्दर्शन वर्णन

१. मोक्षमार्ग दर्शन

(विद्योदय मात्रिक)

प्रज्ञावान् भव्य जन जिनको, निज-हित भाए।
उन्हें कुशल आचार्य गुरु जी, मोक्ष बताए॥
मोक्ष प्राप्ति पथ सम्यग्दर्शन, ज्ञान आचरण।
धर साधन व्यवहार साध्य फिर, निश्चय चेतन॥

अर्थ— प्रज्ञावान भव्य जीव जो अपने हित का इच्छुक हो, वह कुशल दिगम्बर आचार्य गुरुजी के पास जाकर अपने हित का मार्ग पूछता है तो गुरु महाराज उसे सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र यह मोक्षमार्ग बतलाते हैं। जो कि व्यवहार और निश्चय रूप दो प्रकार का होता है। व्यवहार तो साधन होता है और निश्चय साध्य के रूप में इस चेतना को धारण करने का उपदेश देते हैं।

भावार्थ— अपने हित को चाहने वाला बुद्धिमान समझदार भव्य जीव कुशल आचार्य गुरु महाराज के पास जाकर अपने हित का मार्ग पूछता है, तो गुरु महाराज उसे रत्नत्रय का मार्ग बतलाते हैं। यह रत्नत्रय साधन के रूप में व्यवहार और साध्य के रूप में निश्चयरूप चेतना का गुण होता है।

जिज्ञासा १. प्रज्ञावान किसे कहते हैं?

शान्ति— जो जीव बुद्धिमान है, समझदार है और विवेक का प्रयोग करके हिताहित का निर्णय करता है उसको प्रज्ञावान कहते हैं।

जिज्ञासा २. निज-हित क्या कहलाता है?

शान्ति— संसार में रहते हुए प्राणी हमेशा पर में तत्पर रहता है। यह पर की आकुलता का त्याग कर जब निज कल्याण का विचार किया जाता है तो यही निज-हित कहलाता है।

जिज्ञासा ३. कुशल आचार्य गुरु किन्हें कहते हैं?

शान्ति— जो दिगम्बर जैन मुनि आचार्य पद से विभूषित हैं और मुनि-

आर्यिका, श्रावक-श्राविका अथवा ऋषि-मुनि, यति-अनगार चार प्रकार के संघ को रत्नत्रय या ज्ञान-ध्यान में कुशल रीति से प्रशिक्षित करते हुए संघ को व्यवस्थित करते हैं, उन्हें कुशल आचार्य गुरु कहते हैं।

जिज्ञासा ४. क्या गुरु महाराज से प्रश्न कर सकते हैं?

शान्ति— जी नहीं! मोक्षमार्ग का प्रसंग होने से किसी भी भक्त या शिष्य या अनुयायी को अपने गुरु महाराज से प्रश्न नहीं करना चाहिए।

जिज्ञासा ५. गुरु महाराज से प्रश्न करने में क्या बाधा उत्पन्न होती है?

शान्ति— प्रश्न का तात्पर्य होता है परीक्षा और परीक्षा का तात्पर्य है अविश्वास और अविश्वास का तात्पर्य है सम्यग्दर्शन का अभाव। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि प्रश्न पूछने पर विनय आदि गुण और सम्यग्दर्शन आदि गुणों का नाश हो सकता है।

जिज्ञासा ६. गुरु महाराज से प्रश्न के स्थान पर शंका कर सकते हैं क्या?

शान्ति— जी नहीं! जिनेन्द्र भगवान के वचनों में कभी भी शंका नहीं करना चाहिए। अतः गुरु महाराज से भी शंका नहीं करना चाहिए।

जिज्ञासा ७. प्रश्न नहीं कर सकते और शंका भी नहीं कर सकते तो आप ही बताइए क्या करें?

शान्ति— ना प्रश्न करें ना शंका करें बल्कि अगर आवश्यकता पड़े तो विनय के साथ हाथ जोड़ करके जिनवाणी के विषय में जिज्ञासा रखें।

जिज्ञासा ८. प्रश्न, शंका और जिज्ञासा में क्या अन्तर है?

शान्ति— प्रश्न करने से सम्यग्दर्शन का नाश होने का प्रसंग उपस्थित होगा, शंका करने से सम्यग्दर्शन में दोष लगता है किन्तु जिज्ञासा रखने से न सम्यग्दर्शन नष्ट होता है और न ही उसमें दोष लगता है अपितु सम्यग्दर्शन निर्मल होता है।

जिज्ञासा ९. मोक्ष प्राप्ति का मार्ग क्या है?

शान्ति— मोक्ष प्राप्ति का मार्ग सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र है इसी को हम मोक्षमार्ग कहते हैं।

जिज्ञासा १०. क्या मोक्ष को पाने के लिए और कोई मार्ग नहीं है?

शान्ति– जी नहीं! कभी नहीं! स्वप्न में भी नहीं! मोक्ष प्राप्ति का मार्ग केवल और केवल मोक्षमार्ग ही है अथवा रत्नत्रय ही है।

जिज्ञासा ११. साधन रूप व्यवहार क्या कहलाता है?

शान्ति– साधन रूप रत्नत्रय ही साधन रूप व्यवहार कहलाता है।

जिज्ञासा १२. साधन किसे कहते हैं?

शान्ति– जिन बाहरी निमित्तों से हम अपने कार्य को सिद्ध करते हैं या जिस साधन के अपनाने से साध्य प्राप्त होता है उसको साधन कहते हैं।

जिज्ञासा १२. साधन रूप रत्नत्रय क्या है?

शान्ति– जिस रत्नत्रय में प्रवृत्ति रहती है, बाहरी अवलम्बन रहता है और जिसमें परतंत्र चर्या रहती है उसको साधन रूप रत्नत्रय कहते हैं।

जिज्ञासा १३. साध्य रूप रत्नत्रय क्या कहलाता है?

शान्ति– जो लक्ष्य बनाया गया होता है उसमें लीन होना या उसको पा लेना ही साध्य रूप रत्नत्रय कहलाता है। इसको ही निश्चय रत्नत्रय कहते हैं।

जिज्ञासा १४. साधन रूप रत्नत्रय के अन्य नाम और भी हैं क्या?

शान्ति– जी हाँ! इसको ही सरागसंयम, प्रवृत्तिदशा, प्रमत्तदशा या भेद-रत्नत्रय भी कहते हैं।

जिज्ञासा १५. साध्य रूप रत्नत्रय के अन्य नाम और क्या हैं?

शान्ति– वीतराग सम्यग्दर्शन, अप्रमत्तदशा, निर्वृत्तिदशा और अभेद-रत्नत्रय आदि भी इसके ही नाम हैं।

जिज्ञासा १६. निश्चय चेतन किसे कहते हैं।

शान्ति– जो चेतना निश्चय रत्नत्रय से विभूषित होती है उसको ही निश्चय चेतन कहते हैं।

२. चेतना के प्रकार

शुद्ध अशुद्ध चेतना दो विध, शास्त्र बताएँ।
ज्ञान चेतना शुद्ध सिद्ध वा, अर्हत पाएँ॥
ज्ञाता द्रष्टा शुद्ध चेतना, परमातम हैं।
अशुद्ध चेतना दो प्रकार के, जीवातम हैं॥

अर्थ– जिन सिद्धान्तों के अनुसार चेतना दो प्रकार की होती है–शुद्ध चेतना और अशुद्ध चेतना। सिद्ध परमेष्ठी पूर्ण शुद्ध चेतना वाले होते हैं किन्तु अरिहन्त परमेष्ठी शुद्ध चेतना वाले होकर भी पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं होते और इनको ही ज्ञान चेतना कहते हैं। ये ज्ञाता दृष्टा परमात्मा कहलाते हैं अर्थात् शुद्ध चेतना का नाम ही ज्ञान चेतना है और इसके साथ-साथ अशुद्ध चेतना भी दो प्रकार की होती है ऐसा लेखक का कहना है।

भावार्थ– चेतना के शुद्ध और अशुद्ध दो प्रकार बताते हुए यहाँ पर यह कहा जा रहा है कि शुद्ध चेतना अरिहन्त और सिद्ध परमेष्ठी की होती है जो कि ज्ञाता-दृष्टा होते हैं अशुद्ध चेतना भी दो प्रकार की होती है इस प्रकार का इस छन्द में उल्लेख है।

जिज्ञासा १. चेतना कितने प्रकार की होती है?

शान्ति– चेतना दो प्रकार की होती है– १. शुद्ध चेतना और २. अशुद्ध चेतना।

जिज्ञासा २. शुद्ध चेतना किसे कहते हैं?

शान्ति– जिन जीवों के अष्ट कर्म नष्ट हो चुके हैं और जो पूर्ण रूप से शुद्ध होकर सिद्धालय में विराजमान हो चुके हैं ऐसे सिद्ध परमेष्ठियों को शुद्ध चेतना वाले जीव कहते हैं।

जिज्ञासा ३. अरिहन्त परमेष्ठी कौन सी चेतना वाले जीव कहलाते हैं?

शान्ति– अरिहन्त परमेष्ठी को भी शुद्ध चेतना वाले जीव गौण रूप से कहा जाता है क्योंकि अरिहन्तों का सिद्ध होना तो निश्चित है किन्तु अभी पूर्ण रूप से वह शुद्ध नहीं हुए हैं।

जिज्ञासा ४. अरिहन्त और सिद्ध शुद्ध चेतना वाले कहलाते हैं ऐसा आपने किस प्रमाण से कहा?

शान्ति– अरे भाई! परम पूज्य आचार्य श्री कुन्दकुन्द भगवान् कहते हैं कि संसार में चेतना के तीन प्रकार हैं–कर्मफल-चेतना, कर्म-चेतना और ज्ञान-चेतना। (पं.का.-३९)

जिज्ञासा ५. फिर आपने चेतना के दो प्रकार क्यों बताए ?

शान्ति– यहाँ पर शुद्ध-अशुद्ध के प्रकार से दो प्रकार की बताई है।

जिज्ञासा ६. परमात्मा किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव अरिहन्त और सिद्ध परमेष्ठी के पद पर विराजमान हैं उन जीवों को या उन परमेष्ठियों को परमात्मा कहते हैं।

जिज्ञासा ७. परमात्मा का स्वरूप कैसा होता है ?

शान्ति– जो जीव वीतराग सर्वज्ञ और हितोपदेशी होते हुए और अपनी आत्मा के ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में लीन रहते हैं उन्हें परमात्मा कहते हैं।

जिज्ञासा ८. अशुद्ध चेतना किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव अभी न तो पूर्ण रूप से शुद्ध हैं न ही आंशिक रूप से शुद्ध हुए हैं वह सभी अशुद्ध चेतना वाले जीव कहलाते हैं।

जिज्ञासा ९. अगर कोई जीव शुद्ध होने के रास्ते पर चल रहा है तो क्या उसे हम शुद्ध चेतना नहीं कह सकते ?

शान्ति– जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! क्योंकि मार्ग को लक्ष्य समझ लेना यह हमारी बहुत बड़ी भूल मानी जाएगी इसलिए शुद्ध चेतना बनने के मार्ग पर चलने वाले सभी साधक अशुद्ध कहलाएंगे।

जिज्ञासा १०. अशुद्ध चेतना कितने प्रकार की होती है ?

शान्ति– अशुद्ध चेतना दो प्रकार की होती है इसका वर्णन आगे किया जाने वाला है।

३. चेतना के अन्य प्रकार

प्रथम कर्मफल थावर सब हों, मिथ्यादृष्टि।
कर्म चेतना त्रस पाते हैं, दोनों दृष्टि॥
हर मिथ्यादृष्टि दुख सहते, हैं बहिरातम।
अन्तर आतम त्रिविध जघन्य व, मध्यम उत्तम॥

अर्थ— अशुद्ध चेतना के दो प्रकार बताते हुए यह कहा जा रहा है कि प्रथम कर्मफल-चेतना सभी स्थावर जीवों की होती है जो कि सभी मिथ्यादृष्टि होते हैं। दूसरा प्रकार कर्म चेतना का है जो सभी त्रस पाते हैं इन त्रस जीवों में सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि दोनों भेद पाए जाते हैं जो मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं वह अनन्त संसारी और बहिरातम होकर दुख सहते रहते हैं किन्तु जो अन्तरात्मा होते हैं वह जीव तीन प्रकार के होते हैं–जघन्य, मध्यम और उत्तम।

भावार्थ— अशुद्ध चेतना के कर्मफल-चेतना और कर्मचेतना यह दो प्रकार बताते हुए यहाँ पर बहिरातम और अन्तरातम का कथन करते हुए उनके प्रकार भी बताए गए हैं।

जिज्ञासा १. कर्मफल चेतना किसे कहते हैं?

शान्ति— जिन जीवों को कर्म का फल सहन करते हुए जीवन यापन करना पड़ता है किन्तु वह किसी तरह का पुरुषार्थ करने में सक्षम नहीं होते हैं ऐसे जीवों की कर्मफल चेतना होती है।

जिज्ञासा २. कर्मफल-चेतना कौन-कौन से जीवों की होती है?

शान्ति— कर्मफल-चेतना स्थावर जीवों की होती है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पतिकायिक इन पाँचों स्थावर जीवों की कर्मफल चेतना ही होती है।

जिज्ञासा ३. कर्मफल चेतना वाले जीव सभी मिथ्यादृष्टि होते हैं क्या?

शान्ति— जी हाँ! कर्मफल-चेतना वाले सभी स्थावर जीव मिथ्यादृष्टि ही होते हैं क्योंकि इनके पास अपने मिथ्यादर्शन को समाप्त करने की न तो पर्याय होती है और न ही वह पुरुषार्थ कर सकते हैं।

जिज्ञासा ४. कर्म चेतना किसे कहते हैं?

शान्ति— जो जीव कर्मों का फल सहन करते हुए पुरुषार्थ करने में भी सक्षम होते हैं उन जीवों की कर्मचेतना होती है।

जिज्ञासा ५. कर्म चेतना किन-किन जीवों की होती है?

शान्ति— कर्म चेतना त्रस जीवों की होती है।

जिज्ञासा ६. त्रस किसे कहते हैं?

शान्ति— अरे! भाई पहले भी त्रस की परिभाषाएँ बताईं जा चुकी हैं। आपको याद रखना चाहिए फिर भी आपकी स्मृति के लिए यहाँ पर पुनः बता देते हैं कि जो जीव स्थान से स्थानांतरण अर्थात् गति करने की क्षमता वाले होते हैं अथवा जिन्हें त्रस नामकर्म का उदय होता है उन्हें त्रस कहते हैं।

जिज्ञासा ७. क्या सभी त्रस जीव मिथ्यादृष्टि होते हैं?

शान्ति— जी नहीं! त्रस जीव सम्यग्दृष्टि भी हो सकते हैं और मिथ्यादृष्टि भी हो सकते हैं और इनके मिले-जुले रूप अर्थात् मिश्ररूप में सम्यक्-मिथ्यादृष्टि भी हो सकते हैं।

जिज्ञासा ८. मिथ्यादृष्टि तो आपने समझा दिया सम्यग्दृष्टि भी समझा दिया किन्तु सम्यक्-मिथ्यादृष्टि जीव किसे कहते हैं, यह अभी तक समझ में नहीं आया कृपया समझाएँ?

शान्ति— जो जीव मिथ्यादृष्टि भी नहीं है और सम्यग्दृष्टि भी नहीं है किन्तु दोनों के मिश्र भाव जैसे हैं उन्हें सम्यक्-मिथ्यादृष्टि जीव कहते हैं।

जिज्ञासा ९. सम्यक्-मिथ्यादृष्टि जीव का कोई उदाहरण देकर स्पष्ट करने की कृपा करें?

शान्ति— जैसे दही का स्वभाव पृथक् होता है और गुड़ का स्वभाव पृथक् होता है किन्तु दोनों को मिलाने पर न ही दही का स्वाद आता है न ही गुड़ का स्वाद आता है एक तीसरा नया स्वाद ही आने लगता है अथवा चूने का और हल्दी का मिश्रण करने पर न चूने का रंग शेष बचता है न ही हल्दी का किन्तु एक नया रंग उपस्थित हो जाता है इसी तरह से सम्यक्-मिथ्यादृष्टि का भी हाल है।

जिज्ञासा १०. सम्यक्-मिथ्यादृष्टि जीव के क्या लक्षण या चिह्न होते हैं?

शान्ति— सम्यक्-मिथ्यादृष्टि जीव न तो देव में, न ही कुदेव में अन्तर कर पाता है किन्तु दोनों को एक समान स्वीकार करता हुआ सबका आदर, सम्मान और पूज्यता का भाव रखता है।

जिज्ञासा ११. मिथ्यादृष्टि जीवों को और क्या कहते हैं?

शान्ति— मिथ्यादृष्टि जीवों को बहिरात्मा भी कहते हैं।

जिज्ञासा १२. आत्मा कितने प्रकार की होती हैं?

शान्ति— आत्मा तीन प्रकार की होती हैं–१. बहिरात्मा २. अन्तरात्मा और ३. परमात्मा।

जिज्ञासा १३. बहिरात्मा किसे कहते हैं?

शान्ति— जो जीव शरीर और अन्य बाह्य पदार्थों को ही अपनी आत्मा मानते हैं किन्तु अपने शुद्धात्म तत्त्व की तरफ उनका बिल्कुल भी ध्यान नहीं होता है उनको बहिरात्मा कहते हैं और यही दुख का कारण होता है।

जिज्ञासा १४. परमात्मा किसे कहते हैं?

शान्ति— अरिहन्त और सिद्ध परमेष्ठी जीवों को परमात्मा कहते हैं।

जिज्ञासा १५. क्या परमात्मा के भी प्रकार होते हैं?

शान्ति— जी हाँ! परमात्मा दो प्रकार की होती है–
१. निकल परमात्मा और २. सकल परमात्मा।

जिज्ञासा १६. निकल परमात्मा किसे कहते हैं?

शान्ति— 'कल' का तात्पर्य होता है शरीर और 'न' का तात्पर्य होता है निकल जाना अर्थात् जिन परमेष्ठियों का शरीर, कर्म आदि आत्मा से पृथक् हो गए हैं उन्हें निकल परमात्मा कहते हैं।

जिज्ञासा १७. सकल परमात्मा किसे कहते हैं?

शान्ति— जिन परमेष्ठियों का शरीर कर्म अभी पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुआ है उन्हें सकल परमात्मा कहते हैं अर्थात् शरीर के साथ रहने वाले परमात्माओं को सकल परमात्मा कहते हैं।

जिज्ञासा १८. इस युक्ति के अनुसार तो आचार्य परमेष्ठी, उपाध्याय परमेष्ठी और साधु परमेष्ठी भी सकल परमात्मा होंगे ?

शान्ति– जी नहीं! आचार्य परमेष्ठी, उपाध्याय परमेष्ठी और साधु परमेष्ठी परमात्मा की श्रेणी में ही नहीं आते।

जिज्ञासा १९. अन्तरात्मा किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव अपने बहिरात्मा स्वरूप का त्याग कर चुके हैं किन्तु अभी परमात्मा स्वरूप को प्राप्त नहीं हुए हैं जो अभी मार्ग में है और साधनारत हैं, उन सब जीवों को अन्तरात्मा कहते हैं।

जिज्ञासा २०. अन्तरात्मा कितने प्रकार के होते हैं ?

शान्ति– अन्तरात्मा तीन प्रकार के होते हैं–

१. जघन्य अन्तरात्माए २. मध्यम अन्तरात्मा और ३. उत्तम अन्तरात्मा।

जिज्ञासा २१. जघन्य, मध्यम और उत्तम अन्तरात्मा को विस्तार से समझाने की कृपा करें ?

शान्ति– इनका विस्तार से वर्णन हम आगे करने वाले हैं कृपया थोड़ा सा धैर्य धारण करें और तत्त्व की जिज्ञासा को समझने की चेष्टा भी करें।

४. चेतना के स्वरूप

जघन्य मध्यम व्यवहारी जो, मिथ्या हर के।
तत्त्व स्थान नवदेव आदि पर, श्रद्धा करके॥
अविरत सम्यग्दृष्टि जघन्य, अन्तर-आतम।
देशव्रती वा प्रवृत्ति वाले, मुनि हैं मध्यम॥

अर्थ— मध्यम और जघन्य अन्तरात्मा बतलाते हुए कहा जा रहा है कि जो जीव मिथ्यादर्शन को त्यागकर और क्रिया रूप धर्म को स्वीकार करते हैं वह व्यवहारी जघन्य अन्तरात्मा और मध्यम अन्तरात्मा कहलाते हैं। जो गुणस्थान, मार्गणा स्थान, नवदेवता और तत्त्व आदि पर श्रद्धा करते हुए योग्य आत्मस्वरूप धारण करते हैं। जिनमें सम्यग्दृष्टि जीव जो किसी प्रकार के व्रतों को स्वीकार नहीं करते वे अविरत सम्यग्दृष्टि होते हैं, वह जघन्य अन्तरात्मा कहलाते हैं। लेकिन जो अणुव्रतों को लेकर देशव्रती बनते हैं और महाव्रतों को लेकर जो प्रवृत्ति वाले मुनि होते हैं उन सबको मध्यम अन्तरात्मा की श्रेणी में रखा गया है।

भावार्थ— अन्तरात्मा के भेद में जघन्य और मध्यम अन्तरात्मा के स्वरूप को बताते हुए कौन-कौन से जीव कौन-कौन से आत्मा होते हैं, ऐसा कथन किया गया है।

जिज्ञासा १. जघन्य अन्तरात्मा किसे कहते हैं?

शान्ति— जो जीव मिथ्यादर्शन का त्याग करके तत्त्व, गुणस्थान, मार्गणास्थान और नवदेवता आदि पर श्रद्धा करते हैं और क्रिया रूप धर्म का पालन करते हैं उन्हें जघन्य अन्तरात्मा कहते हैं।

जिज्ञासा २. मध्यम अन्तरात्मा किसे कहते हैं?

शान्ति— जो जीव जघन्य अन्तरात्मा बनने के उपरांत अणुव्रतों को अथवा महाव्रतों को धारण करते हैं किन्तु निर्वृत्ति वाले धर्म को स्वीकार नहीं करने पर प्रवृत्ति रूप धर्म को करते रहते हैं उन्हें मध्यम अन्तरात्मा कहते हैं।

जिज्ञासा ३. व्यवहारी अन्तरात्मा किसे कहते हैं?

शान्ति— धर्म पथ पर चलने वाले श्रावक या साधक क्रिया या प्रवृत्तिरूप

धर्म करते हैं किन्तु निर्वृत्तिरूप धर्म करने में असमर्थ हैं अथवा गुप्ति से रहित व्यवहारी अन्तरात्मा कहलाते हैं।

जिज्ञासा ४. तत्त्व आप बता चुके हैं किन्तु यहाँ पर स्थान कहने का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति— यहाँ पर स्थान कहने का तात्पर्य है गुणस्थान और मार्गणास्थान।

जिज्ञासा ५. गुणस्थान किसे कहते हैं ?

शान्ति— मोह और योग के निमित्त से संसारी प्राणियों में होने वाले परिणामों को गुणस्थान कहते हैं।

जिज्ञासा ६. गुणस्थान कितने होते हैं ?

शान्ति— गुणस्थान १४ होते हैं–

१. मिथ्यात्व गुणस्थान २. सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान ३. मिश्र गुणस्थान ४ अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान ५. देशव्रत गुणस्थान ६. प्रमत्तविरत गुणस्थान ७. अप्रमतविरत गुणस्थान ८. अपूर्व-करण गुणस्थान ९. अनिवृत्तिकरण गुणस्थान १०. सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान ११. उपशांतमोह गुणस्थान १२. क्षीणमोह गुणस्थान १३. सयोगकेवली गुणस्थान और १४. अयोगकेवली गुणस्थान।

जिज्ञासा ७. मार्गणा स्थान किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिन तरीकों से या जिनस्थानों के माध्यम से या जिन विधियों के माध्यम से जीवों की खोज की जाती है अथवा जीवों के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त की जाती है उन्हें मार्गणा स्थान कहते हैं।

जिज्ञासा ८. मार्गणा स्थान कितने होते हैं ?

शान्ति— मार्गणा स्थान १४ होते हैं–

१. गति २. इन्द्रिय ३. काय ४. योग ५. वेद ६. कषाय ७. ज्ञान ८. संयम ९. दर्शन १०. लेश्या ११. भव्य १२. सम्यक् १३. संज्ञी और १४ आहारक।

जिज्ञासा ९. नवदेवता क्या कहलाते हैं ?

शान्ति— पंच परमेष्ठी और जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और जिन-चैत्यालय यह सब मिलकर नवदेवता कहलाते हैं अर्थात् अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम,

जिनचैत्य और जिनचैत्यालय इनको नवदेवता कहते हैं।

जिज्ञासा १०. तत्त्व स्थान और नवदेवता तो समझ में आया किन्तु यहाँ पर आदि कहने का क्या तात्पर्य है ?

शान्ति– जिनशासन में श्रुत का अंत नहीं है। उन सब सिद्धान्तों पर श्रद्धा रखना तथा जो भी सूक्ष्म तत्त्व हैं जिन पर हमारी श्रद्धा डगमगा जाती है उन पर भी श्रद्धा रखने वाला जीव व्यवहारी सम्यग्दृष्टि कहलाता है।

जिज्ञासा ११. अविरत सम्यग्दृष्टि जीव किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस संसारी प्राणी ने मिथ्यादर्शन का त्याग तो कर दिया है और जिनशासन पर श्रद्धा भी रखता है किन्तु जिसने अपने जीवन में अभी तक एक भी व्रत का पालन करना प्रारम्भ नहीं किया है उसे अविरत सम्यग्दृष्टि कहते हैं। यह जीव जघन्य अन्तरात्म कहलाते हैं।

जिज्ञासा १२. अविरत सम्यग्दृष्टि को जघन्य अन्तरात्मा कहने का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति– अविरत सम्यग्दृष्टि को जघन्य अन्तरात्मा कहने का तात्पर्य यह है कि इन जीवों से मोक्षमार्ग का प्रारम्भ होता है अर्थात् जैसे शिक्षा में नर्सरी होती है ऐसे ही मोक्ष मार्ग का प्रारम्भ अविरत सम्यग्दृष्टि जीवों से होता है।

जिज्ञासा १३. देशव्रती जीव किन्हें कहते हैं ?

शान्ति– जो जीव मोक्ष मार्ग में आकर अविरत सम्यग्दृष्टि बनकर और पाँच अणुव्रत और सात शील व्रतों को स्वीकार करते हैं किन्तु मुनि बनने में असमर्थ हैं ऐसे उन मोक्षमार्ग के साधकों को देशव्रती कहते हैं।

जिज्ञासा १४. प्रवृत्ति वाले मुनि किन्हें कहते हैं ?

शान्ति– जो मुनि अपने व्रतों को निर्दोष पालते हैं किन्तु कायोत्सर्ग मुद्रा या गुप्ति आदि में लीन नहीं रहते हैं तब तक उन्हें प्रवृत्ति वाले मुनि कहते हैं।

जिज्ञासा १४. क्या मुनियों के भी बहुत सारे प्रकार होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! उनका वर्णन आगे करेंगे।

५. चेतना के तीन प्रकार

पर के त्यागी शुद्ध-उपयोगी, मुनि हैं उत्तम।
सो हे! आतम तज! बहिरातम, भज! परमातम॥
अन्तर-आतम बनने चर्या, सराग धारो।
सम्यग्दर्शन त्रय प्रकार धर, चरण निखारो॥

अर्थ— चेतन-अचेतन रूपी समस्त पर पदार्थों का तथा भोग प्रवृत्ति त्याग कर एवं समस्त प्रकार के, पर पदार्थों का उपभोग इन समस्त विकारी भावों का त्याग करके जो मुनिराज अपने शुद्धात्म तत्त्व में लीन रहते हैं अर्थात् जो शुद्ध-उपयोगी मुनि है वह उत्तम अन्तरात्मा कहलाते हैं इसलिए हे आत्मन्! बहिरात्मा का त्याग कर परमात्मा की स्तुति करते हुए अन्तरात्मा बनने के लिए सराग क्रियाओं को धारण करें तथा तीन तरह का सम्यग्दर्शन प्रकट कर अपने चारित्र में निखार लाएँ।

भावार्थ— उत्तम अन्तरात्मा जो की शुद्ध-उपयोगी मुनि कहलाते हैं इसलिए बहिरात्मा का त्याग करके परमात्मा का भजन करते हुए अपनी अन्तरात्मा को प्राप्त करने के लिए अपने सरागचरित्र को धारण करो तथा तीन प्रकार के सम्यग्दर्शन से अपने चारित्र में निखार लाने का प्रयास करो।

जिज्ञासा १. शुद्ध-उपयोगी मुनि क्या कहलाते हैं?

शान्ति— जो मुनि अट्ठाईस मूलगुण के पालक हैं। किन्तु जब समस्त भोग-उपभोग, जड़-चेतन सम्बन्धी पर पदार्थों का त्याग करके तीन गुप्ति में लीन हो जाते हैं ऐसे उन ध्यानस्थ मुनि को शुद्ध-उपयोगी मुनि कहते हैं।

जिज्ञासा २. क्या प्रवृत्ति वाले मुनि शुद्ध-उपयोगी नहीं हो सकते?

शान्ति— जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! क्योंकि प्रवृत्ति करते समय किसी भी दिगम्बर साधु को शुद्ध-उपयोग नहीं हो सकता।

जिज्ञासा ३. उपयोग कितने प्रकार के होते हैं?

शान्ति— उपयोग दो प्रकार के होते हैं-
१. अशुद्ध-उपयोग और २. शुद्ध-उपयोग।

जिज्ञासा ४. अशुद्ध-उपयोग किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिस उपयोग से संसारी प्राणी अपने आत्म-ध्यान से दूर रहते हैं उस उपयोग को अशुद्ध-उपयोग कहते हैं।

जिज्ञासा ५. अशुद्ध-उपयोग कितने प्रकार का होता है ?

शान्ति— अशुद्ध-उपयोग दो प्रकार का होता है—
१. अशुभ-उपयोग और २. शुभ-उपयोग।

जिज्ञासा ६. अशुभ-उपयोग किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिस उपयोग से धर्म रूप परिणाम आत्मा से प्रकट नहीं हो सकते उस उपयोग को अशुभ-उपयोग कहते हैं।

जिज्ञासा ७. यह अशुभ-उपयोग किन-किन जीवों को होता है ?

शान्ति— अशुभ-उपयोग प्रथम गुणस्थान द्वितीय गुणस्थान और तृतीय गुणस्थान सम्बन्धी जीवों को होता है अर्थात् मिथ्यादृष्टि सासादन सम्यग्दृष्टि और मिश्र गुणस्थान वाले जीव सभी अशुभ-उपयोग वाले होते हैं।

जिज्ञासा ८. शुभ-उपयोग किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिन परिणामों के माध्यम से संसारी जीव अपना धर्मध्यान करते हैं किन्तु आत्म ध्यान में लीन नहीं हो पाते उन परिणामों को शुभ-उपयोग कहते हैं।

जिज्ञासा ९. शुभ-उपयोग किन किन जीवों को होता है ?

शान्ति— चतुर्थ गुणस्थान, पंचम गुणस्थान और षष्टम गुणस्थान एवं प्रवृत्ति मूलक सप्तम गुणस्थान तक जीवों को शुभ-उपयोग होता है अर्थात् अविरत सम्यग्दृष्टि देशव्रती और प्रवृत्ति वाले मुनियों को शुभ-उपयोग होता है।

जिज्ञासा १०. योग किसे कहते हैं ?

शान्ति— आत्मा का मन, वचन या काय की सहायता लेकर कार्य करने का नाम योग है या मन, वचन और काय की प्रवृत्ति का नाम योग है।

जिज्ञासा ११. प्रयोग किसे कहते हैं ?

शान्ति– आत्मा मन, वचन या काय जिस साधन से अपना कार्य करती है उस साधन की इस विधि को प्रयोग कहते हैं।

जिज्ञासा १२. उपयोग किसे कहते हैं?

शान्ति– आत्मा जिस लक्षण या चिह्न के द्वारा पहचानी जाती है, उस लक्षण को उपयोग कहते हैं।

जिज्ञासा १३. उपयोग कितने प्रकार के होते हैं?

शान्ति– मूल रूप से उपयोग दो प्रकार के होते हैं–
१. दर्शन-उपयोग और २. ज्ञान-उपयोग।
इनका और विस्तार अन्य ग्रन्थों से समझा जा सकता है।

जिज्ञासा १४. योग, प्रयोग और उपयोग इनमें क्या अन्तर है?

शान्ति– मन-वचन-काय की प्रवृत्ति का नाम योग है, इनकी क्रियाओं को ही प्रयोग कहते हैं और आत्मा के लक्षण का नाम उपयोग है।

जिज्ञासा १५. क्या उपयोग और प्रयोग में भेद भिन्नता है?

शान्ति– जी हाँ! कभी-कभी प्रयोग अशुभ होने के बाद भी उपयोग शुभ हो जाता है और कभी-कभी प्रयोग शुभ होने पर भी उपयोग अशुभ हो जाता है। जैसे–रावण की साधना राम को मारने की है अतः प्रयोग शुभ है लेकिन उपयोग अशुभ है और राम का धनुष-बाण लेना प्रयोग अशुभ है लेकिन उपयोग शुभ है क्योंकि रावण को राम मारना नहीं चाहते बल्कि सही रास्ते पर लाने का भाव रखते हैं।

जिज्ञासा १५. सराग चर्या क्या कहलाती है?

शान्ति– जिस प्रवृत्ति में या जिस चारित्र में या जिस क्रियाकलाप में पर का सहारा लिया जाता है या जो राग सहित आचरण होता है उसको सराग चर्या कहते हैं।

जिज्ञासा १५. सम्यग्दर्शन तीन प्रकार का कौन-कौन सा होता है?

शान्ति– सम्यग्दर्शन के कई प्रकार हैं किन्तु तीन प्रकार तो विशेष रूप से बताए गए हैं। सामान्य सम्यग्दर्शन तो निसर्गज सम्यग्दर्शन और अधिगम सम्यग्दर्शन आदि-आदि होते हैं।

जिज्ञासा १६. यहाँ पर फिर सम्यग्दर्शन के तीन प्रकार कौन-कौन से हैं?

शान्ति– यहाँ पर सम्यग्दर्शन के तीन प्रकार ये हैं–उपशम-सम्यग्दर्शन, क्षयोपशम-सम्यग्दर्शन और क्षायिक-सम्यग्दर्शन।

जिज्ञासा १७. उपशम-सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं?

शान्ति– जो जीव अनादिकाल से तो मिथ्यादृष्टि था किन्तु छह करणों से पाँच लब्धियों का निमित्त पाकर जब पहली बार सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है तो उसको उपशम सम्यग्दर्शन कहते हैं। इसको ही प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन कहते हैं।

जिज्ञासा १८. उपशम-सम्यग्दर्शन की और क्या विशेषता होती है?

शान्ति– उपशम-सम्यग्दर्शन के बिना कोई अन्य सम्यग्दर्शन कभी भी नहीं हो सकता। इस सम्यग्दर्शन में अनादि-मिथ्यादृष्टि पहली बार सम्यग्दर्शन को प्राप्त करता है और अनन्तानुबन्धी सम्बन्धी चार प्रकृतियों और एक मिथ्यादर्शन प्रकृति इन पाँच अथवा सात (सम्यक्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति सहित) आदि को उपशमित कर आत्मा के निर्मल भाव को प्राप्त होता है।

जिज्ञासा १९. उपशम-सम्यग्दर्शन छूटता क्यों हैं?

शान्ति– स्वभाव से। प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन की अवधि या काल सीमा मात्र अन्तर्मुहूर्त होती है या तो यहाँ से मिथ्यादर्शन को प्राप्त होता है या क्षयोपशम या क्षायिकसम्यग्दर्शन को प्राप्त होने से उपशम-सम्यग्दर्शन छूट जाता है।

जिज्ञासा २०. क्षयोपशम सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं?

शान्ति– आत्मा के जिस निर्मल भाव से मिथ्यादर्शन का नाश तो होता है किन्तु सम्यग्दर्शन होने पर चल, मल और अगाढ़ दोष लगते रहते हैं उसे क्षयोपशम सम्यग्दर्शन कहते हैं।

जिज्ञासा २१. क्षयोपशम सम्यग्दर्शन की और क्या विशेषता होती है?

शान्ति– तीन प्रकार के सम्यग्दर्शन में सबसे कमजोर सम्यग्दर्शन अगर कोई होता है तो वह क्षयोपशम सम्यग्दर्शन होता है। शास्त्रों में इसके लिए बहुत बूढ़े व्यक्ति की डगमगाती हुई लाठी की उपमा

दी गई है।

जिज्ञासा २२. क्षायिक सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस सम्यग्दर्शन में अनन्तानुबन्धी सम्बन्धी चार मिथ्यात्व, सम्यक्-मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति का नाश होने पर जो आत्मा का निर्मल भाव उत्पन्न होता है उसको क्षायिक सम्यग्दर्शन कहते हैं।

जिज्ञासा २३. क्या तीनों प्रकार के सम्यग्दर्शन आत्मा में से प्रकट हो सकते हैं?

शान्ति– जी हाँ! तीनों प्रकार के सम्यग्दर्शन आत्मा में से प्रकट हो सकते हैं। इसके बिना मुक्ति का कोई मार्ग नहीं है।

जिज्ञासा २४. क्या सम्यग्दर्शन के बिना आचरण की शुद्धता नहीं होती है?

शान्ति– जी हाँ! बिना सम्यग्दर्शन के न ज्ञान में सम्यक्पना आता है, न ही आचरण में। अतः सम्यग्दर्शन को प्राप्त कर सम्यग्ज्ञान के हो जाने पर आचरण की शुद्धि करना ही चाहिए।

६. सम्यग्दर्शन के साधन

शिरोधार्य जिन-आज्ञा कर लें, गुरूपासना।
छः सामान्य विशेष गुणों से, जीव समझना॥
अजीव धर्म अधर्म काल नभ, पुद्गल जग में।
पुद्गल रूपी शेष अरूपी, चतुर भंग में॥

अर्थ— सम्यग्दर्शन की विशेषताओं के विषय में बताते हुए रचनाकार कहते हैं कि जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा धारण करें, निर्ग्रंथ गुरुओं की उपासना करें और सामान्य विशेष गुणों के माध्यम से जीव आदि तत्त्वों को समझें। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल आदि को भी समझने का प्रयास करें। इन सभी जीव आदि तत्त्वों में मात्र पुद्गल ही रूपी होता है शेष सब अरूपी होते हैं तथा हेय, उपादेय, ज्ञेय और ध्येय इन व्यवस्थाओं को भी सम्यग्दर्शन को पुष्ट करने के लिए समझना चाहिए।

भावार्थ— जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा का पालन करते हुए और गुरु की उपासना करते हुए जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल आदि द्रव्यों को सामान्य और विशेष गुणों के द्वारा समझना चाहिए परन्तु इतनी विशेषता अवश्य है कि पुद्गल रूपी होता है शेष सब अरूपी होते हैं, हेय, उपादेय, ज्ञेय और ध्येय आदि चतुर भंग में।

जिज्ञासा १. जिन-आज्ञा क्या कहलाती है?

शान्ति— जिनेन्द्र भगवान के जो उपदेश होते हैं जिनमें मुनि-धर्म और श्रावक-धर्म के पालन करने के लिए कुछ निर्देश दिए जाते हैं उसी उपदेश को आज्ञा मानकर पालन करना ही जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा होती है।

जिज्ञासा २. जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा बड़ी होती है या गुरु आज्ञा?

शान्ति— गुरु आज्ञा और जिनेन्द्र भगवान् की आज्ञा दोनों में से जिनेन्द्र भगवान् की आज्ञा बड़ी होती है।

जिज्ञासा ३. हमें जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा और गुरु आज्ञा दोनों में से किस का पालन करना चाहिए?

शान्ति– गुरु महाराज कभी भी जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करते इसलिए हमें गुरु आज्ञा का पालन करना चाहिए और जिन आज्ञा भी महत्वपूर्ण है।

जिज्ञासा ४. अगर कभी गुरु महाराज जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा का पालन ना करें और अपनी आज्ञा का पालन करवाना चाहें तो उस स्थिति में हमें क्या करना चाहिए ?

शान्ति– शास्त्रों का ऐसा उल्लेख है कि जब तक हमें अपने अज्ञान का ज्ञान नहीं होता तब तक गुरु आज्ञा के रूप में उसे पालन करने पर दोष नहीं लगता लेकिन अपने दोषों का ज्ञान होने पर और किसी के द्वारा बताए जाने पर भी हम उन दोषों को छोड़ना नहीं चाहते हैं तो उस समय हमारा धर्म नष्ट होने का प्रसंग उपस्थित होता है अतः हमें उस समय गुरु आज्ञा से बड़ी जिन-आज्ञा का पालन करना चाहिए गुरु का विकल्प छोड़ देना चाहिए। (ल.सा.)

जिज्ञासा ५. गुरु आज्ञा के अभाव में क्या जिनेन्द्र भगवान् की आज्ञा हम समझ पाएंगे ?

शान्ति– जी नहीं! अगर हमें गुरु महाराज का सान्निध्य, ज्ञान, उपदेश, चरण-शरण न मिले तो हम जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा को समझने में असमर्थ रहेंगे इसलिए गुरु-आज्ञा का पालन करते हुए जिनेन्द्र भगवान् की आज्ञा शिरोधार्य करना चाहिए।

जिज्ञासा ६. अगर गुरु ही जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा का पालन न करें तो फिर हमें क्या करना चाहिए ?

शान्ति– ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि गुरु महाराज जिनेन्द्र भगवान् की आज्ञा का पालन न करें। गुरु महाराज तो करते ही हैं और शिष्य अथवा भक्त मण्डली से करवाते भी हैं। जब तक हमें इस विषय का पूर्ण ज्ञान न हो जाए कि गुरु महाराज जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा का पालन नहीं कर रहे हैं तब तक उसके विषय में हम टीका टिप्पणी करने से बचें। बचना ही चाहिए।

जिज्ञासा ७. गुरु-उपासना क्या कहलाती है ?

शान्ति– गुरुओं की सेवा करना, उनकी पूजा करना और उनकी आज्ञा का पालन करते हुए उनकी साधना में सहायक बनना ही गुरु-उपासना कहलाती है।

जिज्ञासा ८. सामान्य गुण किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो प्रत्येक द्रव्य में सामान्य रूप से उपस्थित रहते हैं उन गुणों को सामान्य गुण कहते हैं।

जिज्ञासा ९. विशेष गुण किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो एक द्रव्य को अन्य द्रव्य से पृथक् करने में सहायता करते हैं उन्हें विशेष गुण कहते हैं।

जिज्ञासा १०. सामान्य गुण कितने होते हैं ?

शान्ति– सामान्य गुण छह होते हैं– अस्तित्त्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, प्रदेशत्व और अगुरुलघुत्व।

जिज्ञासा ११. जीव द्रव्य किसे कहते हैं ?

शान्ति– इसका वर्णन पहले किया जा चुका है फिर भी समझने के लिए जो उपयोग लक्षण वाला होता है, जिसमें ज्ञान, दर्शन, सुख आदि अनन्त गुण पाए जाते हैं उसे जीवद्रव्य कहते हैं ?

जिज्ञासा १२. अजीव द्रव्य किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिसमें जीव के गुण नहीं पाए जाते हैं उसे अजीव द्रव्य कहते हैं।

जिज्ञासा १३. धर्म द्रव्य किसे कहते हैं ?

शान्ति– धर्म आदि द्रव्य का आगे वर्णन इसी ढाल में किया जाने वाला है।

जिज्ञासा १४. कौन-कौन से द्रव्य रूपी होते हैं और कौन-कौन से अरूपी ?

शान्ति– पुद्गल को छोड़कर अन्य सभी द्रव्य अरूपी होते हैं मात्र पुद्गल रूपी होता है। (त.सू. ५-५)

जिज्ञासा १५. चतुर-भंग किसे कहते हैं ?

शान्ति– चार प्रकार की व्यवस्थाओं को या चार प्रकार के भंगों को चतुर-भंग कहते हैं।

जिज्ञासा १६. चतुर-भंग कौन-कौन से होते हैं ?

शान्ति– चतुर-भंग निम्न होते हैं–१. हेय २. उपादेय ३. ज्ञेय और ४. ध्येय।

जिज्ञासा १७. हेय तत्त्व किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस तत्त्व को छोड़ा जाता है या जो त्याग करने के योग्य होता है उसे हेय तत्त्व कहते हैं। जैसे–सात प्रकार के तत्त्वों में आस्रव और बन्ध तत्त्व है।

जिज्ञासा १८. उपादेय तत्त्व किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस तत्त्व के माध्यम से अपना कल्याण सम्भव है या उस तत्त्व को जो हमारे लक्ष्य में साधक बनता है, उस तत्त्व को उपादेय तत्त्व कहते हैं। जैसे–सात तत्त्वों में जीव, संवर और निर्जरा तत्त्व ये उपादेय तत्त्व कहलाते हैं।

जिज्ञासा १९. ज्ञेय तत्त्व किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस तत्त्व को जाना जाए, जो जानने के योग्य होता है, उसे ज्ञेय तत्त्व कहते हैं। जैसे–सात तत्त्वों में अजीव तत्त्व ज्ञेय तत्त्व है।

जिज्ञासा २०. ध्येय तत्त्व किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस तत्त्व के माध्यम से ध्यान किया जाता है अथवा जो तत्त्व ध्यान करने के योग्य है अथवा जो हमारा लक्ष्य या उद्देश्य है उसे ध्येय तत्त्व कहते हैं। जैसे–सात प्रकार के तत्त्वों में मोक्ष तत्त्व है।

७. द्रव्य-तत्त्व आदि वर्णन

पुद्गल जीव चलें यदि तो दे, धर्म सहारा।
अगर ठहरना चाहें ये तो, अधर्म द्वारा॥
द्रव्यों के परिणमन वर्तना, काल द्विविध है।
जो अवगाह सभी को दे वो, गगन द्विविध है॥

अर्थ– पुद्गल और जीव यदि चलना चाहें तो धर्म द्रव्य उनकी चलने में या गति में सहायक होता है और अगर रुकना चाहें तो अधर्म द्रव्य उनके ठहरने में सहायक होता है। द्रव्यों के परिणमन वर्तना इत्यादि कराने वाला काल दो प्रकार का होता है जो सभी धर्मों को अवगाह देता है ऐसा आकाश दो प्रकार का होता है।

भावार्थ– धर्म, अधर्म, काल और आकाश की परिभाषाएँ इस छन्द में बताई गई हैं।

जिज्ञासा १. धर्म द्रव्य किसे कहते हैं?

शान्ति– जो द्रव्य पुद्गल को और जीव को चलने में सहायता करता है अथवा चलते हुए पुद्गल और जीव को चलने में, गति करने में सहायता करता है उसको धर्म द्रव्य कहते हैं।

जिज्ञासा २. अधर्म द्रव्य किसे कहते हैं?

शान्ति– जो द्रव्य ठहरते हुए पुद्गल या जीव को ठहरने में सहायता करता है उसे अधर्म द्रव्य कहते हैं।

जिज्ञासा ३. काल द्रव्य किसे कहते हैं?

शान्ति– जो द्रव्य द्रव्यों के परिणमन में-वर्तना में सहायता करता है वह काल द्रव्य कहलाता है।

जिज्ञासा ४. काल कितने प्रकार का होता है?

शान्ति– काल दो प्रकार का होता है–
१. व्यवहार काल और २. निश्चय काल।

जिज्ञासा ५. व्यवहार काल किसे कहते हैं?

शान्ति– समयों के समूह आवली, घण्टा, दिन, पक्ष, माह और वर्ष आदि को व्यवहार काल कहते हैं।

जिज्ञासा ६. निश्चय काल किसे कहते हैं?

शान्ति– जो लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश पर रत्नों की राशि के सामन स्थित है उसे निश्चय काल कहते हैं। (द्र.सं.)

जिज्ञासा ७. परिणमन किसे कहते हैं?

शान्ति– निरन्तर प्रति समय जो परिणमन या परिवर्तन होता है। द्रव्यों के उस गुण को परिणमन कहते हैं। एक धर्म के त्याग रूप और दूसरे धर्म के ग्रहण रूप जो पर्याय है उसे परिणाम या परिणमन कहते हैं। (त.सा. ५-२२)

जिज्ञासा ८. वर्तना किसे कहते हैं?

शान्ति– जो द्रव्यों को बरतावे उसे वर्तना कहते हैं। (त.सू.)

८. आस्रव वर्णन

दो चउ छह बीसों इक्कीसों, अठबीस आदि।
त्यागें ये पुद्गल की माया, भवदुख व्याधि॥
तज अजीव अब सत्तावन विध, आस्रव तजिए।
मिथ्याविरति-प्रमाद कषाय व, योग न धरिए॥

अर्थ– पुद्गल दो, चार, छह, बीस और चौबीस प्रकार का होता हुआ पंचेन्द्रिय और मन के विषय अट्ठाईस प्रकार के भी हो सकते हैं। इस तरह अजीव तत्त्व का त्याग करते हुए सत्तावन प्रकार का आस्रव भी त्यागिए। मिथ्या, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग रूप आस्रव के हेतुओं को कभी धारण नहीं कीजिए।

भावार्थ– पुद्गल के दो, चार, छह, बीस, चौबीस और पंचेन्द्रिय व मन के अट्ठाईस आदि कई प्रकार भी हो सकते हैं। वह सब अजीव का त्याग करते हुए सत्तावन प्रकार के आस्रवों का त्याग करें, जो मूल रूप से पाँच प्रकार के हेतु वाला होता है अर्थात् जीव, पुद्गल, अजीव, आस्रव आदि का स्वरूप बताते हुए उन्हें त्यागने का उपदेश इस छन्द में दिया गया है।

जिज्ञासा १. पुद्गल के दो प्रकार कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति– पुद्गल के दो प्रकार निम्न है–
१. अणु और २. स्कन्ध। (त. सू. ५-२५)

जिज्ञासा २. अणु पुद्गल किसे कहते हैं?

शान्ति– पुद्गल की सबसे सूक्ष्म इकाई को अणु कहते हैं। जिसका आदि, मध्य और अंत खुद वही हो उसको पुद्गल का अणु कहते हैं।

जिज्ञासा ३. स्कन्ध किसे कहते हैं?

शान्ति– पुद्गल के अणु-अणु मिलकर जब वृहत रूप लेते हैं तो उस वृहत इकाई को स्कन्ध कहते हैं अथवा स्वभाव पुद्गल या विभाव पुद्गल की अपेक्षा से भी पुद्गल दो प्रकार का होता है। जैसे- अणु तो स्वभाव स-पुद्गल है किन्तु स्कन्ध विभाव पुद्गल कहलाता है। (नि. सा.)

जिज्ञासा ४. पुद्गल चार प्रकार का कौन सा होता है?

शान्ति— चार प्रकार के पुद्गल निम्न होते हैं–

१. स्कन्ध—सकल या पूर्ण को स्कन्ध कहते हैं।

२. देश—स्कन्ध के अर्द्ध को देश कहते हैं।

३. प्रदेश—देश के अर्द्ध को प्रदेश कहते हैं।

४. परमाणु—अविभागीय इकाई को परमाणु कहते हैं। (पं.का. ध मू. ७५) अथवा पुद्गल स्पर्श, रस, गंध और वर्ण की अपेक्षा से भी चार प्रकार का होता है। (त. सू. ५-२३)

जिज्ञासा ५. पुद्गल के छह भेद कौन-कौन से हैं?

शान्ति— पुद्गल के स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण, मूर्तत्व और अचेतनत्व यह छह विशेष गुण कहलाते हैं। (आ.प.)

जिज्ञासा ६. पुद्गल के बीस गुण किन्हें कहते हैं?

शान्ति— पुद्गल के बीस गुण निम्न है–

पाँच प्रकार का वर्ण, पाँच प्रकार का रस, दो प्रकार की गंध और आठ प्रकार का स्पर्श यह सब मिलाकर पुद्गल के बीस विशेष गुण होते हैं। (न.च.वृ.)

जिज्ञासा ७. पुद्गल के इक्कीस गुण किसे कहते हैं?

शान्ति— पुद्गल के इक्कीस गुण निम्नलिखित हैं–

१. अस्ति-स्वभाव २. नास्ति-स्वभाव ३. नित्य-स्वभाव ४. अनित्य-स्वभाव ५. एक-स्वभाव ६. अनेक-स्वभाव ७. भेद-स्वभाव ८. अभेद-स्वभाव ९. भव्य-स्वभाव १०. अभव्य-स्वभाव ११. परम-स्वभाव। ये द्रव्यों के ग्यारह सामान्य स्वभाव हैं।

१२. चेत-स्वभाव १३. अचेतन-स्वभाव १४. मूर्त-स्वभाव १५. अमूर्त-स्वभाव १६. एकप्रदेश-स्वभाव १७. अनेकप्रदेश-स्वभाव १८. विभाव-स्वभाव १९. शुद्ध-स्वभाव २०. अशुद्ध-स्वभाव २१. उपचरित-स्वभाव २२. अनुपचरित-स्वभाव २३. एकान्त-स्वभाव और २४. अनेकान्त-स्वभाव। ये द्रव्यों के विशेष स्वभाव हैं। (न.च.वृ.)

उपरोक्त कुल चौबीस स्वभाव में से अमूर्त चैतन्य व अभव्य स्वभाव से रहित पुद्गल के इक्कीस सामान्य विशेष स्वभाव होते हैं। (न.च.वृ.)

जिज्ञासा ८. पुद्गल के अट्ठाईस विषय कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति– पुद्गल के अट्ठाईस विषय पंचेन्द्रियों के विषय और मन के विषय को मिलाकर अट्ठाईस होते हैं। जैसे स्पर्शन इन्द्रिय के आठ, रसना के पाँच, घ्राण के दो, चक्षु के पाँच और कर्ण के सात तथा एक मन का विषय यह सब मिलाकर अट्ठाईस होते हैं। (त.सू. ५-१९,२०,२३)

जिज्ञासा ९. पुद्गल की माया क्या कहलाती है?

शान्ति– विश्व में जो कुछ भी इन चर्म-चक्षुओं से दिखाई देता है तथा उपर्युक्त जो भी वर्णन किया गया है, वह सब पुद्गल की माया ही है।

जिज्ञासा १०. पुद्गल की माया को व्याधि क्यों कहते हैं?

शान्ति– चूँकि इन्हीं पुद्गलों के द्वारा अष्ट कर्मों की वर्गणाएँ बनती हैं, जो हमें संसार दुख देती हैं, विश्व की सारी आधियाँ-व्याधियाँ और उपाधियाँ देती हैं, इसलिए इन्हें त्यागने का उपदेश दिया गया है। यह सब अजीव के विषय कहलाते हैं।

जिज्ञासा ११. आस्रव कितने प्रकार का होता है?

शान्ति– आस्रव मूल में दो प्रकार का होता है–
१. द्रव्य-आस्रव और २. भाव-आस्रव अथवा ईर्यापथ-आस्रव या साम्परायिक आस्रव अथवा इन्हीं के विस्तार से बहुत ज्यादा भेद भी बन जाते हैं। (त.सू. ६-४)

जिज्ञासा १२. तो आस्रव सत्तावन प्रकार का कैसे बनता है?

शान्ति– सत्तावन प्रकार का आस्रव निम्न प्रकार से बनता है–
पाँच प्रकार का मिथ्यात्व, बारह प्रकार की अविरति, पन्द्रह प्रकार के योग और पच्चीस प्रकार के कषाय ये ही सब मिलकर के आस्रव के सत्तावन प्रकार बनते हैं। (चौ.ठा.)

जिज्ञासा १३. मिथ्या, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग ये पाँच क्या है?

शान्ति– मिथ्या, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग आदि आस्त्रव के हेतु हैं, मुख्य रूप से इन के कारण ही कर्मों का आस्त्रव होता है। (त.सू. ८-१)

जिज्ञासा १४. मिथ्यात्व तो हम समझ चुके हैं, किन्तु अविरति क्या कहलाती है?

शान्ति– षट्काय के जीवों की रक्षा नहीं करना, पंचेन्द्रिय और मन पर संयम नहीं रखना यह बारह प्रकार की अविरति कहलाती है।

जिज्ञासा १५. प्रमाद किसे कहते हैं?

शान्ति– कषाय सहित अवस्था को प्रमाद कहते हैं। (स.सि. ७-१३)
अच्छे कार्यों के करने में आदर भाव का ना होना। (ध. ७)
व्रतों में संशय उत्पन्न करने वाले योग को प्रमाद। (म.पु. ६२-३०५)
यह पन्द्रह प्रकार के होते हैं, चार विकथा, चार कषाय, पाँच इन्द्रियाँ, निद्रा और प्रणय। (ध. १-१, गो.जी.)

जिज्ञासा १६. कषाय किसे कहते हैं?

शान्ति– जो आत्मा को कसकर संसार के बन्धन में डालें और स्वरूप से विचलित करें उनको कषाय कहते हैं। यह कषाय मूल रूप से दो प्रकार की होती है। कषाय और नो-कषाय। कषाय के सोलह प्रकार होते हैं और नो-कषाय के नौ। (त.सू. ८-९)

जिज्ञासा १७. योग किसे कहते हैं?

शान्ति– मन, वचन और काय की क्रियाओं को योग कहते हैं। (त.सू ६-१)

जिज्ञासा १८. क्या योग और आस्त्रव में कोई सम्बन्ध है?

शान्ति– जी हाँ! मन, वचन और काय की क्रियाओं को योग कहते हैं और योग को ही आस्त्रव माना गया है। (त.सू. ६-२)

९. सम्यग्दर्शन की सार्थकता

पाँच हेतु ये त्याग बन्ध भी, तजें चतुर्धा।
छह कारण से संवर कर तप, करें निर्जरा॥
कर्म नशा के मिले मोक्ष सों, सम्यक् करना।
प्रशम आदि शुभ सराग सम्यक् लक्षण धरना॥

अर्थ– आस्रव के हेतु त्याग करए चारों प्रकार के बन्ध का भी त्याग करना चाहिए तथा छह कारणों से संवर करते हुए और तप करते हुए कर्मों की निर्जरा से कर्म नष्ट करके सम्यक् विधि से मोक्ष को प्राप्त करना चाहिए तथा प्रशम संवेग अनुकम्पा और आस्तिक्य आदि सराग सम्यग्दर्शन के शुभ लक्षण धारण करना चाहिए।

भावार्थ– आस्रव का त्याग कर बन्ध का त्याग करने के लिए तथा संवर करते हुए कर्मों की निर्जरा करके सम्यक विधि से मोक्ष प्राप्त करना चाहिए। इसकी यात्रा सम्यक् श्रद्धा-सम्यग्दर्शन से होती है जिस के लक्षण प्रमाद आदि आगम में बताए गए हैं, जिनको हमें धारण करना चाहिए।

जिज्ञासा १. बन्ध किसे कहते हैं?

शान्ति– कर्म, आस्रव के द्वारा जब आते हैं तो आत्मा के प्रदेश से एकमेक हो जाना बन्ध कहलाता है अथवा कर्मों का या कर्म वर्गणाओं का कर्म के रूप में परिणमन कर जाना और आत्म तत्त्व के प्रदेशों के साथ एकमेक हो जाना बन्ध कहलाता है।

जिज्ञासा २. बन्ध कितने प्रकार का होता है?

शान्ति– बन्ध चार प्रकार का होता है–
१. प्रकृति बन्ध २. स्थिति बन्ध ३. अनुभाग या अनुभव बन्ध और ४ प्रदेश बन्ध। (त. सू. ८.३)

जिज्ञासा ३. प्रकृतिबन्ध किसे कहते हैं?

शान्ति– कर्मों का अपने स्वभाव का नाम ही प्रकृति बन्ध है। (त.सू. ८-२२)

जिज्ञासा ४. प्रदेश बन्ध किसे कहते हैं?

शान्ति– कर्मों की मात्रा और आत्मा के साथ मिलना प्रदेश बन्ध कहलाता है। (त.सू. ८-२४)

जिज्ञासा ५. स्थितिबन्ध किसे कहते हैं ?

शान्ति– कर्मों का आत्मा के साथ जितनी अवधि तक रुकना होता है उसको स्थिति बन्ध कहते हैं। (त.सू.)

जिज्ञासा ६. अनुभव या अनुभाग बन्ध किसे कहते हैं ?

शान्ति– कर्मों की फल देने की शक्ति को अनुभव या अनुभाग बन्ध कहते हैं। (त.सू. ८-२१)

जिज्ञासा ७. संवर किसे कहते हैं ?

शान्ति– कर्मों का आस्त्रव रोकने का नाम संवर है अथवा जिस विधि से कर्मों का आना रुकता है उस विधि को संवर कहते हैं।(त.सू.९.१)

जिज्ञासा ८. संवर किन कारणों से होता है ?

शान्ति– संवर के निम्नलिखित कारण हैं–
१. गुप्ति २. समिति ३. धर्म ४. अनुप्रेक्षा ५. परिषह-जय और ६. चारित्र। इनको संवर के छह कारण भी कहते है। (त.सू. ९-२)

जिज्ञासा ९. क्या तप से भी संवर होता है ?

शान्ति– जी हाँ! तप से संवर भी होता है साथ-साथ में निर्जरा भी होती है अतः इसको अलग से कहा गया है।

जिज्ञासा १०. कर्मों का नाश कैसे होता है ?

शान्ति– संवर और निर्जरा करते हुए कर्मों का नाश होता है।

जिज्ञासा ११. मोक्ष कैसे प्राप्त होता है ?

शान्ति– जब आत्मा से जुड़े हुए सभी कर्म, संवर और निर्जरा के द्वारा पूर्ण रूप से अलग हो जाते हैं तो उस शुद्ध दशा को मोक्ष कहते हैं। (त.सू. १०-२)

जिज्ञासा १२. मोक्ष प्राप्त करने में प्रारम्भिक चरण क्या है ?

शान्ति– मोक्ष प्राप्त करने का प्रारम्भिक चरण सराग सम्यग्दर्शन है।

जिज्ञासा १३. सराग समयग्दर्शन क्या कहलाता है ?

शान्ति– प्रशम, संवेग, आस्तिक्य और अनुकम्पा लक्षण वाला सम्यग्दर्शन, सराग समयग्दर्शन कहलाता है। सबसे पहले यही दिखता है।

१०. सम्यग्दर्शन के दोष

गुण विपरीत दोष शंकादिक, त्यागें आठों।
ज्ञान जाति कुल बल तन धन तप, मद तज आठों॥
कुगुरु कुदेव कुधर्म भक्त षट्, अनायतन तज।
देव लोक गुरु मूढ़ दोष कुल, पच्चीसों तज॥

अर्थ– सम्यग्दर्शन के गुणों के विपरीत जो शंकादिक आठ दोष, ज्ञान आदि आठ मद, षट्-अनायतन तथा तीन मूढ़ताओं का त्याग अर्थात् कुल पच्चीस दोषों का त्याग करना।

भावार्थ– इस छन्द में सम्यग्दर्शन के गुणों के विपरीत शंकादिक दोष तथा कुल मिलाकर के पच्चीस दोषों का त्याग करने का उपदेश दिया गया है।

जिज्ञासा १. सम्यग्दर्शन के दोष कितने होते हैं?

शान्ति– सम्यग्दर्शन के आठ दोष होते हैं।

जिज्ञासा २. सम्यग्दर्शन के आठ दोष कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति– सम्यग्दर्शन के आठ दोष निम्न होते हैं–

१. **शंका**–जिनेन्द्र भगवान के कहे गए वचनों में संदेह करना।

२. **कांक्षा**–सांसारिक सुखों की इच्छा करते हुए धर्म धारण करना।

३. **विचिकित्सा**–मुनियों के मलिन शरीर को देखकर ग्लानी करना।

४. **मूढ़दृष्टि**–सच्चे और झूठे तत्त्वों की पहचान ना कर मूढताओं में फसना।

५. **अनुपगूहन**–अपने गुणों तथा दूसरों के अवगुणों को प्रकट करना अनुपगूहन।

६. **अस्थितिकरण**–कामवासना आदि से धर्म से भ्रष्ट होते हुए प्राणियों को धर्म में पुनः स्थिर नहीं करना।

७. **अवात्सल्य**–अपने सहधर्मियों से गो-बछड़े सम प्रीति नहीं करना।

८. **अप्रभावना**–जिनशासन का प्रचार प्रसार नहीं करना एवं अपनी आत्मा को रत्नत्रय से सुशोभित नहीं करना। (र.श्रा.)

जिज्ञासा ३. मद किसे कहते हैं ?

शान्ति— अपने आप में घमण्ड का या बड़प्पन का अनुभव करना तथा अन्य लोगों को हीन समझना मद कहलाता है।

जिज्ञासा ४. मद कितने प्रकार के होते हैं ?

शान्ति— मद आठ प्रकार के होते हैं–
१. ज्ञान २. कुल ३. जाति ४. रूप ५. धन ६. बल ७. तप और ८. प्रभुता। (र.श्रा.)

जिज्ञासा ५. अनायतन किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिनशासन के विपरीत तथा सम्यग्दर्शन में दोष उत्पन्न करने वाले स्थानों और व्यक्तियों को अनायतन कहते हैं।

जिज्ञासा ६. अनायतन कितने होते हैं ?

शान्ति— अनायतन छह होते हैं–
१. कुगुरु २. कुदेव ३. कुधर्म ४. कुगुरु-सेवक ५. कुदेव-सेवक और ६. कुधर्म-सेवक। (र.श्रा.)

जिज्ञासा ७. मूढ़ता किसे कहते हैं ?

शान्ति— धर्म व सम्यग्दर्शन में दोष उत्पन्न करने वाले अनुचित कार्यों को मूढ़ता कहते हैं।

जिज्ञासा ८. मूढ़ता कितनी होती हैं ?

शान्ति— मूढ़ता तीन होती हैं–

१. देवमूढ़ता—वरदान आदि की अपेक्षा से रागी-द्वेषी देवों की उपासना करना।

२. गुरुमूढ़ता—रागी-द्वेषी आरम्भ परिग्रह और हिंसा से सहित संसार भ्रमण के कार्यों में लीन साधुओं की उपासना करना।

३. लोकमूढ़ता—धर्म समझकर नदी समुद्र आदि में स्नान करना, बालू-पत्थरों के ढेर लगाना, पर्वत से गिरना और अग्नि आदि में जलना आदि ये लोक मूढ़ता कहलाती है।

जिज्ञासा ९. पच्चीस दोष कैसे बनते हैं ?

शान्ति— सम्यग्दर्शन के गुणों के विपरीत जो शंकादिक आठ दोष, ज्ञान आदि आठ मद, षट्-अनायतन तथा तीन मूढ़ताएँ अर्थात् ये कुल पच्चीस दोष होते हैं।

११. सम्यग्दर्शन के चार अंग

अंग धरें निशंक ज्यों अंजन, दाएँ पग सम।
अनन्तमती सम निःकांक्षित हों, बाएँ पग सम॥
उद्वायन सम निर्विचिकित्सा, बायें कर सम।
अमूढ़दृष्टि रेवती जैसे, पीठ अंग सम॥

अर्थ– सम्यग्दर्शन के आठ अंग निम्न तरीके से समझ कर धारण करने चाहिए। जिनवचनों में शंका-संदेह आदि का त्याग करते हुए दाएं पैर के समान धारण करना चाहिएए जैसे अंजन चोर ने धारण किया था। अनन्तमति के समान निःकांक्षित होते हुए बाएँ पैर के समान धारण करना चाहिए। उद्वायन राजा के समान निर्विचिकित्सा अंग को बाएँ हाथ के समान धारण करना चाहिए। रानी रेवती के समान अमूढ़दृष्टि अंग को पीठ के समान धारण करना चाहिए।

भावार्थ– सम्यग्दर्शन के चार अंगों को शरीर के चार अंगों के समान धारण करना चाहिए तथा उनमें अंजन चोर, अनन्तमति, उद्वायन राजा और रेवती रानी प्रसिद्ध हुए हैं। इसी तरीके से हमें भी धारण करना चाहिए।

जिज्ञासा १. निःशंकित अंग क्या कहलाता है?

शान्ति– जिनेन्द्र भगवान के द्वारा दिए गए उपदेशों में, देशना में और सिद्धान्तों में कभी भी शंका या संदेह नहीं करना यह निःशंकित अंग कहलाता है।

जिज्ञासा २. निःशंकित अंग में कौन प्रसिद्ध हुआ है?

शान्ति– निःशंकित अंग में अंजनचोर प्रसिद्ध हुआ है। (ग्रन्थ की वृद्धि के कारण यहाँ उनकी कथाएँ नहीं दी जा रही हैं, कृपया अन्य ग्रन्थों से उनका अध्ययन अवश्य करें।)

जिज्ञासा ३. निःशंकित अंग को शरीर के आठ अंगो में से कौन से अंग के समान धारण करना चाहिए?

शान्ति– निः शंकित अंग को शरीर के दाएँ पैर के समान धारण करना चाहिए।

जिज्ञासा ४. हम तो अभी यह भी नहीं जानते कि शरीर के आठ अंग कौन-कौन से होते हैं ? कृपया बताएँ।

शान्ति– अरे भाई! इसमें घबराने की क्या बात है, लो हम बता देते हैं। शरीर के आठ अंग निम्न होते हैं–
दो हाथ, दो पैर, एक सिर, एक छाती या सामने वाला हिस्सा, एक पीठ या पीछे वाला हिस्सा और अंत में बैठने वाला हिस्सा, कुल मिलाकर हो गए ना आठ। शरीर के ये आठ अंग होते हैं।

जिज्ञासा ५. दाएं पैर के समान निःशंकित अंग कहने का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति– जैसे शरीर में दायां पैर निःशंकित होकर किसी भी कार्य को करने के लिए आगे बढ़ता है उसी तरह से जिनशासन पर निःशंकित होकर विश्वास करना चाहिए।

जिज्ञासा ६. निःकांक्षित अंग किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिसके द्वारा धर्म करते हुए संसार शरीर और भोगों की आकांक्षा नहीं की जाती है उसे निःकांक्षित अंग कहते हैं।

जिज्ञासा ७. निःकांक्षित अंग में कौन प्रसिद्ध हुआ ?

शान्ति– निःकांक्षित अंग में अनन्तमति प्रसिद्ध हुई।

जिज्ञासा ८. निःकांक्षित अंग को शरीर के किस अंग के समान उपमा दी गई है ?

शान्ति– निःकांक्षित अंग को शरीर के बाएँ पैर के समान उपमा दी गई है।

जिज्ञासा ९. निःकांक्षित अंग को शरीर के बाएं पैर के समान उपमा क्यों दी गई है ?

शान्ति– जैसे दायाँ पैर आगे बढ़ने पर बायाँ पैर उसका अनुसरण करता है बाएँ पैर की अपनी कोई इच्छा अभिलाषा नहीं होती है उसी तरह से हमें मोक्षमार्ग में सांसारिक विषयों की अभिलाषा का त्याग करके आगे बढ़ना चाहिए।

जिज्ञासा १०. निर्विचिकित्सा अंग किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस धर्म के पालन करने से हमें ग्लानि-घृणा और ईर्ष्या आदि का भाव नहीं आता है उस अंग को निर्विचिकित्सा अंग कहते हैं।

जिज्ञासा ११. निर्विचिकित्सा अंग में कौन प्रसिद्ध हुआ ?

शान्ति– निर्विचिकित्सा अंग में राजा उद्वायन प्रसिद्ध हुआ।

जिज्ञासा १२. निर्विचिकित्सा अंग को शरीर के कौन से अंग के समान कहा गया है ?

शान्ति– निर्विचिकित्सा अंग को शरीर के बाएँ हाथ के समान कहा गया है।

जिज्ञासा १३. निर्विचिकित्सा अंग को शरीर के बाएं हाथ के समान कहने का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति– शरीर में जैसे कोई अशुद्धि या गंदगी हो अथवा शरीर मैला हो जाने पर उसे साफ करने का काम बायां हाथ करता है वैसे ही धर्म में कोई चिकित्सा हो तो उसे बाएं हाथ के समान करनी चाहिए।

जिज्ञासा १४. अमूढ़दृष्टि अंग क्या कहलाता है ?

शान्ति– जिस धर्म का पालन करते हुए अपनी श्रद्धा को सच्चे धर्म से कभी भी डॅवांडोल नहीं करना चाहिए उस अंग को अमूढ़दृष्टि अंग कहते हैं।

जिज्ञासा १५. अमूढ़दृष्टि अंग में कौन प्रसिद्ध हुआ ?

शान्ति– अमूढ़दृष्टि अंग में रानी रेवती प्रसिद्ध हुआ।

जिज्ञासा १६. अमूढदृष्टि अंग को शरीर के कौन से अंग के समान कहा गया है ?

शान्ति– अमूढ़दृष्टि अंग को शरीर के पीठ अंग के समान कहा गया है।

जिज्ञासा १७. अमूढ़दृष्टि अंग को शरीर के पीठ अंग के समान कहने का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति– जैसे हम दुनियाँ को पीठ दिखा कर आगे बढ़ते हैं ऐसे ही मिथ्या-दृष्टि अथवा दुनियाँ के मायाजाल को पीठ दिखाकर धर्म के पथ पर आगे बढ़ना चाहिए।

१२. सम्यग्दर्शन के शेष अंग

उपगूहन श्रेष्ठी जिनेन्द्र ज्यों, गुप्तांगों सम।
वारिषेण सम स्थितिकरण हो, दाएँ कर सम॥
हो वात्सल्य विष्णु मुनि ज्यों, वक्ष हृदय सम।
प्राभवना हो वज्र मुनि ज्यों, उच्च शीश सम॥

अर्थ— उपगूहन अंग में जिनेन्द्रभक्त सेठ जो प्रसिद्ध हुए हैं उसको गुप्तांगों के समान धारण करना चाहिए। स्थितिकरण अंग में राजा वारिषेण प्रसिद्ध हुए उसे दाएँ हाथ के समान धारण करना चाहिए। वात्सल्य अंग में विष्णुकुमार मुनि प्रसिद्ध हुए उसे वक्षस्थल के समान धारण करना चाहिए और अंत में प्रभावना अंग में वज्रकुमार मुनि प्रसिद्ध हुए इस अंग को शरीर में शीश के समान धारण करना चाहिए। इस तरह से सम्यग्दर्शन के अंगों को शरीर के आठ अंगों में धारण करने का उपदेश दिया गया है।

भावार्थ— इस छन्द में सम्यग्दर्शन के आठ अंगों को शरीर के आठ अंगों के रूप में तुलना करते हुए उनमें प्रसिद्ध आठ विभूतियों का वर्णन किया गया है।

जिज्ञासा १. उपगूहन अंग किसे कहते हैं?

शान्ति— जिस अंग या जिस धर्म के कारण हम अपने गुणों को तथा दूसरों के दोषों को ढाकते हैं उस अंग को उपगूहन अंग कहते हैं।

जिज्ञासा २. उपगूहन अंग में कौन प्रसिद्ध हुए?

शान्ति— उपगूहन अंग में जिनेन्द्रभक्त सेठ प्रसिद्ध हुए।

जिज्ञासा ३. उपगूहन अंग को शरीर के किस अंग के समान कहा गया है?

शान्ति— उपगूहन अंग को शरीर के गुप्तांगों के समान कहा गया है।

जिज्ञासा ४. उपगूहन अंग को शरीर के गुप्तांगों के समान कहने का तात्पर्य क्या है?

शान्ति— जैसे संसारी प्राणी अपने गुप्तांगों को गुप्त रखकर ही जीवन यापन करते हैं। इसी तरह से धर्मात्मा व्यक्ति अपने गुणों को तथा दूसरों के दोषों को छुपाकर, गुप्त रखकर अपने धर्म का पालन करते हैं।

जिज्ञासा ५. स्थितिकरण अंग किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिस अंग या धर्म के कारण अन्य धर्मात्मा व्यक्ति जो कि अपने धर्म से किसी कारण से भ्रष्ट या विचलित हो रहे हैं उन्हें पुनः अपने धर्म में लगाया जाता है उस अंग को स्थितिकरण अंग कहते हैं।

जिज्ञासा ६. स्थितिकरण में कौन प्रसिद्ध हुए ?

शान्ति— स्थितिकरण में वारिषेण मुनि प्रसिद्ध हुए।

जिज्ञासा ७. स्थितिकरण अंग को शरीर के कौन से अंग के समान कहा गया है ?

शान्ति— स्थितिकरण अंग को शरीर के दाएं हाथ के समान कहा गया है।

जिज्ञासा ८. स्थितिकरण अंग को शरीर के दाएं हाथ के समान कहने का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति— स्थितिकरण अंग को शरीर के दाएं हाथ के समान कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे हमारे शरीर में दायां हाथ हर एक कार्य को संभालने में सक्षम होता है और अपना कार्य कुशलता से पूर्ण करता है उसी तरह से हमें मोक्षमार्ग से विचलित लोगों को दाएं हाथ के समान संभाल कर उन्हें धर्म में पुनः स्थापित करना चाहिए।

जिज्ञासा ९. वात्सल्य अंग किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिस अंग या धर्म के कारण हम अपने सहधर्मी लोगों से गौ और बछड़े के समान प्रेम-वात्सल्य या प्रीति रखते हैं, निष्कपट भाव से उसी तरह से हमें अपने सहधर्मी से निश्चल भाव से प्रेम रखना चाहिए।

जिज्ञासा १०. वात्सल्य अंग में कौन प्रसिद्ध हुए ?

शान्ति— वात्सल्य अंग में विष्णुकुमार मुनि प्रसिद्ध हुए।

जिज्ञासा ११. वात्सल्य को शरीर के कौन से अंग के समान उपमा दी गई है?

शान्ति— वात्सल्य अंग को शरीर के वक्ष या हृदय के समान उपमा दी गई है।

जिज्ञासा १२. वात्सल्य अंग को शरीर के वक्ष या हृदय कहने का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति— जैसे हम अपने सहधर्मियों को या अपने स्वजन को प्रेम-वात्सल्य

के समय अपने हृदय से या वक्षस्थल अर्थात् छाती से लगा लेते हैं उसी तरह से हमें अपने सहधर्मियों को अपने हृदय से लगाकर प्रेम करना चाहिए।

जिज्ञासा १३. प्रभावना अंग किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस अंग या धर्म के प्रभाव से जिनशासन को हम उज्जवल करते हैं, उसकी धर्म ध्वजा को उच्च गगन में लहराने का भाव रखते हैं अथवा जिनशासन के महत्व को और बढ़ाने का प्रयास करते हैं, उसे प्रभावना अंग कहते हैं।

जिज्ञासा १४. प्रभावना अंग में कौन प्रसिद्ध हुए?

शान्ति– प्रभावना अंग में वज्रकुमार मुनि प्रसिद्ध हुए।

जिज्ञासा १५. प्रभावना अंग को शरीर के कौन से अंग के समान कहा गया है?

शान्ति– प्रभावना अंग को शरीर के शीश या सिर के समान कहा गया है।

जिज्ञासा १६. प्रभावना अंग को शरीर के सिर के समान कहने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति– जिस प्रकार से हमारे शरीर का सबसे उच्च, पवित्र और पूज्य अंग सिर होता है उसी प्रकार से हमें अपना सर्वस्य न्यौछावर करके जिनशासन के महत्व को प्रकट करने का प्रयास करना चाहिए।

जिज्ञासा १७. क्या किसी एक व्यक्ति में एक अंग ही हो तो सम्यग्दर्शन सुरक्षित रहेगा?

शान्ति– जी नहीं! एक व्यक्ति में आठों अंगों का होना अनिवार्य है तब सम्यग्दर्शन निर्दोष बनता है।

जिज्ञासा १८. यहाँ अलग-अलग अंगों में अलग-अलग प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम क्यों लिए गए हैं?

शान्ति– अरे भाई! वैसे तो सम्यग्दृष्टि में आठों अंग रहते हैं किन्तु किसी में एक अंग की विशेषता अधिकता के कारण उसके यहाँ पर नाम उल्लेख किए गए हैं, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वह एक अंग में प्रसिद्ध हुए हैं तो शेष अंग उनमें है ही नहीं। उनमें सात अंग भी हैं पर गौण अपेक्षा से।

१३. सम्यग्दर्शन के प्रभाव

आठ अंग तन सम हों सम्यक्, व्यवहारी में।
अतः न जन्में नरक नपुंसक, पशु नारी में॥
दीन हीन कुल अल्पायु वा, विकलांगों में।
यों अविरत हैं किन्तु जन्म लें, उच्च कुलों में॥

अर्थ– सम्यग्दर्शन के आठ अंग शरीर के आठ अंगों के समान व्यवहार सम्यग्दर्शन की अपेक्षा से धारण करने पर ऐसे सम्यग्दृष्टि लोग कभी भी नरकों में, नपुंसकों में, पशुओं में, नारी में, दीन-हीन कुल में, अल्प आयु में तथा विकलांगों में उत्पन्न नहीं होते किन्तु ऐसे अविरत सम्यग्दृष्टि लोग सदा उच्च कुल में ही पूर्णता के साथ जन्म लेते हैं।

भावार्थ– सम्यग्दृष्टि भले ही व्यवहार की अपेक्षा से क्यों ना हो किन्तु यदि वह शरीर के अंगों के समान सम्यग्दर्शन के आठ अंग अपने में धारण करता है तो उसको नरक, नपुंसक, पशु, नारी, दीन-हीन कुल, अल्पायु और विकलांग आदि दुखद पर्याय में जन्म नहीं लेना पड़ता किन्तु वह उच्च कुलों में ही जन्म लेता है।

जिज्ञासा १. सम्यग्दृष्टि जीव नरकों में जन्म नहीं लेता ऐसा आपने कहा किन्तु हमने तो सुना है कि प्रथम नरक में सम्यग्दृष्टि जीव जन्म लेता है तो दोनों में सत्य क्या है?

शान्ति– आपका कहना यद्यपि सत्य है तथापि वह अपवाद मार्ग है उत्सर्ग मार्ग नहीं।

जिज्ञासा २. यह अपवाद मार्ग क्या कहलाता है?

शान्ति– मुख्य मार्ग के दोषी मार्ग को अपवाद मार्ग कहते हैं।

जिज्ञासा ३. ऐसा आप क्या कहना चाहते हैं?

शान्ति– हम यह कहना चाहते हैं कि सम्यग्दृष्टि जीव नरक में जन्म नहीं लेता किन्तु अगर उसने पहले नरक आयु का बन्ध कर लिया है और बाद में सम्यग्दर्शन का लाभ उसे प्राप्त हुआ है तो वह पहले नरक में जाता है अन्य किसी नरक में नहीं।

जिज्ञासा ४. सम्यग्दृष्टि जीव नपुंसकों में भी जन्म नहीं लेता अगर वह नरक जाएगा तो वहाँ तो नपुंसक में ही जन्म लेगा ना, ऐसा क्यों ?

शान्ति– यह भी अपवाद मार्ग ही है कि नरकों में दूसरा लिंग होता ही नहीं है।

जिज्ञासा ५. अल्पायु कहने का क्या तात्पर्य है ?

शान्ति– जिनशासन में आठ वर्ष से कम आयु को अल्पायु कहा गया है किन्तु इससे उच्च आयु या अधिक आयु को अल्पायु नहीं कहा गया तात्पर्य यह हुआ कि सम्यग्दृष्टि जीव आठ वर्ष से कम उम्र में मृत्यु को प्राप्त नहीं होते इसके बाद ही होते हैं।

जिज्ञासा ६. विकलांग किसे कहते हैं ?

शान्ति– आजकल जिन्हें हम और आप दिव्यांग कहते हैं उनको ही जिन-शासन में विकलांग कहा गया है। जिनके शरीर में अंग-उपांगों के प्रमाण और गिनती में कुछ हीनाधिकता हो जाती है उसे विकलांग कहते हैं।

जिज्ञासा ७. क्या सभी सम्यग्दृष्टि उच्च कुलों में ही जन्म लेते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! जो जीव अपने साथ सम्यग्दर्शन लेकर आते हैं वह हमेशा उच्च कुलों में ही जन्म लेते हैं, दरिद्र दीन-हीन बनाना सम्यग्दर्शन का लक्षण नहीं है।

१४. सम्यग्दर्शन की सार्थकता

सम्यग्दर्शन प्रथम चरण हैं, मोक्षमहल के।
इस बिन सम्यग्ज्ञान चरित्रा, कभी न झलके॥
तीन चार भव में सम्यक् से, निज हित पा लो।
सो जलने से पहले, 'सुव्रत' ज्योति जला लो॥

अर्थ– सम्यग्दर्शन को मोक्षमहल का प्रथम चरण कहा गया है। इस सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र आत्मा में कभी भी झलक नहीं सकते। यह सम्यग्दर्शन अधिकतम् तीन-चार भव में निजहित दिला देगा। इस पर्याय का अंत हो उसके पहले हमें अपनी आत्मा से सम्यग्ज्योति या सम्यग्दर्शन को प्रकट कर लेना चाहिए। ऐसा लेखक मुनि १०८ सुव्रतसागर जी महाराज का आशय है।

भावार्थ– मोक्ष रूपी महल के सोपान का प्रथम सोपान अगर कोई है तो वह है सम्यग्दर्शन। इसके बाद ही सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का क्रम आता है। जो सम्यग्दर्शन तीन-चार भवों में मुक्त करा देता है। अतः हमें इस पर्याय को सार्थक बनाने के लिए कठोर परिश्रम करके अपनी आत्मा में से सम्यग्दर्शन को प्रकट करना ही चाहिए।

जिज्ञासा १. सम्यग्दर्शन को मोक्षमहल का प्रथम चरण क्यों कहा ?

शान्ति– सम्यग्दर्शन को मोक्षमहल का प्रथम चरण इसलिए कहा क्योंकि अगर हम मोक्षमार्ग के सारे कार्य करते जाएँ किन्तु सम्यग्दर्शन अगर नहीं होगा तो उनका मूल्य बहुत कम या ना के बराबर होगा किन्तु यदि वही कार्य सम्यग्दर्शन के साथ करें तो उनका मूल्य संख्यात गुना बढ़ जाएगा इसलिए सम्यग्दर्शन को प्राप्त करना ही चाहिए।

जिज्ञासा २. प्रथम चरण कहने का क्या मतलब है ?

शान्ति– जैसे किसी महल में सीढ़ियों के द्वारा चढ़कर जाना हो तो प्रथम सीढ़ी पर सबसे पहले चढ़ना होगा उसी तरह से मोक्ष रूपी महल

में जाने के लिए प्रथम सोपान के रूप में सम्यग्दर्शन को स्वीकार किया गया है।

जिज्ञासा ३. क्या सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र प्रकट नहीं हो सकते ?

शान्ति—जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में नहीं!!! सम्यग्दर्शन के अभाव में सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का प्रकट होना असम्भव है।

जिज्ञासा ४. क्या सम्यग्दर्शन हो जाने के बाद अधिकतम तीन-चार भवों में मुक्ति होना पक्का है ?

शान्ति— जी हाँ! सम्यग्दर्शन होने पर अगर वह छूटता नहीं है, तो उत्कृष्ट से तीन-चार भवों में या उसी भव में मुक्ति हो जाएगी।

जिज्ञासा ५. तीन-चार भव कहने का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति— जैसे किसी मनुष्य ने मनुष्य पर्याय में सम्यग्दर्शन प्राप्त किया, जिसे क्षायिक सम्यग्दर्शन करके वह भोगभूमि में गया, वहाँ से देव हुआ, वहाँ से मनुष्य बन कर अपना कल्याण किया इस तरह से अधिकतम कुल चार भव हुए।

जिज्ञासा ६. सुव्रत-ज्योति से क्या तात्पर्य है ?

शान्ति— अपनी आत्मा में से रत्नत्रय रूपी ज्योति को प्रकट करना।

जिज्ञासा ७. क्या सम्यग्दर्शन को प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करना अनिवार्य है ?

शान्ति— जी हाँ! अनादिकाल से हम जिस पथ पर चले आ रहे हैं उसका त्याग करना बिना परिश्रम के सम्भव नहीं है। अतः सम्यग्दर्शन को प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करना ही पड़ता है।

जिज्ञासा ८. कठोर परिश्रम करने के बाद भी सम्यग्दर्शन प्राप्त ना हो तो क्या किया जा सकता है ?

शान्ति— अगर सम्यग्दर्शन को प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम किया गया है और सम्यग्दर्शन प्रकट नहीं भी हुआ है तो इसमें हमारा कुछ भी अहित नहीं हो सकता अपितु आत्मा में सम्यग्दर्शन के संस्कार

पड़ने से आज नहीं तो कल सम्यग्दर्शन प्रकट हो जाएगा यदि हमारे पास भव्यता की योग्यता है तो और अगर नहीं भी है तो हम संसार में दुर्गतियों के दुख भोगने से बच जाएंगे और सद्गति के सुखों में लीन हो जाएंगे।

जिज्ञासा ९. आप यह कहना चाहते हैं कि कुछ भी करो या ना करो किन्तु सम्यग्दर्शन को प्राप्त करो, अवश्य ही करो ?

शान्ति– जी हाँ! आप मेरा ही नहीं किन्तु जिनशासन का अभिप्राय समझ गए कि कुछ भी हो सम्यग्दर्शन प्राप्त करना ही चाहिए यही इस पर्याय का लक्ष्य है।

जिज्ञासा १०. तो क्या अणुव्रत या महाव्रत धारण कर त्यागी बनना अनुचित है ?

शान्ति– जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में नहीं!!! किन्तु इस विधि से हम अपनी आत्मा में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के संस्कार डालते हैं। यदि सम्यग्दर्शन नहीं है तो इस विधि से उत्पन्न हो जाएगा और अगर सदोष है तो निर्दोष बनेगा और अगर निर्दोष है तो निर्मल बनेगा और इसी विधि से तीर्थंकर प्रकृति की भूमिका भी बनेगी।

श्री तृतीय ढाल का सारांश

अपना कल्याण चाहने वाला कोई संसारी प्राणी गुरु के पास जाकर उसका मार्ग पूछता है तो गुरु महाराज उसे मोक्षमार्ग बताते हैं। जो निश्चय और व्यवहार से होता हुआ आगे बढ़ता है। इस प्रकार से शुद्ध-अशुद्ध चेतनाओं का वर्णन करते हुए और बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा का विस्तार करते हुए सम्यग्दर्शन के लिए आवश्यक चीजों का वर्णन किया गया है। द्रव्य की व्यवस्थाओं को बताते हुए सम्यग्दर्शन के आठ अंगों को अपने शरीर के आठ अंगों में किस तरह से धारण करना चाहिए, यह भी स्पष्ट किया गया है तथा कौन-कौन से विशेष व्यक्ति उसमें प्रसिद्ध हुए हैं यह सब बातें बताते हुए सम्यग्दर्शन के शंका आदि दोषों को त्यागने का उपदेश दिया गया है।

आठ अंगों को धारण करने वाला अविरत सम्यग्दृष्टि विशेष प्रभाव के कारण कहाँ-कहाँ उत्पन्न नहीं होता है इसका वर्णन किया गया है और कहाँ उत्पन्न होते है इसका वर्णन भी करते हुए यह कहा जा रहा है कि सम्यग्दर्शन के बिना मोक्षमार्ग का प्रारम्भ भी नहीं होता। सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र कभी भी प्रकट नहीं हो सकते हैं। सम्यग्दर्शन हो जाने पर संसारी प्राणी अधिकतम तीन-चार भव में ही अपना कल्याण कर सकता है। इस बात का विशेष उल्लेख किया गया है अर्थात् सम्यग्दर्शन होने पर अधिकतम तीन-चार भव में ही अपना निजहित प्राप्त कर लेता है अथवा उसी भव से भी मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इसलिए उपदेश दिया गया है कि इस पर्याय के समाप्त होने के पूर्व अपनी सुव्रत-ज्योति अर्थात् रत्नत्रय को प्रकट कर लेना चाहिए।

सम्यग्दर्शन की महिमा का वर्णन करते हुए कहा जा रहा है कि इस बिन ज्ञान और चारित्र में सम्यक्पना नहीं आ सकता। अतः हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रयास करना ही चाहिए कि हम सम्यग्दर्शन को प्राप्त करें क्योंकि एक बार सम्यग्दर्शन हो जाता है तो अधिकतम चार भव के उपरान्त कल्याण अर्थात् चार भाव तक कल्याण हो ही जाएगा इसलिए हमें इस बात पर विचार करना ही चाहिए।

॥ इस प्रकार श्रीछहढाला की तृतीय ढाल समाप्त हुई ॥

❑ ❑ ❑

श्री चतुर्थ ढाल

ज्ञान व श्रावकचर्या वर्णन

१. सम्यग्ज्ञान उत्पति हेतु

(हाकलिका)

मिथ्यादर्शन त्याग चुके,
जिनशासन स्वीकार चुके।
तो सम्यग्दर्शन होगा,
सम्यग्ज्ञान तुरत होगा॥

अर्थ– मिथ्यादर्शन त्याग करने के बाद और सम्यग्दर्शन जिनशासन स्वीकार करने के बाद सम्यग्दर्शन जैसे ही होगा उसके ठीक उपरान्त ज्ञान भी सम्यग्ज्ञान हो जाएगा।

भावार्थ– मिथ्यादर्शन त्याग होते ही सम्यग्दर्शन होने पर ज्ञान तुरन्त सम्यग्ज्ञान के रूप में परिणमन कर जाता है।

जिज्ञासा १. क्या मिथ्यादर्शन त्याग किए बिना जिनशासन स्वीकार नहीं कर सकते ?

शान्ति– यह कैसे सम्भव होगा, जब तक मिथ्यादर्शन का त्याग नहीं करेंगे तब तक जिनशासन स्वीकार कैसे करेंगे, तथा जब तक जिनशासन स्वीकार नहीं करेंगे तब तक सम्यग्दर्शन का होना असम्भव है। मिथ्यादर्शन त्याग किए बिना और सम्यग्दर्शन हुए बिना भी जिनशासन स्वीकारा जा सकता है।

जिज्ञासा २. जिनशासन स्वीकार करने पर सम्यग्दर्शन होना निश्चित है क्या ?

शान्ति– जी नहीं! पर इतना अवश्य है कि जिनशासन स्वीकार किए बिना सम्यग्दर्शन नहीं होगा जब भी होगा तो जिनशासन स्वीकार करने के बाद ही होगा।

जिज्ञासा ३. सम्यग्दर्शन होने के बाद सम्यग्ज्ञान कैसे हो जाता है ?

शान्ति– सम्यग्दर्शन होने पर स्वभाव रूप से ज्ञान सम्यग्ज्ञान हो जाता है।

जिज्ञासा ४. सम्यग्ज्ञान किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस ज्ञान में संशय विपर्यय और अध्यवसाय नहीं होते, उसे सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा ५. क्या बिना सम्यग्दर्शन के सम्यग्ज्ञान नहीं हो सकता ?

शान्ति– जी नहीं! कभी नहीं! स्वप्न में भी नहीं! क्योंकि कार्य-कारण न्याय से ऐसा असम्भव है।

जिज्ञासा ६. कार्य-कारण न्याय क्या कहलाता है ?

शान्ति– किसी साधन या कारण से किसी कार्य का होना, तो कारण होने पर कार्य हो भी सकता है या नहीं किन्तु जहाँ कार्य हुआ है वहाँ कारण अवश्य होगा। इसे कार्य-कारण न्याय कहते है।

जिज्ञासा ७. सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान के विषय में कार्य-कारण न्याय स्पष्ट कीजिए, कैसे लागू होता है ?

शान्ति– सम्यग्दर्शन कारण है और सम्यग्ज्ञान कार्य है अतः सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञान होना असम्भव है क्योंकि बिना कारण के कार्य हो ही नहीं सकता लेकिन जहाँ सम्यग्ज्ञान हुआ है वहाँ सम्यग्दर्शन अवश्य ही होगा।।

२. सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान में भेद

एक साथ दोनों होते,
साधन साध्य भेद होते।
सम्यग्दर्शन है साधन,
ज्ञान उसी का साध्य सदन॥

अर्थ– साधन और साध्य का भेद बताते हुए कहा जा रहा है कि सम्यग्दर्शन साधन है और सम्यग्ज्ञान उसी का साध्य है।

भावार्थ– सम्यग्दर्शन को साधन बताते हुए सम्यग्ज्ञान को उसका साध्य बताते हुए दोनों में अन्तर बताया जा रहा है।

जिज्ञासा १. साधन किसे कहते हैं?

शान्ति– साधन, हेतु या कारण कहो सब एकार्थवाची हैं अर्थात् जिस सामग्री से कार्य होना है उस सामग्री को साधन कहते हैं।

जिज्ञासा २. साध्य किसे कहते हैं?

शान्ति– लक्ष्य, प्रयोजन, उद्देश्य, और ध्येय ये सब साध्य के ही नाम है।

जिज्ञासा ३. सम्यग्दर्शन का साध्य सम्यग्ज्ञान कैसे हो सकता है?

शान्ति– सम्यग्दर्शन तो साधन है परन्तु वर्तमान की अपेक्षा से इसका साध्य तो सम्यग्ज्ञान ही होगा।

जिज्ञासा ४. हमने तो सुना है कि सम्यग्दर्शन का साध्य मोक्ष होता है किन्तु आप तो सम्यग्ज्ञान कह रहे हैं, दोनों में सत्य क्या है?

शान्ति– आपका कहना यद्यपि सत्य है और ये दोनों कथन भी सत्य हैं फिर भी वर्तमान की अपेक्षा से सम्यग्ज्ञान साध्य है और पूर्ण रूप से मोक्ष साध्य है।

जिज्ञासा ५. सम्यग्दर्शन पाकर मोक्ष पाने का प्रयास क्यों ना करें, सम्यग्ज्ञान में क्यों उलझें?

शान्ति– आपका कहना यद्यपि सत्य है किन्तु मोक्ष रूपी साध्य को सिद्ध करने के पहले सम्यग्ज्ञान को प्राप्त करना ही होगा।

जिज्ञासा ६. क्या कार्य-कारण न्याय और साधन-साध्य व्यवस्था में कोई सम्बन्ध है?

शान्ति– जी हाँ! दोनों एक ही बात को बताने वाले हैं।

जिज्ञासा ७. साध्य सदन कहने का क्या उद्देश्य है?

शान्ति– लक्ष्य रूपी मंजिल को यहाँ साध्य सदन कहा गया है।

३. सम्यग्ज्ञान के प्रकार

दो प्रकार के सम्यग्ज्ञान,
पहले परोक्ष मति श्रुत ज्ञान।
इन्द्रिय मन से ज्ञान कराए,
सकल द्रव्य की कुछ पर्याय॥

अर्थ– सम्यग्ज्ञान दो प्रकार का होता है प्रथम परोक्ष सम्यग्ज्ञान और द्वितीय प्रत्यक्ष सम्यग्ज्ञान। परोक्ष सम्यग्ज्ञान के दो प्रकार मतिज्ञान और श्रुतज्ञान होते हैं जो इन्द्रिय और मन के द्वारा उत्पन्न होते हैं तथा सभी द्रव्यों की कुछ पर्याय के विषयों में जानते हैं।

भावार्थ– सम्यग्ज्ञान के दो प्रकारों में से परोक्ष सम्यग्ज्ञान, मतिज्ञान और श्रुतज्ञान की चर्चा करते हुए उनके उत्पत्ति के कारण तथा उनके कार्य की जानकारी इस छन्द में दी गई है।

जिज्ञासा १. सम्यग्ज्ञान कितने प्रकार का होता है?

शान्ति– सम्यग्ज्ञान दो प्रकार का होता है एक परोक्ष सम्यग्ज्ञान दूसरा प्रत्यक्ष सम्यग्ज्ञान। (त.सू. १-११,१२)

जिज्ञासा २. परोक्ष सम्यग्ज्ञान किसे कहते हैं?

शान्ति– जो सम्यग्ज्ञान आत्मा के साथ इन्द्रिय तथा मन से उत्पन्न होता है उसको परोक्ष सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा ३. परोक्ष सम्यग्ज्ञान कहने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति– चूँकि यह ज्ञान स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करता इसलिए इसको परोक्ष सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा ४. परोक्ष सम्यग्ज्ञान कितने प्रकार का होता है?

शान्ति– परोक्ष सम्यग्ज्ञान दो प्रकार का होता है एक मतिज्ञान दूसरा श्रुतज्ञान।

जिज्ञासा ५. मतिज्ञान किसे कहते हैं?

शान्ति– वह ज्ञान जो इन्द्रिय और मन के द्वारा उत्पन्न होकर किसी वस्तु का ज्ञान कराता है मतिज्ञान कहलाता है। (त.सू. १-१४)

जिज्ञासा ६. श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

शान्ति– मतिज्ञान के द्वारा उत्पन्न हुए विषय या जाने गए विषय से

विषयान्तर जाने वाले ज्ञान को श्रुतज्ञान कहते हैं अथवा श्रुत को ही श्रुतज्ञान कहते हैं। (त.सू. १-२०)

जिज्ञासा ७. मतिज्ञान और श्रुतज्ञान के विषय क्या-क्या हैं ?

शान्ति– सभी द्रव्य की कुछ पर्यायों को इन्द्रिय और मन के द्वारा जानना मतिज्ञान और श्रुतज्ञान के विषय हैं। (त.सू. १-२६)

जिज्ञासा ८. क्या मतिज्ञान का भेद-विस्तार भी है ?

शान्ति– जी हाँ! इसके लिए निम्न तालिका से समझें–

४. प्रत्यक्षज्ञान के भेद

विकल सकल दो विध प्रत्यक्ष,
अवधि मनः विकला प्रत्यक्ष।
प्रत्यक्ष चेतना से मानें,
कुछ रूपी सीमित जानें॥

अर्थ– प्रत्यक्ष ज्ञान के विकल प्रत्यक्ष और सकल प्रत्यक्ष दो प्रकार बताते हुए कहा जा रहा है कि अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान ये दोनों विकल प्रत्यक्ष ज्ञान कहलाते हैं तथा चेतना के द्वारा उत्पन्न होने पर कुछ रूपी द्रव्यों को ही जानते हैं।

भावार्थ– प्रत्यक्षज्ञान के प्रकार बताते हुए विकल प्रत्यक्षज्ञान के दो प्रकार बताए जा रहे हैं जिसमें एक अवधिज्ञान है और दूसरा मनःपर्ययज्ञान तथा यह आत्मा से उत्पन्न होकर कुछ रूपी द्रव्यों को ही सीमित अवधि तक जानते हैं ऐसा इस छन्द में कहा गया है।

जिज्ञासा १. प्रत्यक्षज्ञान किसे कहते हैं?

शान्ति– वह ज्ञान जिसे किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं होती, सीधा आत्मा से उत्पन्न होता है उसे प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा २. क्या परोक्षज्ञान आत्मा से उत्पन्न नहीं होता।

शान्ति– वैसे तो सभी ज्ञान आत्मा से ही उत्पन्न होते हैं किन्तु परोक्षज्ञान को इन्द्रिय और मन की सहायता पड़ती है और प्रत्यक्ष ज्ञान स्वतंत्र होता है, यह दोनों में अन्तर है।

जिज्ञासा ३. प्रत्यक्षज्ञान कितने प्रकार का होता है?

शान्ति– प्रत्यक्ष ज्ञान दो प्रकार का होता है–
१. सकल प्रत्यक्ष और २. विकल प्रत्यक्ष। (त.सू. १-१२)

जिज्ञासा ४. विकल प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते हैं?

शान्ति– जो ज्ञान यद्यपि प्रत्यक्ष तो है किन्तु पूर्ण रूप से प्रत्यक्ष नहीं होता, कुछ सीमित और रूपी ही जानता है इसलिए उसे विकल प्रत्यक्षज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा ५. विकल प्रत्यक्षज्ञान कितने प्रकार का होता है ?

शान्ति– विकल प्रत्यक्षज्ञान दो प्रकार का होता है–
१. अवधिज्ञान और २. मनःपर्ययज्ञान। (त.सू. १-१२)

जिज्ञासा ६. अवधिज्ञान किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो ज्ञान प्रत्यक्ष होकर भी द्रव्य, काल और क्षेत्र की मर्यादा लिए हुए रूपी पदार्थों को जानता है उसे अवधिज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा ७. मनःपर्ययज्ञान किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो ज्ञान मन में स्थित वस्तुओं को जानता है उसे मनःपर्ययज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा ८. सकल प्रत्यक्ष किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो ज्ञान पूर्ण रूप से आत्मा से उत्पन्न होकर स्वतंत्र होता है किसी की सहायता की जिसे आवश्यकता नहीं होती है उसे सकल प्रत्यक्षज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा ९. सकल प्रत्यक्ष ज्ञान कितने प्रकार का होता है ?

शान्ति– सकल प्रत्यक्ष ज्ञान के प्रकार नहीं होते हैं वह मात्र एक ही होता है वह केवलज्ञान है।

५. ज्ञान के प्रकार

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय,
होते क्षायोपशमिक सदय।
क्षायिक केवलज्ञान अमल,
निरावरण प्रत्यक्ष सकल॥

अर्थ– मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान ये चारों ज्ञान क्षायोपशमिक होते हैं किन्तु क्षायिक केवलज्ञान अमल, निरावरण और सकल प्रत्यक्ष होता है।

भावार्थ– क्षायिक और क्षायोपशमिक ज्ञान में कौन-कौन से ज्ञान आते हैं, इस विषय का इस छन्द में वर्णन किया गया है।

जिज्ञासा १. क्षायोपशमिक सम्यग्ज्ञान क्या कहलाता है?

शान्ति– वह ज्ञान जो छद्मस्थ अवस्था में पाया जाता है उसे क्षायोपशमिक सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा २. छद्मस्थ अवस्था क्या कहलाती है?

शान्ति– अपने आत्मस्वरूप को प्राप्त नहीं होना या छद्म अर्थात् बनावटी रूप में रहने का नाम छद्मस्थ अवस्था है।

जिज्ञासा ३. क्षायोपशमिक सम्यग्ज्ञान कौन-कौन से ज्ञान होते हैं?

शान्ति– क्षायोपशमिक सम्यग्ज्ञान चार होते हैं–
मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान। (त.सू. २-१)

जिज्ञासा ४. क्षायिक ज्ञान किसे कहते हैं?

शान्ति– वह ज्ञान जो सकल ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय होने पर उत्पन्न होता है उसे क्षायिक ज्ञान कहते हैं, उसको ही केवलज्ञान भी कहते हैं।

जिज्ञासा ५. केवलज्ञान की और क्या विशेषता होती है?

शान्ति– केवलज्ञान अमल, निरावरण और सकल प्रत्यक्ष होता है।

जिज्ञासा ६. केवलज्ञान को अमल कहने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति– ज्ञानावरणीय कर्म सम्बन्धी मल का पूर्ण रूप से नष्ट हो जाना अमल कहलाता है। (स.सि. ३५७, ८-३८ टी.)

जिज्ञासा ७. केवलज्ञान को निरावरण कहने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति– ज्ञानावरणीय कर्म का ज्ञान पर से आवरण हटना निरावरण कहलाता है।

जिज्ञासा ८. क्षायोपशमिक और क्षायिक ज्ञान में क्या अन्तर है?

शान्ति– क्षायोपशमिक ज्ञान पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं होता किन्तु शुद्ध होने की यात्रा में होता है जबकि क्षायिक ज्ञान शुद्ध ज्ञान होता है और शुद्ध उपयोग का फल क्षायिक ज्ञान होता है और भी अन्तर अन्य ग्रन्थों से समझ लेने चाहिए।

जिज्ञासा ९. क्षायोपशमिक ज्ञान को सदय कहने से क्या तात्पर्य है?

शान्ति– चूँकि क्षायोपशमिक ज्ञान में मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान आते हैं। ये सब प्रवृत्ति में भी देखने में आते हैं। प्रवृत्ति में दया धर्म का पालन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है इसलिए इन्हें सदय कहा गया है अर्थात् जो ज्ञान दया के साथ होता है उसे सदय ज्ञान कहते हैं।

६. केवलज्ञान की विशेषताएँ

ज्ञानावरणी जब सब जाए,
तभी अनन्तानन्त कहाए।
अनन्त द्रव्य के गुण पर्याय,
युगपद जाने लख असहाय॥

अर्थ– केवलज्ञान उस समय उत्पन्न होता है जब सकल रूप से ज्ञानावरणी कर्म नष्ट हो जाता है और अनन्त द्रव्य के गुण तथा पर्याय इसमें झलकने लगते हैं इसलिए इसको अनन्त केवलज्ञान कहते हैं। यह एक साथ देखता है और जानता है। इस ज्ञान को किसी के भी सहारे की आवश्यकता नहीं पड़ती।

भावार्थ– केवलज्ञान की विशेषताएँ बताते हुए कहा जा रहा है कि सकल ज्ञानावरणीय नष्ट होने पर अनन्त द्रव्य के गुण और पर्याय जानने से अनन्तानन्त कहलाने वाला ज्ञान एक साथ देखने और जानने वाला असहाय ज्ञान होता है।

जिज्ञासा १. ज्ञानावरणीय कर्म पूर्ण नष्ट होने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति– सभी प्रकार का ज्ञानावरणीय कर्म नष्ट हो जाए अर्थात् कुछ शेष ना रहे इस को सकल ज्ञानावरणीय कर्म नष्ट होना कहते हैं।

जिज्ञासा २. केवलज्ञान को अनन्त क्यों कहते हैं?

शान्ति– केवलज्ञान अनन्त द्रव्यों के अनन्त गुणों को और अनन्त पर्यायों को एक साथ जानता और देखता हैए इसलिए उसे अनन्त कहते हैं।

जिज्ञासा ३. अनन्तानन्त कहने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति– द्रव्य, गुण और पर्याय अनन्त हैं, इन सबको केवलज्ञान जानता है। इसलिए केवलज्ञान को अनन्तानन्त भी कहते हैं।

जिज्ञासा ४. क्या अन्य ज्ञान में देखने और जानने में कुछ अन्तर होता है?

शान्ति– जी हाँ! अन्य ज्ञान जिन्हें हम क्षायोपशमिक ज्ञान कहते हैं वे सब पहले देखते हैं बाद में जानने का काम करते हैं।

जिज्ञासा ५. केवलज्ञान को असहाय ज्ञान क्यों कहते हैं?

शान्ति– 'केवल' अर्थात् मात्र अकेला किसी की सहायता के बिना जो

आत्मा के रूप में कार्य करता है उसे केवलज्ञान कहते हैं। किसी की सहायता के बिना काम करने से इसे असहाय कहते हैं।

जिज्ञासा ६. असहाय का तात्पर्य कमजोर होता है क्या ?

शान्ति— जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! केवलज्ञान तो सबसे ज्यादा शक्ति सम्पन्न होता है परन्तु अकेला काम करने के कारण उसे असहाय कहते हैं कमजोर होने के कारण नहीं।

जिज्ञासा ७. अनन्तज्ञान और सर्वज्ञ में क्या अन्तर है ?

शान्ति— अनन्त द्रव्यों के अनन्त गुणों और अनन्त पर्यायों को युगपत जमने के कारण अनन्तज्ञ कहलाते हैं परन्तु उन द्रव्यों की ६ प्रकार की संख्या को पूर्व रूप से जानने के कारण सर्वज्ञ कहलाते हैं। वैसे भाव पक्ष से दोनों में अन्तर नहीं है।

जिज्ञासा ८. अनन्तज्ञ और सर्वज्ञ दोनों में श्रेष्ठ कौन है ?

शान्ति— भाव से दोनों समान हैं परन्तु शब्द की अपेक्षा से अनन्तज्ञ ज्यादा उत्तम लगता है।

जिज्ञासा ९. सर्वज्ञ में क्या कमी है ?

शान्ति— चूँकि सर्वज्ञ में शब्द की अपेक्षा से सब जानता है शेष कुछ नहीं पर ऐसा बनता नहीं क्योंकि केवली प्रभु के अनन्त जानने के बाद भी अनन्त शेष रहता है क्योंकि वे अनन्त को अनन्त के रूप से जानते हैं न कि सब के रूप में।

७. केवलज्ञान प्रभाव

दर्पण गोखुर बिम्बित ज्यों,
लोकालोक झलकते यों।
शीघ्र मोक्ष का अधिकारी,
जग में है महिमा न्यारी॥

अर्थ– जैसे दर्पण में या गोखुर में बिम्ब दिखते हैं वैसे ही भगवान् के केवलज्ञान में लोक और अलोक सब कुछ झलकने लगते हैं। यह केवलज्ञान शीघ्रता से मोक्ष दिलाने वाला होता है इसलिए संसार में इसकी महिमा सबसे प्रथम और पूज्य है।

भावार्थ– केवलज्ञान की महिमा बताते हुए कहा जा रहा है कि केवलज्ञान में लोक-अलोक के समस्त द्रव्य झलकते हैं तथा यह ज्ञान शीघ्रता से मुक्ति देने वाला होता है।

जिज्ञासा १. दर्पण बिम्ब कहने से क्या तात्पर्य है?

शान्ति– दर्पण बिम्ब कहने से तात्पर्य यह है कि जैसे दर्पण में कोई बिम्ब आकर झलक जाए तो दर्पण उसके प्रति राग-द्वेष नहीं करता बल्कि वह आता और जाता बना रहता है ऐसा ही केवलज्ञान होता है जिसमें ज्ञेय पदार्थ झलकते हैं। ज्ञान उसमें राग-द्वेष नहीं करता।

जिज्ञासा २. गोखुर के समान केवलज्ञान कहने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति– जैसे कीचड़ में गाय का खुर या पैर पड़ने पर जो गड्ढा पड़ता है उसे गोखुर कहते हैं जब बरसात में उसमें पानी भरता है तो उसके छोटे से स्थान में पूरा आकाश झलक जाता है, ऐसा ही केवलज्ञान होता है जो किसी एक जिन में होकर लोकालोक को झलकाने की क्षमता रखता है।

जिज्ञासा ३. लोकालोक तो अनन्तानन्त होता है वह एक केवलज्ञान में कैसे झलकता है?

शान्ति– यह कोई बात नहीं हुई, केवलज्ञान अकेला होकर के भी अनन्त पदार्थों को जानने की क्षमता वाला होता है इसलिए लोकालोक झलकने में कोई बाधा नहीं आ सकती।

जिज्ञासा ४. केवलज्ञान मोक्ष का अधिकारी शीघ्र कैसे बनता है ?

शान्ति— केवलज्ञान होने पर अन्य कोई गति होती ही नहीं है एक और मात्र एक, केवल और मात्र केवल मोक्ष गति ही होती है।

जिज्ञासा ५. केवलज्ञान की जग में महिमा न्यारी क्यों मानी गई है ?

शान्ति— केवलज्ञान को इसलिए पूज्य माना गया है क्योंकि एक बार केवलज्ञान हो जाने पर उन केवली प्रभु को कभी संसार में भटकना ही नहीं पड़ेगा बल्कि उनकी मुक्ति निश्चित है। अपना आयु कर्म पूरा करके मोक्ष प्राप्त करेंगे ही करेंगे इसलिए इसकी महिमा अलग मानी गई है, न्यारी मानी गई है।

जिज्ञासा ६. केवलज्ञान से मुक्ति निश्चित है तो ज्ञान आराधना करना चाहिए फिर चारित्र धारण करने से क्या होगा ?

शान्ति— नहीं! नहीं!! ऐसा नहीं कहते!!! क्योंकि केवलज्ञान बिना चारित्र अपनी आत्मा में से प्रकट नहीं होता है।

८. ज्ञान अभ्यास हेतु प्रेरणा

अतः ज्ञान अभ्यास करो,
आठ अंग में हृदय धरो।
उच्चारण हो शुद्ध भला,
शब्दाचार अंग पहला॥

अर्थ— केवलज्ञान की महिमा जानकर ज्ञान अभ्यास करना चाहिए तथा शरीर के आठ अंगों के समान ज्ञान के आठ अंगों को भी समझना चाहिए जिसमें पहला अंग शब्दाचार होता है जिसमें शुद्ध उच्चारण करना माना गया है।

भावार्थ— ज्ञान अभ्यास के द्वारा केवलज्ञान की उत्पत्ति सम्भव है अतः आठ अंगों के द्वारा इस ज्ञान अभ्यास को करना चाहिए जिसका पहला अंग है शब्दाचार।

जिज्ञासा १. ज्ञान अभ्यास किसे कहते हैं?

शान्ति— मिथ्याज्ञान का त्याग करके सम्यग्ज्ञान को किसी निमित्त से समझ कर अपनी आत्मा में से उद्घाटित करने का अभ्यास करना ही सम्यग्ज्ञान का अभ्यास है।

जिज्ञासा २. वह कौन-कौन से साधन होते हैं जिनसे हम अपने ज्ञान का अभ्यास कर सकते हैं?

शान्ति— जिन साधनों से हम सम्यग्ज्ञान का अभ्यास कर सकते हैं वह निम्न है–

१. देव—दिव्य देशना या बिम्ब दर्शन करके।
२. गुरु—शिक्षा दीक्षा आदि से।
३. शास्त्र—अध्ययन करके।
४. चिन्तन—श्रुत का चिन्तन करके।
५. ध्यान—सूत्र का एवं आत्मा का ध्यान करके।
६. अध्यात्म—भेदज्ञान की शरण जाकर के।

जिज्ञासा ३. सम्यग्ज्ञान के आठ अंग कौन कौन से होते हैं?

शान्ति— ज्ञान के आठ अंग इसी ढाल में समझाए जाएंगे अतः थोड़ी प्रतीक्षा कीजिए।

जिज्ञासा ४. शब्दाचार किसे कहते हैं ?

शान्ति– यह सम्यग्ज्ञान का प्रथम अंग है अर्थात् अक्षरों का, शब्दों का और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण करना शब्दाचार कहलाता है।

जिज्ञासा ३. अगर कोई जन्म से तोतला हो या स्पष्ट उच्चारण नहीं कर पाता हो तो क्या उसे पढ़ने में दोष लगेगा ?

शान्ति– जी हाँ! चूँकि उसका पाप कर्म का उदय है जो उसे स्पष्ट वाणी नहीं मिली किन्तु फिर भी उसे प्रयास करके शुद्ध पढ़ने का प्रयास करना चाहिए यही उसका शब्दाचार माना जाएगा।

जिज्ञासा ४. सही उच्चारण नहीं होने के कारण हमें पढ़ने का त्याग करना चाहिए या जैसा है उसी को पढ़ते हुए सुधार करना चाहिए ?

शान्ति– अगर गलत उच्चारण के डर से हम अभ्यास नहीं करेंगे तो कभी भी हमारा उच्चारण स्पष्ट नहीं हो पाएगा अतः प्रयास करना ही सर्वोत्तम है।

जिज्ञासा ५. गलत उच्चारण का दोष कितना लगता है ?

शान्ति– सागर में बूँद के बराबर।

९. ज्ञान-अंग वर्णन

शास्त्र अर्थ सम्यक् करना,
अर्थाचार क्रमिक करना।
पढ़कर सही अर्थ करना,
उभयाचार चित्त धरना॥

अर्थ– श्रुत-शास्त्रों को पढ़कर उनका उचित अर्थ करना जो शास्त्र सम्मत हो और धर्म सम्मत हो तथा जिससे किसी प्रकार का कुछ अवर्णवाद ना हो ऐसा अर्थ करना अर्थाचार कहलाता है। सही पढ़ना सही उच्चारण करना और सही अर्थ करना यह दोनों कार्य मिलकर उभयाचार कहलाता है।

भावार्थ– इस छन्द में अर्थाचार और उभयाचार का व्याख्यान किया गया है।

जिज्ञासा १. शास्त्रार्थ क्या कहलाता है?

शान्ति– जिनागम ग्रन्थों को पढ़कर उनका परम्परा के अनुसार दया धर्म के अनुसार और अनेकान्त धर्म के अनुसार अर्थ करना शास्त्रार्थ कहलाता है।

जिज्ञासा २. क्या शास्त्रार्थ में गड़बड़ी भी हो सकती है?

शान्ति– जी हाँ! अनुयोग तथा नय-विवक्षा कथन को ना समझने पर गड़बड़ी होना निश्चित है, अतः योग्य अर्थ करना चाहिए।

जिज्ञासा ३. अर्थाचार किसे कहते हैं?

शान्ति– शास्त्रों को पढ़कर उनका उचित या सम्यक अर्थ करना ही अर्थाचार कहलाता है।

जिज्ञासा ४. यहाँ अर्थाचार क्रमिक करने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति– चूँकि शब्दों से अर्थ निकाले जाते हैं, अतः क्रमशः शब्दों के अनुसार अर्थ निकालने के लिए क्रमिक शब्द का प्रयोग किया गया है।

जिज्ञासा ५. उभयाचार किसे कहते हैं?

शान्ति– शास्त्रों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना और उनके सम्यक् अर्थ करना उभयाचार कहलाता है अर्थात् उच्चारण भी शुद्ध और अर्थ भी सम्यक् हो।

१०. ज्ञान अंग वर्णन

योग्य समय स्वाध्याय करें,
इसको कालाचार कहें।
शास्त्र विनय करके पढ़ना,
विनयाचार इसे कहना॥

अर्थ– योग्य समय में शास्त्र स्वाध्याय कालाचार कहलाता है तथा शास्त्रों को विनय के साथ पढ़ना विनयाचार कहलाता है।

भावार्थ– इसमें कालाचार और विनयाचार का व्याख्यान किया गया है।

जिज्ञासा १. स्वाध्याय किसे कहते हैं?

शान्ति– आत्मा को जानने का पुरुषार्थ स्वाध्याय कहलाता है अथवा ज्ञान भावना करते हुए आलस्य का त्याग करना या आलस्य का त्याग करने के लिए ज्ञान भावना करना स्वाध्याय है। (स.सि. ९-२० टी.)

जिज्ञासा २. स्वाध्याय का योग्य समय क्या कहलाता है?

शान्ति– सन्धिकाल से रहित योग्यसमय में स्वाध्याय करना योग्य समय है।

जिज्ञासा ३. सन्धि काल किसे कहते हैं?

शान्ति– दिव्यदेशना, ध्यान या सामायिक काल को सन्धि काल कहते हैं।

जिज्ञासा ४. कालाचार किसे कहते हैं?

शान्ति– सन्धि काल, सामायिक काल आदि ध्यान के कालों को छोड़कर अन्य समय में स्वाध्याय करना कालाचार कहलाता है।

जिज्ञासा ५. शास्त्र विनय क्या कहलाती है?

शान्ति– शास्त्रों को सम्मान के साथ उठाना, रखना और पढ़ना तथा उनकी पूरी देखभाल करना, नाभि के नीचे के शास्त्रों को नहीं ले जाना, घुटनों या पैरों पर रखकर नहीं पढ़ना शास्त्र विनय कहलाती है।

जिज्ञासा ६. विनयाचार किसे कहते हैं?

शान्ति– शास्त्रों की बताई गई विनय की विधि करते हुए उनका अध्ययन करना विनयाचार कहलाता है।

जिज्ञासा ७. क्या शास्त्रों के अतिरिक्त और किसी की विनय नहीं होती?

शान्ति– शास्त्रों के अतिरिक्त देव, गुरु आदि नव-देवताओं की भी होती है तथा संसार में अपने से बड़ों की विनय भी होती है पर यहाँ मोक्ष मार्ग का विषय है।

११. ज्ञान के अंग

करें त्याग कुछ शास्त्र पढ़ें,
ये उपधानाचार कहें।
गुरु श्रुत का बहुमान करें,
यह बहुमानाचार धरें॥

अर्थ– कुछ त्याग करके शास्त्रों का स्वाध्याय करना उपधानाचार कहलाता है। अपने गुरु का तथा श्रुत का बहुमान या सम्मान करते हुए शास्त्रों का अध्ययन करना बहुमानाचार कहलाता है।

भावार्थ– इस छन्द में उपधानाचार और बहुमानाचार का व्याख्यान किया गया है।

जिज्ञासा १. उपधानाचार किसे कहते हैं?

शान्ति– शास्त्र का अध्ययन करते समय जितने समय तक शास्त्र का अध्ययन होगा उतने समय के लिए किसी भी वस्तु का त्याग करके शास्त्र पढ़ना उपधानाचार कहलाता है।

जिज्ञासा २. त्याग किस वस्तु का किया जा सकता है?

शान्ति– किसी भी वस्तु का त्याग किया जा सकता है खाने पीने वाली अथवा भोग-उपभोग की अन्य सामग्री का भी।

जिज्ञासा ३. बहुमानाचार किसे कहते हैं?

शान्ति– जिन गुरुओं के माध्यम से शास्त्र का स्वाध्याय किया जा रहा है अथवा जिन गुरुओं के माध्यम से शास्त्र हमें प्राप्त हुआ है अथवा वह शास्त्र जिसका हम स्वाध्याय करने वाले हैं उसके प्रति आदर सम्मान करना बहुमानचार कहलाता है।

जिज्ञासा ४. क्या गुरु और श्रुत में अन्तर होता है?

शान्ति– जी हाँ! गुरु और श्रुत में अन्तर है। गुरु वे होते हैं जो श्रुत-शास्त्रों के सूत्रों का अर्थ समझाते हैं तथा पूर्व-आचार्यों के अनुसार आई हुई परम्परा का निर्वाह करते हुए नवीन सूत्रों की रचना भी करते हैं किन्तु जो रचना या जो साहित्य होता है उसको श्रुत कहते हैं।

जिज्ञासा ५. क्या उपधानाचार और बहुमानाचार का पालन किए बिना

स्वाध्याय किया जा सकता है ?

शान्ति– जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! क्योंकि अगर हम कुछ त्याग किए बिना स्वाध्याय करते हैं अथवा अपने शास्त्र और गुरु का विनय सम्मान नहीं करेंगे तो ज्ञान की प्राप्ति असम्भव होगी अथवा इस विधि से प्राप्त किया गया ज्ञान कुमार्ग में ले जाएगा।

जिज्ञासा ६. ऐसा देखा जाता है कि बहुत सारे लोग बहुमानाचार का पालन किए बिना ही ज्ञानी बन जाते हैं तो बहुमानाचार करना आवश्यक नहीं हुआ ?

शान्ति– जी नहीं! गुरुओं का आदर सम्मान किए बिना ज्ञान सम्भव नहीं है क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति के चार पद बताए गए हैं–

१. प्रथम पद गुरु महाराज कहते हैं।

२. द्वितीय पद शिष्य अपनी बुद्धि से अर्जित करता है।

३. तृतीय पद उस विषय की ज्ञाता लोगों की सेवा करने पर प्राप्त होता है।

४. चतुर्थ पद काल के व्यतीत होने पर प्राप्त होता है। इसलिए बहुमानाचार आवश्यक है।

१२. ज्ञान के अंग

गुरु श्रुत का ना नाम छिपे,
वो अनिह्नवाचार रहे।
ज्ञान अंग ये आठ रहे,
बिन संयम दुखभार रहे॥

अर्थ– स्वाध्याय करते हुए यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ ऐसे गुरु का या श्रुत का नाम नहीं छिपाना अनिह्नवाचार कहलाता है। ज्ञान के अंग आठ अंग पालन किए बिना असंयमित ज्ञान को दुख का भार बताया गया है।

भावार्थ– इस छन्द में अनिह्नवाचार का व्याख्यान करते हुए कहा जा रहा है कि सम्यग्ज्ञान के आठ अंगों का पालन किए बिना और संयम के बिना ज्ञान दुख रूप भार ही होता है।

जिज्ञासा १. अनिह्नवाचार किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो ज्ञान हमने अर्जित किया है, वह कहाँ से अर्जित किया है, ऐसे उन गुरु का, शास्त्र का या श्रुत का नाम नहीं छिपाना अनिह्नवाचार कहलाता है।

जिज्ञासा २. यदि कोई ज्ञान प्राप्त करेगा तो अपने गुरु और श्रुत का नाम क्यों छिपाएगा ?

शान्ति– गुरु और उनका नाम छिपाने के पीछे यह कारण होता है कि उसमें अपना मान सम्मान कम होने लगता है अपना मान सम्मान बढ़ाने के लिए गुरु और श्रुत का नाम छिपाया जा सकता है।

जिज्ञासा ३. अगर कोई गुरु का या श्रुत का नाम छुपाता है तो इसमें क्या दोष आता है ?

शान्ति– ज्ञान नष्ट होने का दोष आता है और गुरु और श्रुत का नाम छिपाने के दोष नष्ट करना ही तो अनिह्नवाचार है।

जिज्ञासा ४. क्या कोई ऐसा प्रसंग जिनागम में पढ़ने में आता है जिसमें यह स्पष्ट हो कि किसी शिष्य ने अपने गुरु का नाम छिपाया हो ?

शान्ति– जी हाँ! एक कथा स्मृति में है परन्तु किस ग्रन्थ की है यह स्मृति

में नहीं है। कि एक शिष्य बड़े ज्ञानी और सुन्दर थे भक्तों ने उनसे पूछा कि आप इतने ज्ञानी कैसे हैं, किससे ज्ञान प्राप्त किया? तो उन्होंने कहा अपने आप। सो भक्तगण समवसरण से लौटकर आए तो देखा वहाँ पर एक दुखी से मुनिराज बैठे हैं, आखिर क्या हुआ? भक्तगण पुनः समवसरण पहुँचे तो पता चला इन्होंने ज्ञान के विषय में अपने गुरु का नाम छिपाया है उसका यह परिणाम है।

जिज्ञासा ५. क्या सम्यग्दर्शन के आठ अंगों के समान सम्यग्ज्ञान के आठ अंग होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! जैसे शरीर में सम्यग्दर्शन के आठ अंग स्थापित करके समझे थे उसी प्रकार से सम्यग्ज्ञान के अंग भी समझने चाहिए।

जिज्ञासा ६. क्या आठ अंगों को समझे बिना ज्ञान नहीं होगा ?

शान्ति– नहीं! नहीं!! मेरा कहने का तात्पर्य यह नहीं है किन्तु इन्हीं अंगों के माध्यम से सम्यग्ज्ञान को समझने में सरलता होगी।

जिज्ञासा ७. क्या संयम के बिना ज्ञान भार होता है ?

शान्ति– जी हाँ! ज्ञान के विषय में कहा गया है कि ज्ञान संयम के बिना अनर्थ करता है और संयम के साथ पुरुषार्थ को सिद्ध करने वाला होता है।

ज्ञान प्राण है
संयत है तो त्राण
अन्यथा स्वान। (हाइकु-आ.विद्यासागरजी)

जिज्ञासा ८. बिना संयम के ज्ञान दुख भार कैसे हो सकता है ?

शान्ति– संयम के बिना ज्ञान सांसारिक विषयों में, पंचेन्द्रिय के विषयों में और कषाय में प्रवृत्त होता है, जो दुख के कारण हैं इसलिए संसार दुख भार का निमित्त बनता है।

जिज्ञासा ९. क्या सम्यग्ज्ञान के आठ अंग ही होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! स्वाध्याय की अपेक्षा से, समझने की अपेक्षा से और धारण करने की अपेक्षा से आठ अंग बताए गए हैं और अन्य विधि से अन्य अंगों का वर्णन भी अन्य शास्त्रों से समझ लेना चाहिए।

१३. ज्ञान प्राप्ति हेतु आवश्यक

सो सम्यक्त्वाचरण करो,
कुलाचार धर व्यसन हरो।
पाक्षिक श्रावक स्वीकारो,
आठ मूलगुण सिर धारो॥

अर्थ– ज्ञान अभ्यास करने के पूर्व सम्यक्त्वाचरण चारित्र और कुलाचार को धारण करना चाहिए तथा व्यसनों का त्याग करते हुए पाक्षिक श्रावक बनना चाहिए और श्रावक के आठ मूलगुणों को धारण करना चाहिए।

भावार्थ– ज्ञान प्राप्त करने के पूर्व सम्यक्त्वाचरण चारित्र, कुलाचार, पाक्षिक श्रावक और आठ मूलगुण सम्बन्धी संकल्प करते हुए व्यसनों का त्याग करने का उपदेश इस छन्द में दिया गया है।

जिज्ञासा १. सम्यक्त्वाचरण चारित्र क्या कहलाता है?

शान्ति– मिथ्यादर्शन का त्याग करके जब जिनशासन स्वीकार किया जाता है तो उसके अनुरूप अपने सदाचार को सम्यक बनाना ही सम्यक्त्वाचरण चारित्र कहलाता है।

जिज्ञासा २. कुलाचार किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस कुल में जीव का जन्म होता है उस कुल की परम्पराओं का निर्वाह करना कुलाचार कहलाता है।

जिज्ञासा ३. जैनों का कुलाचार क्या कहलाता है?

शान्ति– जैन कुल में पैदा होते ही साथ जैन कुल की परम्पराओं का निर्वाह करना जैन कुलाचार कहलाता है।

जिज्ञासा ४. जैन कुलाचार में क्या-क्या करना होता है?

शान्ति– जैन कुल में पैदा होते ही नित्य देव दर्शन करना, अनछने पानी का त्याग करना और रात्रि भोजन का त्याग करना यह तीन कुलाचार माने जाते हैं।

जिज्ञासा ५. व्यसन किसे कहते हैं?

शान्ति– जिन आदतों के कारण अनुचित मार्ग पर अग्रसर होते हैं उन आदतों को व्यसन कहते हैं।

जिज्ञासा ६. व्यसन कितने होते हैं?

शान्ति— व्यसन सात होते हैं–१. जुआ खेलना २. मांस खाना ३. शराब पीना या मद्य पान करना ४. वेश्या गमन करना ५. परस्त्री रमण करना ६. शिकार करना और ७. चोरी करना।

(दोहा)

जुआ खेलना मांस मद, वेश्यागमन शिकार।
चोरी पररमणी रमण, सातों व्यसन निवार॥

जिज्ञासा ७. पाक्षिक श्रावक किसे कहते हैं?

शान्ति— जो संसारी प्राणी मिथ्या का त्याग करके जिनशासन को स्वीकार करके जिनशासन का पक्ष लेता है, किन्तु त्यागी व्रती नहीं बनता उसको पाक्षिक श्रावक कहते हैं।

जिज्ञासा ८. श्रावक के मूलगुण किन्हें कहते हैं?

शान्ति— श्रावक त्यागी व्रती बने बिना जैन कुल में जन्म लेकर जिन गुणों का पालन करता है उन गुणों को श्रावक के मूलगुण कहते हैं।

जिज्ञासा ९. श्रावक के मूलगुण कितने होते हैं?

शान्ति— श्रावक के मूलगुण आठ होते हैं।

जिज्ञासा १०. श्रावक के आठ मूलगुण कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति— श्रावक के आठ मूलगुण निम्न होते हैं–

प्रथम—पंच उद्दम्बर फलों का त्याग एवं मद्य, मांस, मधु का त्याग करना।

द्वित्तीय—१. पंच उदम्बर फलों का त्याग करना २. मद्य का त्याग करना ३. मांस का त्याग करना ४. मधु का त्याग करना ५. पंच परमेष्ठी की आराधना करना ६. रात्रि भोजन का त्याग ७. अनछने पानी का त्याग करना और ८. दया-अहिंसा धर्म का अनुपालन करना।

जिज्ञासा ११. हमने तो स्वरूपाचरण चारित्र का नाम सुना है किन्तु आप सम्यक्त्वाचरण चारित्र का उल्लेख कर रहे हैं यह क्या है?

शान्ति— अरे भाई! स्वरूपाचरण चारित्र तो बहुत ऊँची वस्तु है किन्तु उसे प्राप्त करने का जो प्रथम चरण है उसी को सम्यक्त्वाचरण चारित्र कहते हैं।

१४. चारित्र बिना ज्ञान की असमर्थता

केवलज्ञान मनःपर्यय,
बिन चारित्र न हुए उदय।
सो दो विध धर सकल-विकल,
गृहियों का चारित्र विकल॥

अर्थ– केवलज्ञान और मनःपर्ययज्ञान बिना चारित्र के कभी भी प्राप्त नहीं हो सकते इसलिए दो प्रकार का चारित्र कहा गया है। जिसमें प्रथम गृहस्थों का विकल चारित्र होता है और मुनियों का सकल चारित्र होता है।

भावार्थ– चारित्र के दो भेद बताते हुए कहा जा रहा है कि मुनियों का सकल चारित्र होता है और गृहस्थों का विकल चरित्र होता है। चारित्र के उपरान्त ही मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान की उत्पत्ति सम्भव है।

जिज्ञासा १. केवलज्ञान और मनः पर्ययज्ञान क्या बिना चारित्र के नहीं हो सकते ?

शान्ति– जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! ये दोनों ज्ञान बिना चारित्र के होना असम्भव है।

जिज्ञासा २. चारित्र के बिना ये दोनों ज्ञान उत्पन्न ना होने का क्या कारण है ?

शान्ति– चारित्र के उपरान्त ही चारित्रवान ज्ञान होते हैं इसलिए ये दोनों ज्ञान बिना चारित्र के असम्भव है।

जिज्ञासा ३. चारित्र कितने प्रकार का होता है ?

शान्ति– चारित्र दो प्रकार का होता है–एक विकल चारित्र दूसरा सकल चारित्र।

जिज्ञासा ४. विकल चारित्र किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस चारित्र में चारित्र की पूर्णता नहीं होती है उसे विकल चारित्र कहते हैं।

जिज्ञासा ५. विकल चारित्र कौन-कौन से गुणस्थान में होता है ?

शान्ति– विकल चारित्र पंचम गुणस्थान में होता है।

जिज्ञासा ६. सकल चारित्र किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस चारित्र में चारित्र की पूर्णता होती है उसे सकल चारित्र कहते हैं।

जिज्ञासा ७. विकल चारित्र किसके होता है ?

शान्ति– विकल चारित्र गृहस्थों के होता है तथा आर्यिकाओं के भी यही चारित्र होता है।

जिज्ञासा ८. सकल चारित्र किसके होता है ?

शान्ति– छठवें गुणस्थान स्थान से लेकर ऊपर सभी मुनिराजों के और अरिहन्त-सिद्धों के सकल चारित्र होता है।

जिज्ञासा ८. प्रथम कौन सा चारित्र धारण करना चाहिए ?

शान्ति– प्रथम सकल चारित्र धारण करने का उपदेश दिया जाता है।

जिज्ञासा ८. आपने प्रथम सकल चारित्र क्यों कहा ?

शान्ति– चूँकि चारित्र के विकास का क्रम होने से प्रथम विमल चारित्र कहा है।

१५. नैष्टिक श्रावक का वर्णन

अणु-गुण-शिक्षा व्रत के दल,
एकदेश-अणुव्रत मंगल।
अणुव्रत पाँच शीलव्रत सात,
बारह व्रत नैष्ठिक के साथ॥

अर्थ— गृहस्थों के विकल चारित्र का व्याख्यान करते हुए कहा जा रहा है कि अणुव्रत, गुणव्रत और शिक्षाव्रत के समूह एक देश चारित्र या देशसंयम मंगलमय कहलाते हैं। जिसमें पाँच अणुव्रत और सात शीलव्रत कुल बारह व्रत नैष्टिक श्रावक के होते हैं।

भावार्थ— विकल चरित्र का व्याख्यान करते हुए पाँच अणुव्रत तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत आदि बारह व्रत नैष्टिक श्रावक के होते हैं, इस प्रकार का उपदेश दिया जा रहा है।

जिज्ञासा १. अणुव्रत किसे कहते हैं?

शान्ति— पूर्ण रूप से पापों का त्याग नहीं कर पाना या पापों का आंशिक त्याग करना अणुव्रत कहलाते हैं।

जिज्ञासा २. अणुव्रत कितने होते हैं?

शान्ति— अणुव्रत पाँच होते हैं, इनका विस्तार आगे किया जाने वाला है।

जिज्ञासा ३. गुणव्रत किसे कहते हैं?

शान्ति— जो व्रत हमें गुणों की ओर आकृष्ट करते हैं, वे गुणव्रत कहलाते हैं, इनका विस्तार भी आगे किया जाने वाला है।

जिज्ञासा ४. शिक्षाव्रत किसे कहते हैं?

शान्ति— जो व्रत हमें मुनि बनने की शिक्षा देते हैं, उन्हें शिक्षाव्रत कहते हैं।

जिज्ञासा ५. शीलव्रत किसे कहते हैं?

शान्ति— गुणव्रत और शिक्षाव्रत मिलकर शीलव्रत कहलाते हैं अथवा जो व्रत हमें अपने आत्म स्वभाव की ओर ले जाते हैं वो शीलव्रत कहलाते हैं।

जिज्ञासा ६. शीलव्रत कितने होते हैं?

शान्ति— तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत कुल मिलाकर सात शीलव्रत होते हैं।

जिज्ञासा ७. नैष्ठिक शब्द से क्या तात्पर्य है ?

शान्ति— आपको पहले भी बताया जा चुका है कि श्रावक तीन प्रकार के होते हैं पाक्षिक, नैष्ठिक और साधक। यहाँ पर नैष्ठिक कहने का तात्पर्य है कि श्रावक बारह व्रतों को लेकर ग्यारह प्रतिमाओं की साधना करने वाले होते हैं अर्थात् जो ग्यारह प्रतिमाओं के साधक श्रावक होते हैं उन्हें नैष्ठिक श्रावक कहते हैं।

जिज्ञासा ८. प्रतिमा किसे कहते हैं ?

शान्ति— श्रावक के द्वारा विशेष व्रतों का, नियमों का संकल्प लेना ही प्रतिमा व्रत कहलाते हैं।

जिज्ञासा ९. प्रतिमा व्रत कितने होते हैं ?

शान्ति— प्रतिमा व्रत ग्यारह होते हैं।

जिज्ञासा १०. प्रतिमा व्रत ग्यारह कौन-कौन से होते हैं ?

शान्ति— प्रतिमा व्रत ग्यारह निम्न होते हैं–

१.दर्शन प्रतिमा—भव-तन भोग विरक्त, पंचपरमेष्ठियों में अनुरक्त, व्रती सम्यग्दृष्टि।

२.व्रत प्रतिमा—निःशल्य, निरतिचार बारह व्रतों का पालक।

३.सामायिक प्रतिमा—चतुर्दिग्वंदना कर संध्याकालों में एकासन से त्रियोग शुद्ध कर समता रखना।

४.प्रौषधोपवास प्रतिमा—अष्टमी-चतुर्दशी पर्व के दिनों में यथाशक्ति शुभ ध्यान में लीन होकर उपवास करना।

५.सचित्त-त्याग प्रतिमा—सचित्त वनस्पति खाने का त्याग।

६.रात्रिभोजनत्याग प्रतिमा—नवकोटि से चारों प्रकार के भोजन का रात्रि में त्याग करना।

७.ब्रह्मचर्य प्रतिमा—नव कोटि से कामसेवन से विरक्त होना।

८.आरम्भत्याग प्रतिमा—आरम्भ के कार्यों से विरक्त होना।

९.परिग्रहत्याग प्रतिमा—बाह्य परिग्रह में मूर्च्छा का त्याग करना।

१०.अनुमतित्याग प्रतिमा—आरम्भ-परिग्रह व सांसारिक विषयों की अनुमति देने का त्याग करना।

११.उद्दिष्टत्याग प्रतिमा—गृहत्याग करना, गुरुशरण में रहना, मात्रखण्डवस्त्र धारण करना, भिक्षावृत्ति करना।।(र.श्रा.पृ.१३६-१४७)

१६. अहिंसा अणुव्रत का वर्णन

त्रस हिंसा नव कोटि से,
जहाँ तजें भव भीति से।
थावर हिंसा सीमित हो,
प्रथम अहिंसा अणुव्रत वो॥

अर्थ— अहिंसा अणुव्रत का वर्णन करते हुए कहा जा रहा है कि त्रस जीवों की अर्थात् दो-इन्द्रिय, तीन-इन्द्रिय, चार-इन्द्रिय और पंच-इन्द्रिय जीवों की हिंसा नव कोटि से अर्थात् मन, वचन, काय और कृत, कारित, अनुमोदना से त्याग करना क्योंकि ये दुख के कारण होते हैं तथा स्थावर हिंसा भी सीमित करना ही प्रथम अहिंसा अणुव्रत कहलाता है।

भावार्थ— संसार से डर कर के त्रस हिंसा का नव कोटि से त्याग करना तथा स्थावर हिंसा को सीमित करते हुए अपना जीवन यापन करना ही अहिंसा अणुव्रत कहलाता है।

जिज्ञासा १. त्रस हिंसा किसे कहते हैं?

शान्ति— दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा करना त्रस हिंसा कहलाती है।

जिज्ञासा २. नव-कोटि क्या कहलाता है?

शान्ति— मन, वचन और काय तथा कृत, कारित और अनुमोदना को आपस में गुणा करने पर नव-कोटि कहलाते हैं।

जिज्ञासा ३. भव-भीति क्या कहलाती है?

शान्ति— हिंसा का त्याग संसार से भयभीत होकर करना भव-भीति कहलाती है अथवा संसार से भयभीत रहना, संसार के दुखों से भयभीत रहना और संसार के भ्रमण से भयभीत रहना भव-भीति कहलाती है।

जिज्ञासा ४. स्थावर हिंसा किसे कहते हैं?

शान्ति— एक इन्द्रिय जीवों की हिंसा करना स्थावर हिंसा कहलाती है अर्थात् पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और

वनस्पतिकायिक जीवों की हिंसा करना स्थावर हिंसा कहलाती है।

जिज्ञासा ५. यहाँ पर स्थावर जीवों की हिंसा सीमित करने का उपदेश क्यों दिया है?

शान्ति– चूँकि यहाँ पर अणुव्रत का प्रसंग होने पर पूर्ण हिंसा का त्याग नहीं हो सकता अतः स्थावर हिंसा को सीमित तो किया ही जा सकता है।

जिज्ञासा ६. अहिंसा अणुव्रत को प्रथम क्रम में क्यों रखा है?

शान्ति– अहिंसा अणुव्रत को प्रथम क्रम में रखने का तात्पर्य यह है कि यही धर्म का मूल है शेष जितने भी त्याग अथवा व्रत या धर्म होते हैं वे सब अहिंसा की रक्षा के लिए ही होते हैं। (मू.चा.)

जिज्ञासा ७. आपका कहने का तात्पर्य है कि अहिंसा ही मूल धर्म है?

शान्ति– जी हाँ! आपने हमारा ही नहीं बल्कि जिनशासन का भाव भी समझ लिया है। ''अहिंसा परमो धर्मः''।

१७. सत्य अणुव्रत वर्णन

स्थूल झूठ ना खुद बोलें,
ना बुलवाने मुख खोलें।
विपद सत्य प्रतिबन्धित हो,
सत्य दूसरा अणुव्रत वो॥

अर्थ– स्थूल झूठ ना स्वयं बोलना ना ही दूसरों से बुलवाना तथा ऐसा सत्य जो किसी को विपत्ति में डाल दे उसका भी त्याग करना दूसरा सत्य अणुव्रत कहलाता है।

भावार्थ– सत्य अणुव्रत की व्याख्या करते हुए कहा जा रहा है कि स्थूल अर्थात् मोटा-मोटा झूठ ना ही स्वयं बोले ना ही दूसरों से बुलवाएँ तथा विपत्ति दायक सत्य भी प्रतिबन्धित होना चाहिए।

जिज्ञासा १. स्थूल झूठ किसे कहते हैं?

शान्ति– वह झूठ जो स्पष्ट रूप से दिखाई देता हो अथवा मोटा-मोटा हो उसे स्थूल झूठ कहते हैं।

जिज्ञासा २. क्या झूठ सूक्ष्म भी होता है?

शान्ति– जी हाँ! पूर्ण रूप से अणुव्रत में झूठ का त्याग नहीं हो सकता इसलिए यहाँ स्थूल झूठ का त्याग आपेक्षित है।

जिज्ञासा ३. दूसरों से झूठ बुलवाने में क्या बाधा आती है?

शान्ति– दूसरों से झूठ बुलवाने में अहिंसा धर्म नष्ट होता है अतः इसका भी त्याग करना अनिवार्य है।

जिज्ञासा ४. विपद सत्य क्या कहलाता है?

शान्ति– ऐसा सत्य जो दूसरों को विपत्ति में, परेशानी में या बाधा में डाल दे उसको विपद सत्य कहते हैं अथवा विपत्ति देने वाला सत्य विपद सत्य कहलाता है।

१८. अचौर्य अणुव्रत वर्णन

रखी गिरी भूली वस्तु,
बिना दान दी पर वस्तु।
खुद ना लें ना दें पर को,
है अचौर्य अणुव्रत वो॥

अर्थ– रखी हुई, गिरी हुई, भूली हुई या बिना दी गई वस्तु को न स्वयं लेना न ही किसी अन्य को देना यह अचौर्य अणुव्रत कहलाता है।

भावार्थ– अचौर्य अणुव्रत का स्वरूप बताते हुए कहा जा रहा है कि रखी, गिरी, भूली और बिना दी गई वस्तु को न स्वयं लेना न ही दूसरों को देना अचौर्य अणुव्रत कहलाता है।

जिज्ञासा १. अचौर्य अणुव्रत किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस व्रत में चोरी का स्थूल रूप से त्याग किया जाता है उसे अचौर्य अणुव्रत कहते हैं।

जिज्ञासा २. अचौर्य अणुव्रत का और क्या स्वरूप है?

शान्ति– रखी हुई, गिरी हुई, भूली हुई या बिना दी गई वस्तु को न स्वयं लेना न दूसरों को देना अचौर्य अणुव्रत कहलाता है।

जिज्ञासा ३. जब बहुत आवश्यकता हो तो अगर किसी पर वस्तु को ले लेना क्या इसमें भी दोष लगता है?

शान्ति– जी हाँ! शास्त्रों में ऐसा उल्लेख है की प्राण कंठ गत होने पर भी अपने व्रत नहीं तोड़ना चाहिए।

जिज्ञासा ४. चोरी करने से हिंसा कैसे होती है?

शान्ति– चोरी करने से सामने वाले जीव के आकुलता-व्याकुलता वाले परिणाम होते हैं जो हिंसा के लिए निमित्त बनते हैं अतः चोरी से हिंसा होती है।

१९. ब्रह्मचर्य अणुव्रत का स्वरूप

परनारी के निकट कभी,
ना भेजें ना जाएँ कभी।
निजनारी तक सीमित हो,
ब्रह्मचर्य का अणुव्रत वो॥

अर्थ– परनारी के समक्ष कुशील के हेतु न जाना, न ही किसी को भेजना तथा निजनारी तक ही सीमित रहना ब्रह्मचर्य अणुव्रत कहलाता है।

भावार्थ– कुशील के निमित्त से परस्त्री के पास न जाना, न ही किसी को भेजना तथा निजनारी में संतुष्ट रहना ब्रह्मचर्य अणुव्रत का स्वरूप है।

जिज्ञासा १. परनारी कहने से क्या तात्पर्य है?

शान्ति– जिस नारी के साथ विवाह के बन्धन में गृहस्थ बँधता है उसको स्वनारी कहते हैं शेष सब उसके लिए परनारी ही होती हैं।

जिज्ञासा २. क्या उनसे बातचीत करना भी ब्रह्मचर्य व्रत में दोष होगा?

शान्ति– जी नहीं! केवल भोग-वासना के निमित्त से उन पर कुदृष्टि डालना गलत है, बातचीत करने में कोई दोष उत्पन्न नहीं होता।

जिज्ञासा ३. परनारी के पास किसी को भेजने में भी दोष लगता है?

शान्ति– यदि भोग-वासना के निमित्त से किसी को परस्त्री के पास भेजा जाता है तो ब्रह्मचर्य व्रत में दोष लगता है।

जिज्ञासा ४. निजनारी तक सीमित होने से क्या तात्पर्य है?

शान्ति– अपनी भोग-वासना को अपनी स्त्री तक ही सीमित करना चाहिए।

जिज्ञासा ५. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन नहीं करने पर हिंसा कैसे होती है?

शान्ति– एक बार स्त्री के साथ रतिक्रिया करने पर नवकोटि अर्थात् नौ करोड़ जीवों की हिंसा होती है।

जिज्ञासा ६. फिर अपनी स्त्री के साथ भी हिंसा होगी?

शान्ति– जी हाँ! आपने सत्य कहा किन्तु ब्रह्मचर्य अणुव्रत में पूर्ण रूप से स्त्री का त्याग सम्भव नहीं है इसलिए इतनी हिंसा को सीमित कर बाकी अन्य हिंसा का पूर्ण रूप से त्याग करना ही चाहिए।

जिज्ञासा ७. बिना विवाह के स्त्रियों से सम्बन्ध रखना क्या कहलाएगा?

शान्ति– यह तो शुद्ध पाप या व्यसन कहलाएगा। जो चारित्रिक धर्म का भी विनाश है जो अवश्य ही नियंत्रित होना चाहिए।

२०. परिग्रह परिमाण अणुव्रत स्वरूप

धन धान्यादिक दस परिग्रह,
कर सीमित बहु ना संग्रह।
इच्छा-मूर्च्छा सीमित हो,
परिग्रह परिमाण अणुव्रत वो॥

अर्थ— धन-धान्यादि बाह्य परिग्रह को सीमित कर ज्यादा नहीं रखते हुए इच्छा-मूर्च्छा को सीमित करना परिग्रह परिमाण अणुव्रत है।

भावार्थ— परिग्रह परिमाण अणुव्रत में दस प्रकार के बाह्य परिग्रह को सीमित कर ज्यादा नहीं रखना तथा इच्छा-मूर्च्छा को भी सीमित करना।

जिज्ञासा १. बाह्य परिग्रह किसे कहते हैं?

शान्ति— शरीर और आत्मा से भिन्न वस्तुएँ बाह्य परिग्रह कहलाती हैं।

जिज्ञासा २. बाह्य परिग्रह कितने प्रकार के होते हैं?

शान्ति— बाह्य परिग्रह दस प्रकार के होते हैं-

१. **क्षेत्र**-खेत और खलिहान स्थान आदि।
२. **वास्तु**—मकान, दुकान और मन्दिर आदि।
३. **हिरण्य**—चाँदी तथा चाँदी से बने आभूषण आदि।
४. **स्वर्ण**—सोना तथा सोने से बने आभूषण मुद्राएँ आदि।
५. **धन**—गाय, बैल और भैंस आदि।
६. **धान्य**—गेहूं, बाजरा, चना और जौ आदि।
७. **दासी**—पत्नी, नौकरानी और सेविकाएं आदि।
८. **दास**—पति, नौकर और सेवक आदि।
९. **कुप्य**—वस्त्र और शृंगार सामग्री आदि।
१०. **भाण्ड**—बर्तन और मसाले आदि। (त.सू. ७-२९)

जिज्ञासा ३. क्या परिग्रह सीमित करने पर पाप समाप्त हो जाता है?

शान्ति— जी नहीं! परिग्रह सीमित करने पर पाप समाप्त नहीं होता किन्तु पाप भी सीमित हो जाता है।

जिज्ञासा ४. इच्छा-मूर्च्छा सीमित करने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति— जब अन्दर में इच्छा या वस्तु के प्रति मूर्च्छा होती है तभी परिग्रह एकत्रित करने की भावना होती है और शास्त्रों में मूर्च्छा को ही परिग्रह कहा गया है। अतः इच्छा-मूर्च्छा को सीमित करना चाहिए। (त.सू. ७-१७)

२१. गुणव्रत का स्वरूप

अणुव्रत का जो उपकारी,
गुणव्रत तीन भेद धारी।
गुणव्रत में दिग्व्रत पहला,
दिशा सीम कर बाह्य न जा॥

अर्थ– जो व्रत अणुव्रत के सहयोग करते हैं उन्हें गुणव्रत कहते हैं। तीन प्रकार के गुणव्रत का पहला भेद दिग्व्रत होता है जिसमें दिशाओं की सीमा बनाकर उसके बाहर नहीं जाना होता है।

भावार्थ– गुणव्रत का स्वरूप बताते हुए कहा जा रहा है कि जो अणुव्रतों का सहयोगी होता है, उसे गुणव्रत कहते हैं। जिसके तीन भेदों में पहला भेद है दिग्व्रत जिसमें दिशाओं की सीमा बनाकर उससे बाहर नहीं जाना।

जिज्ञासा १. गुणव्रत, अणुव्रत का उपकार कैसे करते हैं?

शान्ति– गुणव्रत का पालन करने पर अणुव्रत निर्दोष पलते हैं अतः अणुव्रत के उपकारी माने जाते हैं।

जिज्ञासा २. गुणव्रत कितने प्रकार के होते हैं?

शान्ति– गुणव्रत तीन प्रकार के होते हैं–
१. दिग्व्रत २. देशव्रत और ३. अनर्थदण्डव्रत। (त.सू. ७-२१)

जिज्ञासा ३. दिग्व्रत क्या कहलाता है?

शान्ति– जिसमें दसों दिशाओं की सीमा बनाकर के उससे बाहर जाने का त्याग होता है उसे दिग्व्रत कहते हैं।

जिज्ञासा ४. गुणव्रतों का पालन करने पर अहिंसा धर्म कैसे पलता है?

शान्ति– गुणव्रतों का पालन करने पर उसके बाहर पूर्ण रूप से त्याग होने पर अहिंसा धर्म पलने लगता है तथा सीमाएँ बनाने पर अन्दर भी पलता है।

जिज्ञासा ५. अगर कभी आवश्यकता पड़े तो क्या सीमाओं का उल्लंघन किया जा सकता है?

शान्ति– नहीं! क्योंकि नियम बनाकर उनका उल्लंघन करना ही पाप है।

२२. देशव्रत, अनर्थदण्डव्रत का स्वरूप

उसमें काल क्षेत्र कम कर,
धरें देशव्रत जीवन भर।
बिना प्रयोजन कर्म तजें,
अनर्थदण्ड व्रत पाँच गहें॥

अर्थ— गुणव्रत में बनाई गई सीमाओं के भीतर और भी सीमाओं को काल और क्षेत्र के द्वारा कम करते हुए जीवन भर पालन करना देशव्रत कहलाता है तथा बिना प्रयोजन किए जाने वाले कर्मों का त्याग करना पाँच प्रकार का अनर्थदण्डव्रत कहलाता है।

भावार्थ— देशव्रत का स्वरूप बतलाते हुए कहा जा रहा है कि दिगव्रत में बनाई गई सीमाओं में क्षेत्र और काल की मर्यादाओं के अनुसार और कम करना देशव्रत कहलाता है तथा बिना प्रयोजन के कार्यों का त्याग करना अनर्थदण्डव्रत कहलाता है।

जिज्ञासा १. दिग्व्रत काल कैसे कम किया जाता है?

शान्ति— जैसे कोई सीमा कुछ समय के लिए बनाई है उस समय को भी कम करना काल को कम करना कहलाता है।

जिज्ञासा २. दिगव्रत में क्षेत्र कैसे कम होता है?

शान्ति— जिस क्षेत्र तक हमने सीमाएँ बनाई हैं उसके और अन्दर सीमाएँ बना लेना दिग्व्रत में क्षेत्र कम करना कहलाता है।

जिज्ञासा ३. क्या देशव्रत जीवन भर के लिए होते हैं?

शान्ति— जी हाँ! देशव्रतों को ही नही बल्कि सभी व्रतों को जीवन भर के लिए स्वीकार किया जाता है।

जिज्ञासा ४. बिना प्रयोजन कर्म क्या कहलाते हैं?

शान्ति— जिन कार्यों का कोई उद्देश्य नहीं होता है, तथा जो पाप कार्य होते हैं, उनको बिना प्रयोजन कार्य कहते हैं।

जिज्ञासा ५. अनर्थदण्ड व्रत क्या कहलाता है?

शान्ति— प्रयोजन रहित पापवर्धक क्रियाओं का त्याग करना अनर्थदण्डव्रत कहलाता है।

जिज्ञासा ६. अनर्थदण्ड क्या कहलाता है ?

शान्ति— जो कार्य हम करते जरूर हैं किन्तु उनका कोई प्रयोजन नहीं होता फिर भी हमें उसका फल भोगना पड़ता है, उसको अनर्थदण्ड कहते हैं।

जिज्ञासा ७. अनर्थदण्ड कितने प्रकार के होते हैं ?

शान्ति— अनर्थदण्ड पाँच प्रकार के होते हैं–

१. पापोपदेश—हिंसा आरम्भ आदि पाप के कार्यों का उपदेश देना।

२. हिंसादान—तलवार आदि हिंसा के उपकरण देना।

३. अपध्यान—दूसरे का बुरा विचार करना।

४. दुःश्रुति—राग द्वेष को बढ़ाने वाले खोटे शास्त्रों का सुनना और

५. प्रमादचर्या—बिना प्रयोजन यहाँ वहाँ घूमना तथा पृथ्वी आदि खोदना।

जिज्ञासा ८. देशव्रत और अनर्थदण्डव्रत इनसे अहिंसा धर्म कैसे पलता है ?

शान्ति— देशव्रत और अनर्थदण्ड व्रत से हम अपनी पाप क्रियाओं पर नियंत्रण रखते हैं, इसी कारण से अहिंसा धर्म पलने लगता है।

२३. शिक्षा व्रत का स्वरूप

मुनिव्रत की शिक्षा दें जो,
चार तरह शिक्षाव्रत वो।
पहला सामायिक करना,
पाप त्याग समता धरना॥

अर्थ– मुनिव्रत पालन की शिक्षा देने वाले चार प्रकार के शिक्षाव्रत हैं। पाप त्याग करके समता धारण करना पहला सामायिक शिक्षाव्रत है।

भावार्थ– शिक्षाव्रत का स्वरूप बताते हुए कहा जा रहा है कि जो व्रत मुनिव्रत पालन करने की शिक्षा देते हैं वह शिक्षाव्रत कहलाते हैं जिसके चार भेदों में पहला भेद है सामायिक।

जिज्ञासा १. मुनिव्रत की शिक्षा कहने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति– जो व्रत पालन करते हुए हम मुनिव्रत की भावना करें अथवा जिन व्रतों को देखकर हमें मुनि बनने की भावना उत्पन्न हो उसे शिक्षाव्रत कहते हैं।

जिज्ञासा २. शिक्षाव्रत कितने प्रकार के होते हैं?

शान्ति– शिक्षाव्रत चार प्रकार के होते हैं–
१. सामायिक २. प्रोषधोपवास ३. भोग-उपभोग परिमाण और ४. अतिथिसंविभाग।

जिज्ञासा ३. सामयिक किसे कहते हैं?

शान्ति– सभी प्रकार के आर्तध्यान और रौद्रध्यान का त्याग करते हुए सुख-दुख आदि में तथा सभी जीवों में समता रखते हुए पापों का त्याग करना सामायिक कहलाता है।

जिज्ञासा ४. समता किसे कहते हैं?

शान्ति– समानता के भाव या साम्यभाव को समता कहते हैं अथवा जिस कार्य में हम राग-द्वेष की परिणति को त्याग देते हैं उसको समता कहते हैं।

जिज्ञासा ५. क्या पाप का त्याग किए बिना समता धारण नहीं की जा सकती?

शान्ति– जी नहीं! दोनों काम एक साथ नहीं हो सकते अतः पाप त्याग करके समता धारण करना ही सामायिक है।

२४. प्रौषध, भोग-उपभोग स्वरूप

पर्व अष्टमी चौदस को,
प्रौषध का उपवास करो।
भले रहे आवश्यकतम,
करें भोग-उपभोग नियम॥

अर्थ— अष्टमी और चतुर्दशी को प्रौषध पर्व कहा जाता है। इन पर्वों में उपवास करने को प्रौषध-उपवास कहते हैं। जीवन में उपयोग में आने वाली भोग तथा उपभोग की वस्तुओं को आवश्यक होते हुए भी सीमित करना भोग-उपभोग नियम व्रत कहलाता है।

भावार्थ— इस छन्द में प्रौषध-उपवास और भोग-उपभोग नियम के बारे में व्याख्यान किया गया है।

जिज्ञासा १. पर्व किसे कहते हैं?

शान्ति— वे तिथियाँ अथवा वह अवसर अथवा वह काल जिसमें कुछ परिवर्तन होता रहता है तथा जो हमारे जीवन पर विशेष प्रभाव डालते हैं उन्हें पर्व कहते हैं। पर्व, संधि, त्यौहार और उत्सव यह सब एकार्थवाची हैं।

जिज्ञासा २. अष्टमी-चतुर्दशी को पर्व कहने से क्या तात्पर्य है?

शान्ति— धर्म के अनुसार और विज्ञान के अनुसार भी इन तिथियों में विशेष परिवर्तन होता है इसलिए इन्हें जैन धर्म के अनुसार शाश्वत पर्व माने गए हैं। इन्हीं पर्वों को प्रौषध कहते हैं।

जिज्ञासा ३. प्रौषध में उपवास आवश्यक है क्या?

शान्ति— जी हाँ! संसारी प्राणियों को संसार के कार्यों से पूर्ण मुक्ति तो नहीं मिली किन्तु इन पर्वों में आरम्भ आदि के कार्यों का त्याग करके उपवास के साथ धर्म-आराधना तथा आत्मा-आराधना करनी चाहिए।

जिज्ञासा ४. क्या प्रौषध में भी भेद होते हैं?

शान्ति— जी हाँ! प्रौषध तीन प्रकार के होते हैं-

१. उत्तम—सप्तमी, नवमी और तेरस, पूर्णिमा या अमावस्या को

एकासन तथा अष्टमी और चतुर्दशी को उपवास करना प्रौषध की उत्तम विधि है।

२. मध्यम—मध्यम प्रौषध विधि के बहुत भेद हैं अतः अन्य ग्रन्थों से अध्ययन कर समझें।

३. जघन्य—जघन्य प्रौषध विधि के बहुत भेद हैं अतः अन्य ग्रन्थों से अध्ययन कर समझें।

जिज्ञासा ५. भोग-उपभोग नियम किसे कहते हैं?

शान्ति— जीवन में उपयोग में आने वाली भोग और उपभोग की सामग्री का सीमांकन करना या उन्हें सीमित करना भोग और उपभोग नियम कहलाता है।

जिज्ञासा ६. भोग किसे कहते हैं?

शान्ति— जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुएँ जो एक बार उपयोग करने के बाद व्यर्थ हो जाती हैं उन्हें भोग सामग्री कहते हैं।

जिज्ञासा ७. उपभोग किसे कहते हैं?

शान्ति— जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुएँ जो बार-बार उपयोग में लाई जा सकती हैं उन्हें उपभोग सामग्री कहते हैं।

जिज्ञासा ८. जो चीजें उपयोग में आती हैं फिर उनकी मर्यादा कैसे बनाई जा सकती है?

शान्ति— वस्तुओं का प्रयोग कम से कम करके अपना जीवन यापन करने से उनकी मर्यादा बनाई जा सकती है। इसी को भोग-उपभोग नियम कहते हैं।

२५. अतिथिसंविभाग व्रत स्वरूप व अतिचार

मुनि की पूर्ण व्यवस्था कर,
अतिथि-संविभाग व्रत धर।
पाँच-पाँच तज व्रत अतिचार,
अंत समय सल्लेखन धार॥

अर्थ– नैष्टिक श्रावक को मुनियों की पूरी व्यवस्था बनाना चाहिए इस व्रत को अतिथि-संविभाग व्रत कहते हैं। सभी व्रतों के पाँच-पाँच दोष होते हैं, उन्हें त्यागते हुए जीवन के अंत समय में सल्लेखना के व्रत स्वीकार करने चाहिए।

भावार्थ– इस छन्द में अतिथि-संविभाग व्रत का स्वरूप बतलाते हुए अणुव्रत के अतिचार (दोष) को त्यागने का तथा अंत समय में सल्लेखना धारण करने का उपदेश दिया जा रहा है।

जिज्ञासा १. मुनि तो पूरे त्यागी होते हैं फिर उनकी क्या व्यवस्था करना?

शान्ति– अरे भाई! मुनि तो त्यागी होते हैं किन्तु जब तक उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न नहीं हो जाता तब तक उनकी पूरी व्यवस्थाएँ श्रावक को करनी चाहिए।

जिज्ञासा २. मुनियों की व्यवस्थाएँ क्या-क्या करनी चाहिए ?

शान्ति– मुनियों की निम्न व्यवस्थाएँ करनी चाहिए–

१. अनुकूल आहार की व्यवस्था करना।
२. उचित विहार की व्यवस्था करना।
३. निहार (शौच आदि) की व्यवस्था करना।
४. रहने के लिए वसतिका या धर्मशाला आदि की व्यवस्था करना।
५. स्वाध्याय या धर्म ध्यान की पूरी व्यवस्था करना।
६. रोगी होने पर उचित उपचार आदि की व्यवस्था करना।
७. अनुकूल-निर्दोष वैयावृत्ति करना, यह सब कर्तव्य श्रावक के होते हैं।
८. पिच्छी कमण्डलु और शास्त्र आदि उपकरणों की व्यवस्था करना।
९. संयम की भावना को दृढ़ करना।

जिज्ञासा ३. अतिथि किसे कहते हैं ?

शान्ति– मुनियों को ही अतिथि कहा गया है अर्थात् जिनकी ना आने की तिथि होती है ना जाने की तिथि होती है उनको अतिथि कहते हैं। मुनि चातुर्मास में एक स्थान पर सरोवर की भाँति ठहरते हैं किन्तु अन्य समय में झरने की भांति विचरण करते रहते हैं, अतः उन्हें अतिथि कहते हैं।

जिज्ञासा ४. अतिथि-संविभाग कहने का क्या तात्पर्य है ?

शान्ति– श्रावक अपना जीवन निर्वाह करते हुए उसी विधि में से मुनियों का विभाग बनाते हुए वैयावृत्ति करता है, व्यवस्था करता है इसी का नाम अतिथि-संविभाग व्रत कहलाता है।

जिज्ञासा ५. अतिचार किसे कहते हैं।

शान्ति– लिए गए व्रतों में लगने वाले दोषों को अतिचार कहते हैं।

जिज्ञासा ६. अतिचार कितने होते हैं ?

शान्ति– प्रत्येक व्रत के पाँच-पाँच अतिचार बताए गए हैं।

जिज्ञासा ७. अंत समय में सल्लेखना स्वीकार करना चाहिए इसका क्या तात्पर्य है ?

शान्ति– जिसने नैष्टिक श्रावक ने व्रत ग्रहण किए हैं, वह जीवन भर तो व्रतों का निर्दोष पालन करे किन्तु जब उसे अपने व्रतों के पालन में परेशानी का आभास होने लगे या कोई रोग आए या जीवन का अंत समय निकट हो या उपसर्ग, दुर्भिक्ष, बुढ़ापा तो उस समय सल्लेखना के व्रत स्वीकार करने चाहिए। (र.श्रा. १२२)

२६. साधक श्रावक स्वरूप

साधक श्रावक बनकर के,
करना समाधि व्रत धर के।
सोलहवें तक स्वर्ग सिधार,
स्वर्ग त्याग हों नर अनगार॥

अर्थ– अंत समय में श्रावक को साधक बनकर के सल्लेखना को स्वीकार करके समाधि की साधना करनी चाहिए। इस प्रभाव से वह सोलहवें स्वर्ग तक को प्राप्त कर लेता है जिसे त्याग कर मनुष्य बन कर मुनि बन सकता है।

भावार्थ– इस छन्द में सल्लेखना व्रत स्वीकार कर समाधि करते हुए श्रावक को सोलहवें स्वर्ग तक की उपलब्धि हो सकती है। जिसे त्याग कर मनुष्य बन कर मुनि तक बन सकता है।

जिज्ञासा १. साधक श्रावक किसे कहते हैं ?

शान्ति– वह श्रावक जिसने व्रतों का पालन करते हुए अंत समय में सल्लेखना की साधना स्वीकार की है उसे साधक श्रावक कहते हैं।

जिज्ञासा २. क्या जिस व्यक्ति ने व्रतों का पालन नहीं किया लेकिन उसका मरण सम्यक् हुआ है तो उसे समाधि मरण नहीं कहा जा सकता ?

शान्ति– आपने सत्य कहा क्योंकि समाधि उसी की स्वीकार की जाती है जिसने व्रतों का पालन किया हो और अंत समय में सल्लेखना पूर्वक मरण किया हो। (र.श्रा. ४३)

जिज्ञासा ३. जिसने सल्लेखना तो की हो लेकिन व्रत ना लिए हो तो क्या उसे समाधि मरण माना जाएगा ?

शान्ति– जी नहीं! बिना व्रतों के सल्लेखना हो ही नहीं सकती है, ना ही समाधि।

जिज्ञासा ४. श्रावक बन कर के समाधि करके सोलहवें स्वर्ग जाना अनिवार्य है क्या ?

शान्ति– जी नहीं! यह तो उत्कृष्ट अवस्था है कि अगर श्रावक श्रेष्ठ समाधि

या निर्दोष समाधि करता है तो सोलहवें स्वर्ग तक की उसे प्राप्ति हो सकती है।

जिज्ञासा ५. स्वर्ग को त्याग कर मनुष्य बनना निश्चित होता है क्या ?

शान्ति– जी हाँ! जिस श्रावक ने व्रतों का पालन कर सम्यग्दर्शन को स्वीकार कर समाधि की हो वह स्वर्ग से आकर मनुष्य ही बनेगा ऐसा पहले कहा जा चुका है।

जिज्ञासा ६. मनुष्य बनकर मुनि बनना निश्चित है क्या ?

शान्ति– जी हाँ! जो निज हित चाहने वाला है, मोक्ष की भावना रखने वाला है वह मनुष्य बनकर के अपने लक्ष्य को पाने के लिए प्रयास करेगा और इस मनुष्य का लक्ष्य मोक्ष होता है अतः मनुष्य बनेगा फिर मुनि बनेगा।

जिज्ञासा ७. अनगार किसे कहते हैं ?

शान्ति– अगार अर्थात् घर होता है। जिन लोगों ने घर-गृहस्थी का त्याग करके दिगम्बर रूप को स्वीकार कर लिया है, ऐसे मुनियों को अनगार कहते हैं।

२७. मुनि से मोक्ष स्वरूप

मुनि अरिहन्त जिनेन्द्र बनें,
समवसरण से धर्म कहें।
ध्यान लगा निर्वाण गहें,
सो 'सुव्रत' मुनि धर्म कहें॥

अर्थ– मुनि बनकर साधना करते हुए अरिहन्त-जिनेन्द्र बनें तथा समवसरण में विराजमान होकर तत्त्वदेशना, दिव्यदेशना या धर्म का उपदेश देते हुए ध्यान लगाकर सकल कर्मों को नष्ट कर निर्वाण या मोक्ष को प्राप्त करें। इसी भावना से लेखक मुनि 'सुव्रतसागर' महाराज धर्म का उपदेश दे रहे हैं

भावार्थ– इस छन्द में मुनि बनकर मोक्ष प्राप्त करने के लिए लेखक भावना बनाते हुए उपदेश दे रहे हैं।

जिज्ञासा १. मुनि बनकर अरिहन्त बनना कैसे सम्भव है?

शान्ति– जब कोई मुनि साधना करते हुए क्षपक.श्रेणी के द्वारा चार घातिया कर्मों को नष्ट करते हैं तो उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हो जाता है इसी अवस्था को अरिहन्त अवस्था कहते हैं।

जिज्ञासा २. अरिहन्त भगवान् किन्हें कहते हैं?

शान्ति– जिन मुनियों को केवलज्ञान प्राप्त हुआ है तथा जो समवसरण में विराजमान हुए अथवा ध्यान में लीन हैं उन्हें अरिहन्त भगवान् या अरिहन्त जिनवर या जिनेन्द्र भगवान् कहते हैं।

जिज्ञासा ३. समवसरण किसे कहते हैं?

शान्ति– उस सभा को अथवा उस स्थान को अथवा उस संसद को जिसमें सभी आने वाले प्राणियों को समान अवसर मिलते हैं उसको समवसरण कहते हैं।

जिज्ञासा ४. क्या समवसरण के अलावा और कहीं से धर्म का उपदेश नहीं दिया जा सकता?

शान्ति– दिया जा सकता है किन्तु तीर्थंकर अरिहन्त भगवान् केवल समवसरण से ही उपदेश देते हैं अन्य कोई किसी अन्य स्थान से उपदेश दे सकते हैं।

जिज्ञासा ५. धर्म किसे कहते हैं ?

शान्ति– जो संसारी प्राणियों को संसार से उठाकर उत्तम स्थान में रखता है अथवा वस्तु के स्वरूप को धर्म कहते हैं। (र.श्रा. २)

जिज्ञासा ६. क्या ध्यान के बिना मोक्ष प्राप्त नहीं होता ?

शान्ति– जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! बिना ध्यान के कल्याण होना सम्भव ही नहीं है इसलिए अरिहन्त प्रभु समवसरण का त्याग करके ध्यान लगाकर के मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

जिज्ञासा ७. निर्वाण किसे कहते हैं ?

शान्ति– 'निः' अर्थात् निकल गया है 'वाण' अर्थात् शरीर सो जिनके शरीर और आत्मा पूर्ण रूप से पृथक-पृथक हो चुके हैं ऐसी उस अवस्था को निर्वाण या मोक्ष कहते हैं।

श्री चतुर्थ ढाल का सारांश

श्री छहढाला की चतुर्थ ढाल में सम्यग्ज्ञान का स्वरूप बताया गया है। वह यह है कि जैसे ही मिथ्यादर्शन का त्याग करके प्राणी जिनशासन को स्वीकार करता हैए उसे सम्यग्दर्शन जैसे ही होता है तुरन्त सम्यग्ज्ञान होना अनिवार्य है क्योंकि दोनों में साधन-साध्य का भेद है।

सम्यग्ज्ञान के विषय में परोक्ष और प्रत्यक्ष ज्ञान का वर्णन करते हुए कहा जा रहा है कि मतिज्ञान और श्रुतज्ञान, ये दोनों परोक्ष ज्ञान हैं तथा अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान ये दोनों ज्ञान विकल प्रत्यक्ष हैं तथा केवलज्ञान सकल प्रत्यक्ष है, इस प्रकार से मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान में भेद होते हुए भी इन चारों ज्ञानों को क्षायोपशमिक सम्यग्ज्ञान कहते हैं तथा केवलज्ञान क्षायिकज्ञान है, जो दुनियाँ में सबसे महिमावान तथा पूज्य ज्ञान है। केवलज्ञान की विशेषता बताते हुए कहा जा रहा है कि यह दर्पण के समान अथवा गोखुर के समान होता है जिसमें लोक-अलोक झलकते रहते हैं।

ज्ञान एक होते हुए भी एक साथ देखने और जानने का काम करता है तथा लोक-अलोक के अनन्त द्रव्यों की अनन्त गुण-पर्याय को एक साथ जानने के कारण इसको अनन्तज्ञान भी कहते हैं। जो शीघ्रता से मोक्ष दिलाने में सहायक होता है। इसलिए कहा जा रहा है कि सम्यग्ज्ञान को आठ अंगों के साथ अपने जीवन में धारण करना चाहिए। लेखक ने यहाँ सम्यग्ज्ञान के आठ अंगों का विशेष रूप से वर्णन किया है अतः यह विशेष रूप से पठनीय है। बिना चारित्र के मनःपर्ययज्ञान या केवलज्ञान उत्पन्न नहीं होते हैं ऐसा आगम का उल्लेख होने पर लेखक कहना चाहते हैं कि चारित्र स्वीकार करना चाहिए।

चारित्र के दो भेद बताते हुए विकल चारित्र गृहस्थों के होता है जिसमें पाँच अणुव्रत तथा सात शीलव्रत का यहाँ पर वर्णन किया गया है। पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत, सब मिलकर बारह व्रत होते हैं। जिनका यहाँ पर पारिभाषिक रूप में बहुत अच्छा विस्तार किया गया है। नैष्टिक और पाक्षिक श्रावक की विशेषताओं का वर्णन करते हुए लेखक यहाँ पर साधक श्रावक को आगम के अनुसार अंत समय में दोषों का त्याग करते हुए सल्लेखना धारण कर समाधि के लिए प्रेरित करते हैं तथा इस साधना के परिणाम स्वरूप श्रावक सोलहवें स्वर्ग तक की यात्रा करके वहाँ से च्युत होकर के मनुष्य बनकर के मुनि बनकर के अरिहन्त-सिद्ध तक की यात्रा कर सकते हैं, इसलिए लेखक अब अपनी लेखनी को प्रखर करते हुए मुनि-धर्म कहने का संकल्प करते हैं।

॥ इस प्रकार श्रीछहढाला की चतुर्थ ढाल समाप्त हुई ॥

❑❑❑

श्री पंचम ढाल

बारह भावना

१. अनित्य भावना

(दोहा)

रिश्ते-नाते सम्पदा, तन बल भोग अपार।
हैं अनित्य सब कुछ यहाँ, क्षणभंगुर संसार॥

अर्थ— सांसारिक रिश्ते-नाते सम्पदा, शारीरिक बल भोग जो भी हैं, वह अपार है किन्तु क्षणभंगुर हैं और सब अनित्य हैं।

भावार्थ— अनित्य भावना का व्याख्यान करते हुए कहा जा रहा है कि संसार में जो कुछ भी रिश्ते-नाते, धन-दौलत, तन-शक्तियाँ भोग आदि हैं वह सब कुछ अनित्य हैं, क्षणभंगुर है इसलिए नित्य आत्मा का चिन्तन करो।

जिज्ञासा १. रिश्ते-नाते किन्हें कहते हैं?

शान्ति— जो सांसारिक बन्धन हमें आपस में बाँधे रहते हैं अथवा जो बन्धन मोह के द्वारा हम स्वीकार करते हैं उन्हें रिश्ते-नाते कहते हैं।

जिज्ञासा २. सम्पदा किसे कहते हैं?

शान्ति— जो सांसारिक वस्तुएँ हमारी सुख-सुविधाओं में सहयोग करती हैं उन सबको हम सम्पदा कहते हैं।

जिज्ञासा ३. भोग किसे कहते हैं?

शान्ति— पाँच इन्द्रियों में स्पर्शन और रसना के विषय काम-विषय कहलाते हैं तथा घ्राण, चक्षु और कर्ण के विषय भोग-विषय कहलाते हैं। (स.सा. ४)

जिज्ञासा ४. क्षणभंगुर कहने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति— यह पुण्य कर्म के उदय से हमें प्राप्त होती हैं और पुण्य के अभाव में देखते ही देखते विलीन हो जाती हैं इसलिए इन्हें क्षणभंगुर कहा जाता है। जो क्षणभर में नष्ट हो जाए, उन्हें क्षणभंगुर कहते हैं।

जिज्ञासा ५. संसार तो स्थाई दिखता है फिर इसको अनित्य क्यों कहा?

शान्ति— यद्यपि संसार अनादिकाल से है और अनन्तकाल तक रहेगा भी, लेकिन यह सब दृश्य मात्र है, स्थाई नहीं है। इसी को मोहजाल भी कहते हैं, यह सब अपना नहीं है सो अनित्य है।

२. अशरण भावना

कौन बचाए मृत्यु से, हवा दवा विज्ञान।
इस अशरण संसार में, शरण भेद विज्ञान॥

अर्थ— इस संसार में संसारी प्राणी को हवा, दवा या विज्ञान अर्थात् तंत्र-मंत्र, औषध आदि कुछ भी मृत्यु से बचा नहीं सकता। इसलिए संसार को अशरण कहा गया है किन्तु जो व्यक्ति अपने आत्मतत्त्व में लीन हो जाता है, वही उसको शरण माना जाता है। इस प्रकार अशरण भावना का चिन्तन करना चाहिए।

भावार्थ— अशरण भावना का व्याख्यान करते हुए कहा जा रहा है कि संसार में कोई भी व्यक्ति मृत्यु से बच नहीं सकता जो जन्मा है उसकी मृत्यु अवश्य होगी। इसलिए इस असार संसार में रमण ना करते हुए अपने आत्मतत्त्व में रमना चाहिए।

जिज्ञासा १. क्या सभी प्राणियों की मृत्यु होती है?

शान्ति— जी हाँ! जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु अवश्य होती है।

जिज्ञासा २. क्या तीर्थंकर भगवान की भी मृत्यु होती है?

शान्ति— जी हाँ! तीर्थंकर भगवान की भी मृत्यु होती है, उसी को पण्डित-पण्डित मरण या निर्वाण कहते हैं। अवश्य है कि उनके मरण के साथ मरण का ही मरण हो जाता है, उनको बार-बार जन्म-मरण नहीं करना पड़ता।

जिज्ञासा ३. संसार में सभी लोग रहते हैं, फिर उसको अशरण क्यों कहते है?

शान्ति— यहाँ पर अशरण कहने का तात्पर्य यह है कि यह संसार किसी को सदा के लिए सहारा नहीं देता, शरण नहीं देता।

जिज्ञासा ४. भेद-विज्ञान कहने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति— भेद-विज्ञान वह कहलाता है जो आत्मतत्त्व को अन्य सभी जड़ तत्त्वों से पृथक करके शुद्ध रूप में दर्शाता है जिसमें आत्मा अलग है पुद्गल अलग है ऐसी व्यवस्था होती है।

जिज्ञासा ५. शरण किसे कहते हैं?

शान्ति— आश्रय, सहारा, छाँव, ठिकाना और आश्रम आदि जो हमारे लिए रुकने का साधन देते हैं उन्हें शरण कहते हैं। मोक्षमार्ग का प्रसंग होने से जो हमारे कल्याण में निमित्त बनते हैं उन्हें शरण कहते हैं।

३. संसार भावना

देव नारकी नर पशु, सब भोगें दुख भोग।
मोक्ष बिना संसार में, कहीं न सुख संयोग॥

अर्थ– देव, नारकी, पशु और मनुष्य आदि चतुर्गति के सभी जीव अपने-अपने कर्मों के अनुसार अपने-अपने दुखों को भोगते रहते हैं। इस संसार में मोक्ष के बिना कहीं भी सुख संयोग दिखाई नहीं देता। इस प्रकार की संसार भावना का चिन्तन करना चाहिए।

भावार्थ– संसार भावना का व्याख्यान करते हुए कहा जा रहा है कि चतुर्गति के जीव अपने कर्मों के अनुसार संसार में दुख भोगते हैं, मोक्ष के बिना संसार में कहीं सुख दिखाई नहीं देता।

जिज्ञासा १. चतुर्गति में कहीं भी सुख नहीं है क्या ?

शान्ति– जी हाँ! चतुर्गति में कहीं भी सुख नहीं है, कोई भी जीव संसार में सुखी नहीं है।

जिज्ञासा २. परन्तु सुनने में तो आता है कि संसार में पंचेन्द्रियों के सुख होते हैं ?

शान्ति– जी हाँ! आपने सही कहा किन्तु पंचेन्द्रियों के सुखों को सुख नहीं कहा उन्हें सुखाभास कहा है अथवा वे दुख के निमंत्रण ही हैं।

जिज्ञासा ३. मोक्ष बिना संसार में कहीं भी सुख नहीं है क्या ?

शान्ति– जी हाँ! यही अटल सत्य है कि मोक्ष बिना संसार में कहीं भी सुख नहीं है।

जिज्ञासा ४. संसारी प्राणी सुख प्राप्त करने का प्रयास क्यों नहीं करते ?

शान्ति– संसारी प्राणियों को अनादिकाल से पंचेन्द्रियों के सुख सुखाभास सुख प्रतीत होते हैं, जिन्हें वह छोड़ना नहीं चाहते, इसलिए सुख को प्राप्त करने का प्रयास नहीं करते। जैसे मल में रहने वाला कीड़ा मल का त्याग नहीं करना चाहता इसी प्रकार से संसारी प्राणियों की अवस्था है।

४. एकत्व भावना

नहीं किसी के हम यहाँ, कोई न अपना यार।
यह एकत्व विचार के, आत्मतत्त्व ही सार॥

अर्थ– इस संसार में हम भी किसी के नहीं हैं और हमारा भी कोई अपना साथी या मित्र नहीं है। इस प्रकार से एक आत्मतत्त्व का विचार करना ही एकत्व भावना है।

भावार्थ– एकत्व भावना का व्याख्यान करते हुए कहा जा रहा है कि संसार में हम भी किसी के नहीं हैं और हमारा भी कोई नहीं है मात्र एक आत्मतत्त्व ही सारभूत अपना है।

जिज्ञासा १. एकत्व भावना का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति– जिस भावना में मात्र अपनी एकत्व-विभक्त आत्मा का ही चिन्तन किया जाता है, अन्य सब पर पदार्थों के बारे में कोई चिन्तन नहीं किया जाता है, उसको एकत्व भावना कहते हैं।

जिज्ञासा २. संसार में देखने में आता है कि हम हैं, हमारा परिवार है, हमारे रिश्ते-नाते सम्बन्धी हैं तो फिर हम किसी के नहीं है यह कहना उचित है क्या ?

शान्ति– यह सब मोह के सम्बन्ध हैं और स्वार्थ के रिश्ते-नाते हैं किन्तु वास्तव में अपना कोई है ही नहीं और हम भी किसी के नहीं हैं।

जिज्ञासा ३. क्या जीव अकेला होता है ?

शान्ति– जी हाँ! इस जीव को एक अकेले ही जन्म लेना पड़ता है, अकेले ही मरण करना पड़ता है, इसमें कोई साथी नहीं होता है और अकेले ही सारे सुख-दुख भोगने पड़ते हैं। देखने में सब साथ दिखते हैं परन्तु वास्तव में कोई साथ ही नहीं होता।

५. अन्यत्व भावना

जब तन भी अपना नहीं, फिर क्यों करते पाप।
यम के आगे ना चले, कुछ अन्यत्व विलाप॥

अर्थ– जब अपना शरीर भी अपना नहीं देता तो इतने पाप क्यों करते हैं जबकि मृत्यु के आगे कुछ भी उपाय नहीं चलता है, इस प्रकार चिन्तन करना अन्यत्व भावना है।

भावार्थ– यह शरीर भी अपना नहीं है तो इतने पाप कर्म आदि क्यों करते रहते हैं जबकि मृत्यु के सामने कुछ भी छल कपट नहीं चलता।

जिज्ञासा १. एकत्व भावना और अन्य भावना दोनों एक समान प्रतीत होती है दोनों में फिर विशेष अन्तर क्या है?

शान्ति– एकत्व भावना में अकेली आत्मा का चिन्तन तथा अन्यत्व भावना में आत्मा से भिन्न पदार्थों का चिन्तन किया जाता है।

जिज्ञासा २. क्या वास्तव में शरीर अपना नहीं होता?

शान्ति– जी हाँ! आपने सत्य कहा, यदि अपना होता तो मृत्यु के बाद भी अपने साथ चलता किन्तु ऐसा तो देखने में आता ही नहीं है इसलिए यही सत्य है कि शरीर भी अपना नहीं होता।

जिज्ञासा ३. लेकिन सारे कर्म या पाप फिर शरीर के द्वारा ही क्यों होते हैं?

शान्ति– क्योंकि शरीर के अभाव में संसार में रहना होता ही नहीं है।

जिज्ञासा ४. क्या मृत्यु के सामने कुछ भी उपाय कार्यकारी नहीं होते?

शान्ति– जी हाँ! मृत्यु के सामने कुछ भी उपाय काम नहीं आते लेकिन धर्मात्मा मृत्यु से भयभीत नहीं होता और धर्म से विचलित व्यक्ति मृत्यु के सामने भयभीत होकर अपनी दुर्गति कर लेते हैं।

जिज्ञासा ५. अन्यत्व विलाप का क्या तात्पर्य है?

शान्ति– अर्थात् कुछ भी रोना-गाना, दुखी होना आदि उपाय मृत्यु के सामने काम नहीं आते।

जिज्ञासा ६. जब सब कुछ अन्यत्व ही है तो इसमें हम क्यों लगे रहते हैं?

शान्ति– अनादिकाल से हमारी आत्मा में मोह के, अज्ञान के और पापों के संस्कार होने से हम शुद्धतत्त्व का ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते इसलिए इन विषयों में लगे रहते हैं।

६. अशुचि भावना

मल-मूत्रों की देह दे, सूतक-पातक सोर।
दीक्षा बिन सब व्यर्थ है, अशुचि देह की डोर॥

अर्थ— यह शरीर मल-मूत्रों का आलय है तथा सूतक, पातक, सोर से अपवित्र है तथा दीक्षा रहित अशुचि देह के सम्बन्ध व्यर्थ हैं।

भावार्थ— सूतक, पातक और सोर देने वाली यह अशुचि काया मल-मूत्रों का स्थान है तथा दीक्षा के बिना यह सब निरर्थक है।

जिज्ञासा १. क्या हमारे शरीर में वास्तव में मल-मूत्र भरे हैं?

शान्ति— जी हाँ! शास्त्रों तथा विज्ञान के अनुसार हमारे शरीर में मल-मूत्र भरे हुए हैं, इसी के द्वारा हमारा शरीर बना हुआ होता है।

जिज्ञासा २. फिर इतना सुन्दर क्यों दिखाई देता है अपना शरीर?

शान्ति— ऊपरी त्वचा की सात पर्तें चढ़ी होने से सुन्दर दिखाई देता है।

जिज्ञासा ३. सूतक, पातक और सोर क्या कहलाते हैं?

शान्ति— जन्म के समय होने वाली अशुद्धि सोर, मृत्यु के समय सूतक तथा गर्भपात के समय होने वाली अशुद्धि पातक कहलाती हैं।

जिज्ञासा ४. क्या सूतक, पातक और सोर होना जरूरी है?

शान्ति— जी हाँ! सोर और सूतक तो संसारी प्राणी के निश्चित ही होते हैं किन्तु पातक होना वैकल्पिक हैं।

जिज्ञासा ५. अशुचि कहने का क्या तात्पर्य है?

शान्ति— हमारा शरीर सात कुधातुओं तथा नव मल-द्वारों का घर है। इसलिए इसे अशुचि ही कहा गया है।

जिज्ञासा ६. सात धातुएँ कौन-कौन सी हैं?

शान्ति— सात धातुएँ इस प्रकार हैं—१. रस २. रुधिर ३. मांस ४. मेद ५. अस्थि ६. मज्जा और ७. वीर्य।

जिज्ञासा ७. नव मल-द्वार कौन-कौन से हैं?

शान्ति— दो आँखें, दो नाक, दो कान, एक मुख, दो मलमूत्र के स्थान।

जिज्ञासा ८. क्या दीक्षा के अभाव में शरीर का कोई तात्पर्य नहीं होता?

शान्ति— जी हाँ! यह शरीर तो अपवित्र है किन्तु दीक्षा लेकर पवित्र आत्मा को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार का चिन्तन करना अशुचि भावना है।

७. आस्रव भावना

सत्तावन विध से रचें, हम अपना संसार।
कर्मास्त्रव को रोक के, होगी नैया पार॥

अर्थ— संसारी प्राणी सत्तावन विध के आस्रव करते हुए अपना संसार रचते हैं, यही कर्म-आस्रव कहलाता है। इसके रोके बिना संसार से नैया पार नहीं हो सकती। इस प्रकार का चिन्तन करना आस्रव भावना कहलाती है।

भावार्थ— आस्रव भावना का व्याख्यान में कहा जा रहा है कि सत्तावन प्रकार के कर्म-आस्रव रोककर संसार-सागर से नैया पार होती है।

जिज्ञासा १. आस्रव भावना किसे कहते हैं?

शान्ति— जिस चिन्तन में कर्मों के आस्रव के बारे में विचार किया जाता है तथा उनसे बचने का भी विचार किया जाता है, उस भावना को आस्रव भावना कहते हैं।

जिज्ञासा २. क्या कर्मों के आस्रव को ही संसार कहते हैं?

शान्ति— जी हाँ! कर्मों के आने के कारण आत्मा संसार में उलझती जाती है और उसका संसार बढ़ता जाता है इसी को संसार कहते हैं।

जिज्ञासा ३. क्या कर्म-आस्रव रोके बिना नैया पार नहीं हो सकती?

शान्ति— अरे भाई! अगर किसी सरोवर में नाव चल रही हो उसमें छेद हो तो छेद को बंद किए बिना क्या नाव डूबने से बच जाएगी, नहीं ना! उसी प्रकार से कर्म-आस्रव रोके बिना नैया पार होना असम्भव है।

जिज्ञासा ४. क्या सत्तावन विध के अतिरिक्त और कर्म-आस्रव नहीं होता?

शान्ति— होता तो है! परन्तु यहाँ पर सत्तावन विध कहने का उपलक्षण मात्र है। सम्पूर्ण रूप से कर्म-आस्रव रोकने का उपदेश है।

जिज्ञासा ५. क्या हम अपना संसार खुद रचते हैं या कोई रचने वाला अन्य होता है?

शान्ति— वास्तव में संसारी प्राणी अपना संसार या अपना भाग्य या अपनी किस्मत स्वयं ही लिखते हैं दूसरों पर तो बस आरोपण होता है।

८. संवर भावना

जीवन रथ पर सारथी, संवर हुआ सवार।
गजरथ से आतम गई, मोक्षपुरी के द्वार॥

अर्थ— जीवन रूपी रथ पर संवर रूपी सारथी जब सवार होता है तो यह आत्मा धर्म रूपी गजरथ से मोक्षपुरी के लिए प्रस्थान कर जाती है। इस प्रकार का चिन्तन करना संवर भावना कहलाती है।

भावार्थ— संवर भावना का व्याख्यान करते हुए कहा जा रहा है कि जीवन रूपी रथ पर संवर रूपी सारथी सवार होने पर गजरथ से यह आत्मा मोक्षपुरी के लिए पहुँच जाती है।

जिज्ञासा १. जीवन रथ किसे कहते हैं?

शान्ति— अरे भाई! जो जीवन यापन करते हैं इसको एक रथ का उपलक्षण कहा गया है। इसलिए अपने जीवन को ही जीवन रथ कहा गया है।

जिज्ञासा २. संवर भावना किसे कहते हैं?

शान्ति— कर्मों के आने के द्वार को रोकने का नाम संवर है। इसका बार-बार चिन्तन करना संवर भावना कहलाती है।

जिज्ञासा ३. जीवन रूपी रथ पर संवर रूपी सारथी कैसे सवार होता है?

शान्ति— जीवन रथ पर अर्थात् कर्मों के आस्रव पर जब रोक लगा दी जाती है तो उसको संवर सारथी कहते हैं।

जिज्ञासा ४. गजरथ कहने से क्या तात्पर्य है?

शान्ति— अर्थात् आत्मा धर्म रूपी सहारे के द्वारा मोक्षपुरी के द्वार तक पहुँच जाती है।

जिज्ञासा ५. क्या संवर किए बिना मोक्ष मिलना सम्भव नहीं है?

शान्ति— जी हाँ! आपने सत्य ही कहा है कि बिना संवर के मोक्ष को प्राप्त करना कल्पना मात्र है सत्यता नहीं।

९. निर्जरा भावना

कर्म कालिमा ने दिया, निज का रूप विगार।
तप-उबटन की निर्जरा, करे आत्म शृंगार॥

अर्थ— कर्मों के आस्रव से जो कर्मों की कालिमा आत्मा से जुड़ी रहती है उसके द्वारा आत्म-स्वरूप विकृत हो जाता है जो सम्यक्-तप रूपी उबटन के द्वारा समाप्त करके आत्मा का शृंगार करना। इस प्रकार का चिन्तन करना निर्जरा भावना कहलाती है।

भावार्थ— निर्जरा भावना का स्वरूप बताते हुए कहा जा रहा है कि कर्म कालिमा ने आत्मा का स्वरूप विकृत कर दिया है जो तप रूपी उबटन के द्वारा समाप्त करके आत्मा का शृंगार किया जा सकता है।

जिज्ञासा १. कर्म कालिमा किसे कहते हैं?

शान्ति— कर्म रूपी मल के द्वारा आत्मा का उज्ज्वल स्वरूप विकृत होता है, उस मल को ही कर्म कालिमा कहते हैं।

जिज्ञासा २. आत्मा का स्वरूप कर्मों के द्वारा कैसे विकृत होता है?

शान्ति— जैसे उज्ज्वल वस्त्र पर मैल लग जाने पर वह मैला हो जाता है उसी प्रकार उज्ज्वल आत्मा पर कर्म कालिमा लगने से वह मलिन हो जाती है। आत्मा का स्वरूप सिद्ध स्वरूपी है किन्तु कर्मों के कारण संसार में दर-दर की ठोकरें खाता हुआ फिर रहा है।

जिज्ञासा ३. तप उबटन का क्या तात्पर्य है?

शान्ति— जैसे मैल लगे हुए शरीर को उबटन लगाकर चमकाया जाता है वैसे ही सम्यक् तप रूपी उबटन से आत्मा के स्वरूप को निखारा जाता है।

जिज्ञासा ४. आत्म-शृंगार क्या कहलाता है?

शान्ति— आत्मा के उज्जवल सुन्दर स्वरूप को प्राप्त करना ही आत्म-शृंगार कहलाता है।

जिज्ञासा ५. क्या निर्जरा बिना आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता?

शान्ति— जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! क्योंकि जब तक पहले के उपस्थित कर्म अलग नहीं किए जाएंगे तब तक स्वरूप की प्राप्ति असम्भव है।

१०. लोक भावना

स्वयं सिद्ध नर रूप सम, लोक रहा भ्रम जाल।
इसमें भटकें जीव सब, धर्म बिना बेहाल॥

अर्थ— अनादिकाल से बने हुए पुरुष रूप के समान यह लोक भ्रम जाल के समान है, जिसमें संसारी प्राणी भटकते रहते हैं और धर्म के बिना दुखी परेशान होते रहते हैं।

भावार्थ— लोक भावना का स्वरूप बताते हुए कहा जा रहा है कि स्वयं अपने आपसे निर्मित पुरुष रूप के समान यह लोक भ्रम जाल जैसा है, इसमें धर्म के अभाव में संसारी प्राणी भटकते रहते हैं।

जिज्ञासा १. लोक भावना किसे कहते हैं?

शान्ति— वह स्थान जिसमें सब द्रव्य आदि रहते हैं उसको लोक कहते हैं। इसमें संसारी प्राणी धर्म के बिना भटकते रहते हैं इस प्रकार का चिन्तन करना लोक भावना कहलाती है।

जिज्ञासा २. स्वयं सिद्ध नर रूप क्या कहलाता है?

शान्ति— किसी के द्वारा बिना बनाए गए पुरुष के रूप के समान जो रूप होता है उसको नर रूप कहते हैं।

जिज्ञासा ३. क्या पुरुष रूप के आकार का लोक होता है?

शान्ति— जी हाँ! अगर पुरुष के पैर फैलाकर कमर पर हाथ रखकर खड़ा किया जाए तो उसका आकार लगभग लोक जैसा ही दिखता है।

जिज्ञासा ४. लोक को भ्रम जाल क्यों कहा?

शान्ति— लोक को भ्रम जाल इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें संसारी प्राणी उलझते हुए दुख भोगते रहते हैं।

जिज्ञासा ५. क्या सभी प्राणी धर्म के बिना लोक में दुखी रहते हैं?

शान्ति— जी हाँ! बिना धर्म के संसार से मुक्त होना असम्भव है।

जिज्ञासा ६. क्या लोक के बाहर जीव नहीं होते?

शान्ति— जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! अलोक आकाश में सिर्फ आकाश होता है अन्य कोई द्रव्य तत्त्व नहीं होते।

११. बोधिदुर्लभ भावना

दुर्लभ सम्यग्दर्श है, दुर्लभ सम्यग्ज्ञान।
दुर्लभ मुनि चारित्र सो, तजें मोह अज्ञान॥

अर्थ– इस दुनियाँ में तीन लोक में तीन काल में सम्यग्दर्शन दुर्लभ है तथा उससे दुर्लभ सम्यग्ज्ञान है तथा सबसे दुर्लभ सम्यक्चारित्र-मुनि चारित्र है। इसलिए मोह अज्ञान का त्याग करके रत्नत्रय की साधना करना ही बोधिदुर्लभ भावना कहलाती है।

भावार्थ– बोधिदुर्लभ भावना का व्याख्यान करते हुए कहा जा रहा है कि संसार में सम्यग्दर्शन दुर्लभ है सम्यग्ज्ञान दुर्लभतर तथा सम्यक्-चारित्र दुर्लभतम है। इसलिए अज्ञान का त्याग कर रत्नत्रय अर्थात् बोधि की साधना करने का चिन्तन करना ही तो बोधिदुर्लभ भावना है।

जिज्ञासा १. बोधिदुर्लभ भावना किसे कहते हैं?

शान्ति– बोधि अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन तीनों को मिलाकर बोधि कहते हैं। इसको बड़ी दुर्लभता-मुश्किल से प्राप्त किया जाता है इसलिए इसको बोधिदुर्लभ कहते हैं तथा इसका बार-बार चिन्तन करना बोधिदुर्लभ भावना है। (र.श्रा.)

जिज्ञासा २. दुर्लभ क्या कहलाता है?

शान्ति– जो वस्तु बहुत मुश्किल से, बहुत कठिनाई से और बहुत पुरुषार्थ करने के बाद प्राप्त होती है उसे दुर्लभ कहते हैं।

जिज्ञासा ३. दुर्लभ क्या-क्या है?

शान्ति– सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र क्रमशः-क्रमशः दुर्लभ, दुर्लभतर और दुर्लभतम हैं।

जिज्ञासा ४. मोह-अज्ञान किसे कहते हैं?

शान्ति– जिसके द्वारा हमें अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं हो पाता, यथार्थ तत्त्व या आत्मतत्त्व का ज्ञान नहीं होने का नाम ही अज्ञान या मोह है।

१२. धर्म भावना

दुख दें मिथ्यामत सभी, लगते धर्म समान।
धर्म मात्र जिन धर्म है, भक्त करे भगवान॥

अर्थ— जितने मत होते हैं वे सभी मिथ्यामत दुख देने वाले होते हैं किन्तु धर्म के समान लगते हैं परन्तु वह धर्म नहीं होते हैं, धर्म तो मात्र एक शाश्वत जिनधर्म ही होता है, जो भक्तों को भगवान बनाता है। इस प्रकार का चिन्तन करना धर्म भावना कहलाती है।

भावार्थ— धर्म भावना की व्याख्या करते हुए कहा जा रहा है के जो धर्म के समान लगते हैं ऐसे सभी मत मिथ्यामत दुख देने वाले होते हैं लेकिन मात्र जिनधर्म ही एक यथार्थ धर्म है जो भक्तों को भगवान बनाने की क्षमता रखता है।

जिज्ञासा १. क्या सभी मत मिथ्या होते हैं ?

शान्ति— जी हाँ! मत अर्थात् विचार, जो व्यक्ति विशेष के द्वारा मत बनाए जाते हैं, वह सब मिथ्या ही होते हैं।

जिज्ञासा २. किन्तु दुनियाँ में इतने सारे मत चलते हैं तो वे धर्म नहीं है क्या ?

शान्ति— मत में और धर्म में बहुत अन्तर होता है। मत व्यक्ति विशेष के द्वारा चलाया जाता है तथा धर्म अनादि काल से चला आता है और अनन्त काल तक चलता रहता है।

जिज्ञासा ३. तो मत को धर्म मानना अनुचित होगा ?

शान्ति— जी हाँ! आपने सही कहा, मत में और धर्म में अन्तर समझने वाला ही सही धर्मात्मा होता है।

जिज्ञासा ४. क्या जिनधर्म के अलावा और कोई धर्म नहीं होता ?

शान्ति— आपने सत्य कहा, चाहे स्वर्ग में हो या नरको में या मध्यलोक में धर्म तो मात्र एक जिनधर्म ही होता है, बाकी सब मत होते हैं।

जिज्ञासा ५. क्या भक्त भगवान बन सकता है ?

शान्ति— जी हाँ! जिनशासन का आश्रय लेने पर भक्त अपना कल्याण करके भगवान बन सकता है।

जिज्ञासा ६. जिनशासन किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिनेन्द्र भगवान के द्वारा बताए गए सिद्धान्त या मार्ग पर चलना जिनशासन कहलाता है।

१३. उपसंहार

भाकर बारह भावना, होता दृढ़ वैराग्य।
'सुव्रत' देवर्षि बनें, करें मुक्ति से राग॥

अर्थ— बारह भावनाओं के चिन्तन से वैराग्य दृढ़ होता है तथा मुक्ति से अनुराग करते हुए इनका चिन्तन करके देवर्षि बनें यही भावना है।

भावार्थ— बारह भावनाओं का उपसंहार करते हुए कहा जा रहा है कि बारह भावनाओं का चिन्तन करने से वैराग्य दृढ़ होता है तथा जो इनका चिन्तन करते हुए मुनि अपनी समाधि करते हैं वह स्वर्ग में देवर्षि बन करके और वहाँ से आ करके मनुष्य बन करके मुनि बन करके मोक्ष को प्राप्त करते हैं इसलिए लेखक की भावना है कि बारह भावनाओं का चिन्तन हर एक साधक को करना चाहिए।

जिज्ञासा १. क्या बारह भावनाओं के अलावा और कोई भावनाएँ नहीं होती ?

शान्ति— होती हैं, सोलहकारण भावनाएँ भी होती हैं किन्तु यहाँ पर उनका वर्णन नहीं है।

जिज्ञासा २. वैराग्य भावना किसे कहते हैं ?

शान्ति— जिस भावना के माध्यम से संसार शरीर और भोगों से अरुचि उत्पन्न होती है उसको वैराग्य भावना कहते हैं।

जिज्ञासा ३. क्या बारह भावनाएँ वैराग्य भावनाओं के लिए निमित्त बनती हैं ?

शान्ति— जी हाँ! आपने सत्य कहा, इसलिए यहाँ पर इनका उल्लेख किया गया है।

जिज्ञासा ४. क्या बारह भावनाओं के बिना देवर्षि बनना सम्भव नहीं है?

शान्ति— बन तो सकते हैं किन्तु निश्चित नहीं होता पर इतना अवश्य है कि इन बारह भावनाओं के निमित्त से सम्भावना बढ़ जाती है।

जिज्ञासा ५. साधु देवर्षि बनने की भावना रखता है क्या ?

शान्ति— जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! किन्तु इन बारह भावनाओं का फल यदि मोक्ष प्राप्त नहीं होता तो ऐसा प्राप्त होता

है, यह कहा जा रहा है।

जिज्ञासा ६. देवर्षि बनने के बाद मोक्ष मिलना निश्चित है क्या ?

शान्ति– जी हाँ! स्वर्ग में रहने वाले लौकान्तिक देव एक भव-अवतारी होते हैं, अर्थात् स्वर्ग से धरती पर आकर मनुष्य बनकर मुनि बनकर मोक्ष को प्राप्त करते ही हैं।

जिज्ञासा ७. लौकान्तिक देवों को देवर्षि क्यों कहते हैं ?

शान्ति– यद्यपि लौकान्तिक देव स्वर्गवासी देव हैं किन्तु वहाँ के भोग विलासों में रमण नहीं करते, पंचम स्वर्ग के ऊपरी स्थान में हमेशा ब्रह्मचर्य की साधना करते हुए निवास करते हैं इसलिए इन्हें देवर्षि कहतें हैं।

जिज्ञासा ८. यहाँ पर बारह भावनाएँ कहने का क्या तात्पर्य है ?

शान्ति– चूंकि अगली ढाल में मुनियों के चारित्र का वर्णन किया जाने वाला है इसलिए उस वैराग्य को उत्पन्न करने के लिए बारह भावनाएँ अनिवार्य होती हैं। इसलिए यहाँ पर मुनि-चारित्र की भूमिका के रूप में बारह भावनाओं का वर्णन किया गया है।

श्री पंचम ढाल का सारांश

श्री छहढाला की पंचम ढाल में बारह भावनाओं का वर्णन करते हुए कहा जा रहा है कि संसार में सब कुछ अनित्य है, कुछ भी शरण रूप नहीं है इसलिए संसार का त्याग करते हुए एकत्व भावना की भावना भानी चाहिए तथा आत्मा से जो कुछ भी अन्यत्व है उसको त्याग करते हुए, अशुचि शरीर से मोह का त्याग करके आस्रव को रोककर संवर का पुरुषार्थ करते हुए कर्मों की निर्जरा करें तथा लोक भावना का चिन्तन करते हुए लोक के शिखर पर विराजमान होने के लिए बोधिदुर्लभ अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की भावना भाते हुए धर्म भावना का चिन्तन करें। जिससे अपने आत्मधर्म का दर्शन हो सके। इस प्रकार की भावना भाते हुए अपने वैराग्य को दृढ़ करें तथा भावनाओं का चिन्तन करते हुए समाधि मरण उत्कृष्ट करें। इसके माध्यम से लौकान्तिक देव बनें ताकि सांसारिक भोगों से विरक्त होकर मुनि बनकर अपनी आत्मा का कल्याण कर सकें।

लेखक की ऐसी भावना है कि बारह भावनाओं का चिन्तन वैराग्य को उत्पन्न करता है। यदि किसी को वैराग्य नहीं है तो उत्पन्न करा देगा और यदि होगा तो उसको दृढ़ और निर्मल बनाते हुए आत्मा में स्थापित करेगा। बारह भावनाओं के चिन्तन से मुक्ति का, मोक्ष का लाभ होगा। लेखक कहना चाहते हैं कि जब तीर्थंकर प्रभु संसार, शरीर और भोगों से विरक्त होकर के वैराग्य के पथ पर अग्रसर होते हैं तब लौकान्तिक देव आ करके उन्हें बारह भावनाओं का चिन्तन कराते हैं अथवा उनके वैराग्य को धारण करने के लिए बारह भावनाओं से परिचित कराते हैं, जिससे तीर्थंकर प्रभु शीघ्र वैराग्यवान हो करके मुनि दीक्षा धारण कर लेते हैं और उनका तप कल्याणक देवों द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि जिन बारह भावनाओं के माध्यम से तीर्थंकर प्रभु मुनि बन जाते हैं तो क्या उनका चिन्तन कर हमें वैराग्य नहीं होगा ? होगा! अवश्य होगा!! इसी भावना से बारह भावनाएँ निरंतर चिन्तन करना चाहिए।

॥ इस प्रकार श्रीछहढाला की पंचम ढाल समाप्त हुई ॥

❑ ❑ ❑

श्री षष्टम ढाल

मुनिचर्या वर्णन

१. मोक्षमार्ग स्वरूप

(ज्ञानोदय)

है संसार असुख तो सुख क्या, कहाँ मिले किस साधन से।
भव्य जीव की यह जिज्ञासा, शांत हुई गुरु भगवन से॥
सुख है मोक्ष मिले निज में जो, मोक्षमार्ग के साधन से।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्रा, मोक्षमार्ग बनता इनसे॥

अर्थ– मुनि चर्या का वर्णन करते हुए यह जिज्ञासा रखी है कि अगर संसार सुख नहीं है, तो सुख क्या है ? कहाँ मिलेगा ? उसका साधन क्या है ? इस प्रकार की भव्य जीव की जिज्ञासा गुरु और भगवान शान्त करते हैं तथा कहते हैं कि मोक्ष सुख है, जो मोक्षमार्ग के अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के मार्ग से प्राप्त होता है।

भावार्थ– संसार में सुख नहीं है, मोक्ष में सुख होता है तथा सुख को प्राप्त करने के लिए सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूपी मोक्षमार्ग को स्वीकार करना चाहिए ऐसा गुरु और प्रभु का उपदेश है।

जिज्ञासा १. संसार को असुख क्यों कहा गया है ?

शान्ति– संसार में किसी भी जीव को किसी भी अवस्था में कोई सुख प्राप्त नहीं होता इसलिए इसे असुख कहा गया है।

जिज्ञासा २. मोक्ष को सुख क्यों कहा गया ?

शान्ति– चूँकि आकुलता का नाम दुख है और जहाँ आकुलता का नाश हो जाए उसको सुख कहते हैं और यह सुख मोक्ष में प्राप्त होता है।

जिज्ञासा ३. मोक्षमार्ग किसे कहते हैं ?

शान्ति– सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के एकता के स्वरूप को मोक्षमार्ग कहते हैं।

जिज्ञासा ४. मोक्षमार्ग को मोक्ष का साधन कहने का तात्पर्य क्या है ?

शान्ति– मोक्षमार्ग को मोक्ष का साधन इसलिए कहा गया है क्योंकि इस साधन के द्वारा ही साध्य अर्थात् मोक्ष प्राप्त होता है।

जिज्ञासा ५. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन तीनों में से अगर एक कम हो जाए तो क्या मोक्षमार्ग नहीं बनेगा ?

शान्ति– जी हाँ! आपने सत्य कहा है, तीनों में से एक का अभाव मोक्षमार्ग की पूर्णता को प्राप्त नहीं होगा।

जिज्ञासा ६. अगर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन तीनों से मिलकर मोक्षमार्ग बनता है तो मुनियों के अलावा मोक्षमार्ग किसी के नहीं माना जाएगा फिर तो बहुत बड़ी अव्यवस्था हो जाएगी, कृपया इसकी शान्ति कीजिए ?

शान्ति– आपने सत्य कहा और सत्यता भी यही है कि मुनियों से ही मोक्षमार्ग का प्रारम्भ होता है किन्तु प्रारम्भिक अवस्था में नीचे के गुणस्थान वाले जीव भी कथंचित् मोक्षमार्गी किसी विवक्षा से माने जाते हैं इसलिए उन्हें भी मोक्षमार्गी मानने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती।

२. सकल चारित्र वर्णन

सम्यग्दर्शन दो प्रकार का, साधन प्रथम सराग हुआ।
साध्य दूसरा वीतराग जो, मुनिव्रत धरकर सिद्ध हुआ॥
सो सराग सम्यग्दर्शन धर, वीतराग का यत्न करो।
धरो सकल चारित्र महाव्रत, मुनि बनकर शिव साध्य वरो॥

अर्थ– मोक्षमार्ग के प्रारम्भ में में सम्यग्दर्शन होता है, जो दो प्रकार का सराग और वीतराग बताया जा रहा है। जिसमें सराग सम्यग्दर्शन साधन के रूप में है तथा वीतराग सम्यग्दर्शन साध्य के रूप में है। जो मुनिव्रत धारण करके सिद्ध होता है इसलिए सराग सम्यग्दर्शन को स्वीकार कर वीतराग सम्यग्दर्शन को धारण करने का प्रयत्न करने के लिए मुनिव्रत के रूप में सकलचारित्र को अर्थात् महाव्रतों को धारण करके मोक्ष रूपी साध्य को स्वीकार करना चाहिए।

भावार्थ– मोक्षमार्ग का प्रारम्भिक स्वरूप सम्यग्दर्शन साधन के रूप में स्वीकार कर वीतराग सम्यग्दर्शन जो कि मुनि व्रतों के धारण करने के बाद उत्पन्न होता है, स्वीकार करना चाहिए। इसलिए वीतराग सम्यग्दर्शन को सिद्ध करने के लिए मुनि बनना चाहिए।

जिज्ञासा १. सराग सम्यग्दर्शन तो पहले बताया जा चुका है क्या यह अन्य प्रकार का है?

शान्ति– जी नहीं! जो पहले बताया जा चुका है यह सराग सम्यग्दर्शन वही है।

जिज्ञासा २. वीतराग सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं?

शान्ति– शुद्ध-उपयोग कहो, निर्विकल्प समाधि कहो, टंकोत्कीर्ण-ज्ञायक स्वभाव कहो या वीतराग सम्यग्दर्शन कहो या निश्चय सम्यग्दर्शन कहो सब एकार्थवाची हैं।

जिज्ञासा ३. क्या सराग सम्यग्दर्शन हुए बिना वीतराग सम्यग्दर्शन नहीं होता?

शान्ति– आपने सत्य कहा कि बिना सराग सम्यग्दर्शन के वीतराग सम्यग्दर्शन होना असम्भव है इसलिए सराग सम्यग्दर्शन करके वीतराग सम्यग्दर्शन पाने का प्रयास करना चाहिए।

जिज्ञासा ४. क्या वीतराग सम्यग्दर्शन बिना मुनि बने नहीं हो सकता क्या ?

शान्ति– जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! क्योंकि वीतराग चारित्र से अविनाभाव सम्बन्ध रखने वाला वीतराग सम्यग्दर्शन होता है।

जिज्ञासा ५. सकलचारित्र किसे कहते हैं ?

शान्ति– वह चारित्र जिसमें चारित्र की पूर्णता होती है उसे सकलचारित्र कहती हैं।

जिज्ञासा ६. सकलचारित्र किसके होता है ?

शान्ति– सकलचारित्र मुनियों के चारित्र से प्रारम्भ होकर छठवें गुणस्थान से लेकर आगे सभी गुणस्थानों में होता है।

जिज्ञासा ७. महाव्रत किसे कहते हैं ?

शान्ति– वे व्रत जो धारण करने से महापुरुष बनते हैं अथवा जिन्हें महा-पुरुषों ने धारण किया है ऐसे उन व्रतों को महाव्रत कहते हैं अथवा जिसमे पाँचों पापों को मन, वचन, काय और कृत, कारित, अनुमोदना से पूर्ण रूप से त्यागा जाता है, उन्हें महाव्रत कहते है।

जिज्ञासा ८. क्या मुनियों के अलावा किसी के पास महाव्रत नहीं होते ?

शान्ति– जी हाँ! आपने सत्य कहा कि मुनियों के पास ही महाव्रत होते हैं और किसी के पास नहीं होते हैं किन्तु उपचार से आर्यिकाओं के पास भी महाव्रत होते हैं।

जिज्ञासा ९. शिव साध्य किसे कहते हैं ?

शान्ति– वह लक्ष्य जो मोक्ष के रूप में प्राप्त किया जाता है उसको शिव साध्य कहते है।

जिज्ञासा १०. मुनि बने बिना शिव साध्य नहीं हो सकता क्या ?

शान्ति– आपने सत्य कहा कि मुनि बने बिना जब वीतराग सम्यग्दर्शन नहीं हो सकता है तो फिर शिव साध्य भी नहीं हो सकता है।

३. मुनि मूलगुण वर्णन

धारो अट्ठाईस मूलगुण, जिनमें पाँच महाव्रत हैं।
पाँच समिति इन्द्रिय जय पाँचों, सात शेष आवश्यक छै॥
द्रव्य भाव सब हिंसा तजना, प्रथम अहिंसा महाव्रत है।
दुखद सत्य हर झूठ त्यागना, दूजा सत्य महाव्रत है॥

अर्थ– मुनियों के अट्ठाईस मूलगुण धारण करने योग्य हैं जिनमें पाँच महाव्रत होते हैं, पाँच समितियों का पालन, पाँच इन्द्रियों का विजय करना, सात शेष गुण तथा छह आवश्यक। इस प्रकार से अट्ठाईस मूलगुणों में सर्वप्रथम अहिंसा महाव्रत होता है, जो द्रव्यहिंसा और भावहिंसा का त्याग करने पर होता है तथा सभी प्रकार के झूठ त्यागना व ऐसा शब्द जो दुखदायक हो उसे भी त्यागना दूसरा सत्य महाव्रत कहलाता है।

भावार्थ– मुनियों के अट्ठाईस मूलगुणों का वर्णन करते हुए कहा जा रहा है कि पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ, पाँच इन्द्रिय-जय, छह आवश्यक और सात शेष मूलगुणों में प्रथम अहिंसा महाव्रत होता है जो सभी प्रकार की हिंसा के त्याग करने पर होता है तथा दुखदायक सत्य और सभी प्रकार के झूठ त्यागना दूसरा सत्य महाव्रत कहलाता है।

जिज्ञासा १. मुनियों के मूलगुण किसे कहते हैं?

शान्ति– मुनियों के उन गुणों को मूलगुण कहते हैं जिनके द्वारा मुनियों के स्वरूप की पहचान होती है।

जिज्ञासा २. मुनियों के मूल गुण कितने होते हैं?

शान्ति– मुनियों के मूलगुण अट्ठाईस होते हैं।

जिज्ञासा ३. मुनियों के अट्ठाईस मूल गुण कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति– मुनियों के अट्ठाईस मूलगुण निम्न होते हैं–
पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ, पाँच इन्द्रियविजय, षट्-आवश्यक और सात शेष मूलगुण।

जिज्ञासा ४. पाँच महाव्रत कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति– पाँच महाव्रत निम्न होते हैं–

१. अहिंसा महाव्रत २. सत्य महाव्रत ३. अचौर्य महाव्रत ४. ब्रह्मचर्य महाव्रत और ५. अपरिग्रह महाव्रत।

जिज्ञासा ५. पाँच समितियाँ कौन-कौन सी होती है?

शान्ति— पाँच समितियाँ निम्न होती हैं–
१. ईर्या समिति २. भाषा समिति ३. एषणा समिति ४. आदान-निक्षेपण समिति और ५. व्युत्सर्ग (प्रतिष्ठापन) समिति।

जिज्ञासा ६. पाँच इन्द्रिय विजय कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति— पाँच इन्द्रिय विजय निम्न होते हैं–
१. स्पर्श इन्द्रिय विजय २. रसना इन्द्रिय विजय ३. घ्राण इन्द्रिय विजय ४. चक्षु इन्द्रिय विजय और ५. कर्ण इन्द्रिय विजय।

जिज्ञासा ७. षट्-आवश्यक कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति— षट्-आवश्यक निम्न होते हैं–
१. सामायिक या समता २. स्तवन ३. वंदना ४. प्रतिक्रमण ५. प्रत्याख्यान और ६. कायोत्सर्ग।

जिज्ञासा ८. सात शेष मूलगुण कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति— सात शेष मूलगुण होते हैं–
१. अस्नान २. अदंतधावन ३. नग्नता ४. भूशयन ५. एकभुक्ति ६. स्थिति भोजन -खड़े होकर भोजन करना और ७. केशलौंच करना।

जिज्ञासा ९. मुनियों के मूलगुण में प्रथम मूलगुण कौन सा है?

शान्ति— मुनियों के मूलगुणों में सबसे पहले पाँच महाव्रत आते हैं जिनमें सबसे पहला महाव्रत अहिंसा महाव्रत होता है।

जिज्ञासा १०. अहिंसा महाव्रत किसे कहते हैं?

शान्ति— जिसमें जीवन भर के लिए सभी प्रकार की हिंसा का त्याग किया जाता है उसको अहिंसा महाव्रत कहते हैं।

जिज्ञासा ११. हिंसा किसे कहते हैं?

शान्ति— जिस कार्य के द्वारा प्राणियों के प्राणों का वियोग किया जाता है, उसको हिंसा कहते हैं। (त.सू. ७-१३)

जिज्ञासा १२. हिंसा कितने प्रकार की होती है?

शान्ति— हिंसा दो प्रकार की होती है–
१. द्रव्य-हिंसा और २. भाव-हिंसा।

जिज्ञासा १३. द्रव्य-हिंसा किसे कहते हैं?

शान्ति— वह हिंसा जिसमें प्राणियों को मारा जाता है अथवा जिसमें शरीर को प्रताड़ित किया जाता है और प्राणों को अलग किया जाता है उसको द्रव्य-हिंसा कहते हैं अथवा षट्-काय के जीवों का घात करना द्रव्य-हिंसा कहलाती है।

जिज्ञासा १४. क्या द्रव्य-हिंसा के भी प्रकार होते हैं?

शान्ति—जी हाँ! द्रव्य-हिंसा चार प्रकार की होती है–
१. संकल्पी हिंसा २. उद्योगी हिंसा ३. आरम्भी हिंसा और ४. विरोधी हिंसा।

जिज्ञासा १५. संकल्पी हिंसा किसे कहते हैं?

शान्ति— वह हिंसा जिसमें प्राणियों को संकल्प पूर्वक योजनाबद्ध तरीके से मारा जाता है या मारने का संकल्प लिया जाता है उसे संकल्पी हिंसा कहते हैं। जैसे मैं तुझे मारूँगा, मैं तुझे छोड़ूँगा नहीं अथवा गालियों का प्रयोग करना यह सब संकल्पी हिंसा में आता है।

जिज्ञासा १६. उद्योगी हिंसा किसे कहते हैं?

शान्ति— वह अहिंसा जो उद्योग-धंधों में, व्यवसाय-धंधों में कार्य करते समय होती है उसको उद्योगी हिंसा कहते हैं।

जिज्ञासा १७. आरम्भी हिंसा किसे कहते हैं?

शान्ति— वह हिंसा जो घर गृहस्थी के आरम्भ सम्बन्धी कार्य करने में होती है उसको आरम्भी हिंसा कहते हैं।

जिज्ञासा १८. विरोधी हिंसा किसे कहते हैं?

शान्ति— वह हिंसा जो धर्म, धर्मात्मा, धर्म-आयतन, देश, परिवार तथा स्वयं की रक्षा के लिए की जाती है उसे विरोधी हिंसा कहते हैं।

जिज्ञासा १९. छह काय के जीव कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति– छह काय के जीव निम्न होते हैं–
१. पृथ्वीकायिक २. जलकायिक ३. अग्निकायिक ४. वायुकायिक ५. वनस्पतिकायिक और ६. त्रसकायिक जीव।

जिज्ञासा २०. भाव-हिंसा किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस हिंसा में आन्तरिक रूप से मन में संक्लेश परिणाम राग-द्वेष आदि उत्पन्न होते हैं उसको भाव-हिंसा कहते हैं।

जिज्ञासा २१. क्या अहिंसा महाव्रत वस्त्र धारी ग्रहण नहीं कर सकते ?

शान्ति– जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! क्योंकि जब तक तन पर वस्त्र रहते हैं पूर्ण रूप से हिंसा का त्याग सम्भव ही नहीं हो सकता किन्तु आर्यिकाओं के उपचार से होता है।

जिज्ञासा २२. सत्य महाव्रत किसे कहते हैं ?

शान्ति– जिस व्रत में सभी प्रकार के झूठ बोलने का त्याग होता है तथा ऐसा सत्य जो दुखदायक होता है उसका भी बोलने का त्याग होता है, उसे सत्य महाव्रत कहते हैं।

जिज्ञासा २३. सत्य तो सत्य होता है अगर उसको बोलने से किसी को दुख होता है तो क्या बोलने में दोष लगता है ?

शान्ति– जी हाँ! ऐसा सत्य जो दूसरों को विपत्ति में डाले अथवा दुखी करता हो उसको झूठ की श्रेणी में ही रखा गया है अतः उसका बोलना बोलने का त्याग भी करना चाहिए।

जिज्ञासा २४. दुखदायक सत्य किसे कहते हैं ?

शान्ति– ऐसा सत्य जो बोलने पर खुद को अथवा सामने वाले व्यक्ति को दुख के लिए आमंत्रण देता हो उसे दुखदायक सत्य कहते हैं।

जिज्ञासा २५. अगर किसी की रक्षा के लिए झूठ बोलना पड़े तो क्या वह सत्य की श्रेणी में आएगा ?

शान्ति– जी हाँ! लेकिन इतना स्मरण में रखना चाहिए कि हम कोई झूठ बोलकर के एक की रक्षा तो करें लेकिन अनेक की हिंसा हो तो वह झूठ कभी नहीं बोलना चाहिए। मुख्य रूप से ऐसा झूठ जो अहिंसा के लिए सुरक्षित रखता हो, वह कथंचित् बोला जा सकता है।

४ . महाव्रत वर्णन

बिन दी वस्तु कभी ना लेना, तीजा अचौर्य महाव्रत है।
नव कोटि से स्त्री तजना, ब्रह्मचर्य ये महाव्रत है॥
मोह संग उपकरण त्यागना, परिग्रह त्याग महाव्रत है।
चार हाथ भू अग्र देखकर, दिन में गति ईर्यापथ है॥

अर्थ– अचौर्य महाव्रत का स्वरूप बताते हुए कहा जा रहा है कि कितनी भी आवश्यकता पड़े किन्तु बिना दी गई वस्तु कभी नहीं लेना यह अचौर्य महाव्रत कहलाता है तथा मन, वचन, काय और कृत, कारित, अनुमोदना से स्त्री मात्र का आजीवन त्याग करना, यह ब्रह्मचर्य महाव्रत कहलाता है तथा पूर्ण रूप से सकल परिग्रह का त्याग करना परिग्रह त्याग महाव्रत कहलाता है तथा दिन में सूर्य के प्रकाश में सामने चार हाथ भूमि को देखकर गति करना ईर्यापथसमिति कहलाती है।

भावार्थ– इस छन्द में अचौर्य महाव्रत, ब्रह्मचर्य महाव्रत और अपरिग्रह महाव्रत का स्वरूप बताते हुए तथा साथ में ईर्यापथसमिति का स्वरूप भी बताया जा रहा है।

जिज्ञासा १. अचौर्य महाव्रत किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस व्रत में किसी भी प्रकार की कोई भी वस्तु बिना दी गई स्वीकार नहीं की जाती है उसको अचौर्य महाव्रत कहते हैं अर्थात् पूर्ण रूप से चोरी रूपी पाप का त्याग करना अचौर्य महाव्रत कहलाता है।

जिज्ञासा २. आवश्यकता पड़ने पर कुछ वस्तु बिना दी हुई ले सकते हैं क्या?

शान्ति– जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! क्योंकि बिना दी गई वस्तु को लेने पर चोरी के पाप का दोष लगता है।

जिज्ञासा ३. ब्रह्मचर्य महाव्रत किसे कहते हैं?

शान्ति– जिस व्रत में नव कोटि से स्त्री का पूर्ण रूप से त्याग किया जाता है उसको ब्रह्मचर्य महाव्रत कहते हैं।

जिज्ञासा ४. नव कोटि किसे कहते हैं ?

शान्ति– मन, वचन, काय और कृत, कारित, अनुमोदना को आपस में गुणा करने पर जो गुणनफल आता है उसे नव कोटि कहते हैं।

जिज्ञासा ५. क्या स्त्रियों से बात करने में ब्रह्मचर्य व्रत में दोष लगता है?

शान्ति– जी नहीं! ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए अगर कभी स्त्रियों से बात करने का प्रसंग उपस्थित होता है तो अपने से बड़ी स्त्रियों को माँ के जैसा, बराबर वाली स्त्रियों को बहन के जैसा और छोटी वाली स्त्रियों को पुत्री के जैसा मानकर व्यवहार किया जाता है।

जिज्ञासा ६. परिग्रह त्याग महाव्रत किसे कहते हैं ?

शान्ति– वह व्रत जिसमें पूर्ण रूप से परिग्रह का, मोह का त्याग किया जाता है उसको परिग्रह त्याग महाव्रत या अपरिग्रह महाव्रत कहते हैं।

जिज्ञासा ७. संग किसे कहते हैं ?

शान्ति– अंतरंग और बहिरंग परिग्रह को संग कहते हैं।

जिज्ञासा ८. परिग्रह किसे कहते हैं ?

शान्ति– वस्तुओं में मूर्च्छा भाव या ममता भाव को ही परिग्रह कहते हैं।

जिज्ञासा ९. परिग्रह कितने प्रकार का होता है ?

शान्ति– परिग्रह दो प्रकार का होता है–
१. अंतरंग परिग्रह और २. बाह्य परिग्रह।

जिज्ञासा १०. अंतरंग परिग्रह किसे कहते हैं ?

शान्ति– आत्मा के साथ रहने वाले विकारी भाव में अपनत्व बुद्धि को अंतरंग परिग्रह कहते हैं।

जिज्ञासा ११. अंतरंग परिग्रह कितने प्रकार का होता है ?

शान्ति– अंतरंग परिग्रह चौदह प्रकार का होता है–
१. मिथ्यात्व २. क्रोध ३. मान ४. माया ५. लोभ ६. हास्य ७. रति ८. अरति ९. शोक १०. भय ११. जुगुप्सा १२. स्त्री वेद १३. पुरुष वेद और १४. नपुंसक वेद।

जिज्ञासा १२. बाह्य परिग्रह किसे कहते हैं ?

शान्ति– अपने से पृथक पर पदार्थों में मूर्च्छा का भाव रखना बाह्य परिग्रह कहलाता है।

जिज्ञासा १३. बाह्य परिग्रह कितने प्रकार का होता है?

शान्ति– बाह्य परिग्रह दस प्रकार का होता है–
१.क्षेत्र २.वास्तु ३.सोना ४.चाँदी ५.धन ६.धान्य ७.दासी ८.दास ९.कुप्य १०.भाण्ड। (त.सू. ७-२९)

जिज्ञासा १४. क्या मोह परिग्रह है?

शान्ति– जी हाँ! मोह के कारण ही पर पदार्थों में ममता या मूर्च्छा होती है इसलिए उसको भी परिग्रह कहा जाएगा। (त.सू. ७-१७)

जिज्ञासा १५. उपकरण भी क्या परिग्रह कहलाएंगे?

शान्ति– जो उपकार करता है उसे उपकरण कहते हैं किन्तु इनमें ममता मूर्च्छा रखने पर वही उपकरण परिग्रह के प्रतीक बन जाते हैं इसलिए उपकरणों को परिग्रह कहा नहीं जा सकता और कहा भी जा सकता है।

जिज्ञासा १६. ईर्यापथ किसे कहते हैं?

शान्ति– साधुओं की पाँच समितियों में ईर्यापथ समिति होती है।

जिज्ञासा १७. समिति किसे कहते हैं?

शान्ति– अपनी चर्या का पालन करते समय जीवों को पीड़ा ना पहुँचे इस प्रकार की प्रवृत्ति करने को समिति कहते हैं।

जिज्ञासा १८. समिति कितने प्रकार की होती हैं?

शान्ति– समिति पाँच प्रकार की होती है–
१. ईर्या समिति २. भाषा समिति ३. एषणा समिति ४. आदान निक्षेपण समिति और ५. व्युत्सर्ग समिति।

जिज्ञासा १९. ईर्या समिति किसे कहते हैं?

शान्ति– दिन में चार हाथ भूमि को आगे देख कर प्रमाद को छोड़कर जीवों को बचाते हुए चलना ईर्या समिति कहलाती है।

जिज्ञासा २०. प्रमाद से चलने पर क्या बाधा उत्पन्न होती है?

शान्ति– शास्त्रों में कहा गया है कि प्रमाद से चलने पर जीव मरें अथवा

न मरें हिंसा का दोष लगता है इसलिए प्रमाद का त्याग कर चलना समिति कहलाती है।

जिज्ञासा २१. प्रमाद किसे कहते हैं ?

शान्ति– अपनी आवश्यक क्रियाओं में उत्साह का नहीं होना प्रमाद कहलाता है।

जिज्ञासा २२. क्या रात में चलना ईर्यापथ समिति नहीं मानी जाएगी ?

शान्ति– जी नहीं! क्योंकि रात में सूर्य के प्रकाश का अभाव होने पर जीवों की सुरक्षा संदिग्ध हो जाएगी अतः ईर्यापथ समिति का दिन में पालन होता है रात्रि में कठिन होता है।

जिज्ञासा २३. चार हाथ भूमि को आगे देख कर क्यों चलना चाहिए ?

शान्ति– चार हाथ भूमि को आगे देखकर चलने से दृष्टि से सूक्ष्मजीव भी दिखाई दे जाते हैं इससे कम देखने पर चलने में दुर्घटना की सम्भावना रहती है और ज्यादा देखने पर जीवों का दिखना संदिग्ध रहता है अतः चार हाथ भूमि को देखकर आगे चलना ईर्या समिति मानी जाती है।

५ . समिति वर्णन

हित-मित आगम सहित बोलना, सुखकर भाषा समिति यही।
बोधि हेतु आहार शुद्धि ही, शुद्ध ऐषणा समिति रही॥
लें रक्खें उपकरण देखकर, आदान निक्षेपण समिति।
दोष रहित मल मूत्र आदि का, त्याग रहा व्युत्सर्ग समिति॥

अर्थ— हित, मित और आगम के अनुसार बोलना, सुख देने वाली वाणी भाषा समिति, बोधि अर्थात् रत्नत्रय के लिए शुद्ध आहार करना एषणा समिति, जीव जन्तुओं से रहित उपकरणों को देखकर लेना और रखना आदान-निक्षेपण समिति और निर्दोष स्थान में मल-मूत्र आदि का त्याग करना व्युत्सर्ग समिति कहलाती है।

भावार्थ— इस छन्द में भाषा समिति, एषणा समिति, आदान-निक्षेपण समिति और व्युत्सर्ग समिति का स्वरूप बतलाया गया है।

जिज्ञासा १. भाषा समिति किसे कहते हैं?

शान्ति— साधु को हितकारी सीमित और आगम के अनुसार सुखदायक बोलना भाषा समिति मानी जाती है।

जिज्ञासा २. एषणा समिति किसे कहते हैं?

शान्ति— रत्नत्रय के पालन के लिए और तपस्या करके कर्मों की निर्जरा करने के लिए सभी दोषों से रहित शुद्ध आहार ग्रहण करना एषणा समिति कहलाती है।

जिज्ञासा ३. एषणा समिति में कौन-कौन से दोष लगते हैं?

शान्ति— एषणा समिति में सोलह उद्गम दोष, सोलह उत्पादन दोष, दस असन दोष और धूम, अंगार आदि चार दोष, कुल मिलाकर छ्यालीस दोष लगते हैं तथा बत्तीस अन्तराय, इन्हें त्याग कर आहार ग्रहण करना चाहिए। (ज्यादा विस्तार के लिए मूलाचार आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया जा सकता है।)

जिज्ञासा ४. दिगम्बर साधु आहार ग्रहण क्यों करता है?

शान्ति— दिगम्बर साधु बोधि या रत्नत्रय पालन करने के लिए आहार ग्रहण करता है।

जिज्ञासा ५. बोधि किसे कहते हैं?

शान्ति— सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप रत्नत्रय को बोधि कहते हैं।

जिज्ञासा ६. अगर आहार में कोई दोष लग जाता है तो क्या मुनि व्रत खण्डित हो जाते हैं ?

शान्ति— जी नहीं! बल्कि लगने वाले दोषों को प्रायश्चित के द्वारा शुद्ध किया जाता है।

जिज्ञासा ७. आदाननिक्षेपण समिति किसे कहते हैं ?

शान्ति— साधु को आवश्यकता पड़ने पर उपकरणों को देखकर लेना और देखकर रखना चाहिए तथा उस स्थान पर जहाँ पर जीव-जन्तु आदि न हों और पवित्र स्थान हो ऐसे स्थान पर उपकरण रखने या लेने चाहिए, इस विधि को आदाननिक्षेपण समिति कहते हैं।

जिज्ञासा ८. साधु के उपकरण कौन-कौन से होते हैं ?

शान्ति— साधु के तीन उपकरण होते हैं-
१. संयम-उपकरण पिच्छिका २. शौच-उपकरण कमण्डलु और ३. ज्ञान-उपकरण शास्त्र, ग्रन्थ, पुराण आदि।

जिज्ञासा ९. दिगम्बर साधुओं को उपकरण कहाँ से प्राप्त होते हैं ?

शान्ति— श्रावक अपने अतिथिसंविभाग व्रत का पालन करते हुए साधुओं की पूरी व्यवस्था करता है अर्थात् श्रावकों से साधुओं को उपकरण प्राप्त होते हैं।

जिज्ञासा १०. व्युत्सर्ग समिति किसे कहते हैं ?

शान्ति— साधु अपने व्रतों का पालन करते हुए शरीर में उत्पन्न होने वाले मल-मूत्र आदि का दोष रहित स्थान में त्याग करता है इस विधि को व्युत्सर्ग समिति कहते हैं।

जिज्ञासा ११. दोष रहित स्थान क्या कहलाता है ?

शान्ति— वह स्थान जो छिद्र रहित हो, ग्राम से दूर हो तथा गूढ़ या गोपनीय हो तथा किसी प्रकार के तिर्यंच या सामान्य मनुष्यों के आने-जाने का स्थान ना हो।

जिज्ञासा १२. मल-मूत्र आदि कहने से क्या तात्पर्य है ?

शान्ति— मल-मूत्र आदि से कहने का तात्पर्य है कि शरीर में उत्पन्न होने वाले जो भी मल-मूत्र, थूक-कफ आदि हैं उनको ऐसे स्थान पर छोड़ना चाहिए जिससे किसी जीव की हिंसा या विराधना न हो, उसको व्युत्सर्ग समिति कहते हैं।

६ . मुनि मूलगुण वर्णन पंचेन्द्रिय-जय व आवश्यक

स्पर्श श्रोत्र रस चक्षु नासिका, ये पंचेन्द्रिय जय करना।
समता धर सामायिक करके, चौबीसी की थुति करना॥
करें वन्दना प्रतिक्रमण फिर, स्वामी प्रत्याख्यान करें।
कायोत्सर्ग करें मूर्छा तज, षट्-आवश्यक रोज करें॥

अर्थ– स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र पंचेन्द्रिय विजय करना, समता पूर्वक सामायिक करना, चौबीसी की स्तुति करना, किसी एक भगवान की वंदना करना, प्रतिक्रमण करना, प्रत्याख्यान करना तथा कायोत्सर्ग करते हुए अपने षट्-आवश्यक रोज करना।

भावार्थ– इस छन्द में पंचेन्द्रिय विजय तथा षट्-आवश्यक के विषय में चर्चा की गई है।

जिज्ञासा १. पंचेन्द्रिय विजय किसे कहते हैं?

शान्ति– स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र के विषयों पर संयम अर्थात् पंचेन्द्रिय-विषय में राग-द्वेष नहीं करना पंचेन्द्रिय विजय कहलाता है।

जिज्ञासा २. स्पर्शन-इन्द्रिय का विजय कैसे होता है?

शान्ति– स्पर्शन के हल्का, भारी, रूखा, चिकना, शीत, उष्ण, कड़ा और नरम इन आठ प्रकार के विषयों में राग-द्वेष नहीं करना स्पर्श-इन्द्रिय का विजय कहलाता है।

जिज्ञासा ३. रसना इन्द्रिय का विजय क्या कहलाता है?

शान्ति– रस के खट्टा, मीठा, कड़वा, कसायला और चरपरा इन विषयों में राग-द्वेष नहीं करना रसना इन्द्रिय का विजय कहलाता है।

जिज्ञासा ४. घ्राण इन्द्रिय का विजय क्या कहलाता है?

शान्ति– गन्ध के सुगन्ध और दुर्गन्ध विषयों में राग-द्वेष नहीं करना घ्राण इन्द्रिय का विजय कहलाता है।

जिज्ञासा ५. चक्षु इन्द्रिय का विजय क्या कहलाता है?

शान्ति– चक्षु के काला, पीला, नीला, लाल और सफेद इन पाँचों वर्णों में राग-द्वेष नहीं करना, चक्षु इन्द्रिय का विजय कहलाता है।

जिज्ञासा ६. कर्ण इन्द्रिय का विजय क्या कहलाता है?

शान्ति— कर्ण के ''स रे ग म प ध नि'' अर्थात् षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद इन विषयों में राग-द्वेष नहीं करना कर्ण इन्द्रिय का विजय कहलाता है।

जिज्ञासा ७. इन्द्रिय विजय करने से क्या होता है ?

शान्ति— इन्द्रिय विजय करने वाले ही तो जितेन्द्रिय जिनेन्द्र भगवान बनते हैं जिसकी भूमिका मुनि से प्रारम्भ होती है।

जिज्ञासा ८. सामायिक क्या कहलाता है ?

शान्ति— सामायिक मुनियों का एक आवश्यक मूलगुण है।

जिज्ञासा ९. आवश्यक मूलगुण किसे कहते हैं ?

शान्ति— जो प्रतिदिन अवश्य ही किया जाता है उसे आवश्यक कहते हैं।

जिज्ञासा १०. सामायिक आवश्यक का स्वरूप कैसा होता है ?

शान्ति— आर्त-रौद्रध्यान का त्याग करते हुए, सुख-दुख में, वन-भवन में, शोक-रोग में, योग-वियोग में आदि विषयों में समानता का समभाव रखना सामायिक कहलाता है।

जिज्ञासा ११. हमने तो सुना है कि सामायिक तीन संध्या में होती है आप तो कह रहे हैं कि समता रखना सामायिक है तो सत्य क्या है?

शान्ति— आपने सत्य सुना है किन्तु तीन संध्याओं में सामायिक करना यह मुनि के लिए का कायोत्सर्ग होता है तथा श्रावक का एक व्रत होता है, किन्तु मुनि चर्या में सामायिक-समता रखना। यह चौबीस घंटा आवश्यक होता है।

जिज्ञासा १२. थुति क्या कहलाती है ?

शान्ति— वर्तमान के चौबीस तीर्थंकर भगवानों की स्तुति करना ही तो स्तुति आवश्यक कहलाता है। इसको ही थुति कहते हैं।

जिज्ञासा १३. क्या स्तुति करना अनिवार्य है ?

शान्ति— जी हाँ! साधुओं को प्रतिदिन चौबीस तीर्थंकर भगवानों के गुणगान करना अनिवार्य होता है।

जिज्ञासा १४. वंदना किसे कहते हैं ?

शान्ति– चौबीस तीर्थंकर में से किसी एक तीर्थंकर की स्तुति करने को वंदना आवश्यक कहते हैं। जिसमें विशुद्धि के साथ नमस्कार आदि किया जाता है।

जिज्ञासा १५. स्तुति और वंदना में क्या अंतर है?

शान्ति– स्तुति में चौबीस तीर्थंकरों का गुणगान किया जाता है तथा वंदना में एक तीर्थंकर का गुणगान किया जाता है, इनके अन्य ग्रन्थों में अन्य नाम भी बतलाए गए हैं।

जिज्ञासा १६. प्रतिक्रमण किसे कहते हैं?

शान्ति– अपने व्रतों में विगत काल में लगे हुए दोषों को दूर करने का अथवा शोधन करने का नाम प्रतिक्रमण कहलाता है।

जिज्ञासा १७. प्रतिक्रमण कितने प्रकार के होते हैं?

शान्ति– प्रतिक्रमण सात प्रकार के होते हैं–
१. दैवसिक २. रात्रिक ३. ऐर्यापथिक ४. पाक्षिक ५. चातुर्मासिक ६. सांवत्सरिक और ७. औत्तमार्थिक।

जिज्ञासा १८. दैवसिक प्रतिक्रमण किसे कहते हैं?

शान्ति– दिन भर में आवश्यक कृति-कर्म करने पर व्रतों में लगने वाले दोषों के शोधन करने का नाम दैवसिक प्रतिक्रमण कहलाता है।

जिज्ञासा १९. रात्रिक प्रतिक्रमण किसे कहते हैं?

शान्ति– रात्रि में लगने वाले दोषों के शोधन करने का नाम रात्रिक प्रतिक्रमण होता है।

जिज्ञासा २०. ऐर्यापथिक प्रतिक्रमण किसे कहते हैं?

शान्ति– ऐर्यापथिक अर्थात् आना-जाना करने में लगने वाले दोषों के दूर करने का नाम ऐर्यापथिक प्रतिक्रमण कहलाता है।

जिज्ञासा २१. पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण किसे कहते हैं?

शान्ति– पक्ष में, चातुर्मास में और वर्ष भर में लगने वाले दोषों के शोधन का नाम क्रमशः पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक या वार्षिक प्रतिक्रमण कहते हैं।

जिज्ञासा २२. औत्तमार्थिक प्रतिक्रमण किसे कहते हैं?

शान्ति– सल्लेखना के समय जब सब प्रकार के आहार का त्याग कर समाधि को साधक उद्यत होता है तो उस समय जीवन भर के लगे हुए दोषों को गुरु के सामने शोधन करने की विधि को औत्तमार्थिक प्रतिक्रमण कहते हैं।

जिज्ञासा २३. प्रत्याख्यान किसे कहते हैं?

शान्ति– मुनिचर्या में भविष्य में लगने वाले दोषों को पहले से ही त्याग देने का नाम प्रत्याख्यान होता है अथवा त्याग का नाम प्रत्याख्यान होता है।

जिज्ञासा २४. कायोत्सर्ग किसे कहते हैं?

शान्ति– अपने शरीर से ममता-मूर्च्छा या आसक्ति का त्याग करने का नाम कायोत्सर्ग कहलाता है अथवा दोनों पैरों में चार अंगुल या चार और ग्यारह अंगुल का अन्तर रखते हुए निश्चल भाव से खड़े हो जाने का नाम कायोत्सर्ग है जिसमें सभी प्रकार के माया-मूर्च्छा का त्याग किया जाता है, कायोत्सर्ग कहलाता है।

जिज्ञासा २५. क्या कायोत्सर्ग श्रावक लोग भी कर सकते हैं?

शान्ति– कायोत्सर्ग मुनियों का आवश्यक मूलगुण है फिर भी श्रावक इसको करते हुए देखने में आते हैं।

जिज्ञासा २६. कायोत्सर्ग करना आवश्यक क्यों है?

शान्ति– बिना कायोत्सर्ग के आज तक किसी को ना तो केवलज्ञान हुआ, ना ही निर्वाण हुआ इसलिए सभी को शिक्षा के रूप में कायोत्सर्ग करना आवश्यक है।

७ . शेष मूलगुण वर्णन

केशलौंच अस्नान नग्नता, थिति-भोजन क्षिति-शयन करें।
अदन्तधावन एक भुक्ति ये, सात शेष गुण ग्रहण करें॥
जैनधर्म के पता-पताका, चलते-फिरते तीर्थ-मुनि।
धारें तप दस धर्म भावना, बाईस परिषह सहें मुनि॥

अर्थ– मुनियों के शेष मूलगुण बताते हुए कहा जा रहा है कि केशलौंच करना, स्नान नहीं करना, नग्न रहना, खड़े होकर भोजन करना, भूमि पर शयन करना, दातून-मंजन नहीं करना तथा दिन में एक बार भोजन करना। ये सात शेष मूलगुण होते हैं। दिगम्बर साधुओं को जिनशासन की पता और पताका अर्थात् ध्वज कहा जाता है। ये चलते-फिरते मुनि तीर्थ के स्वरूप होते हैं तथा बारह प्रकार के तप, दसलक्षण धर्म, बारह भावना, सोलहकारण भावना सम्बन्धी साधना करते हुए बाईस परिषहों को सहन करते हैं।

भावार्थ– मुनियों के शेष सात मूलगुण तथा भावना भाते हुए परिषहों को सहन करने का स्वरूप बताया जा रहा है।

जिज्ञासा १. मुनियों के शेष सात मूलगुण कौन-कौन से होते हैं?

शान्ति– मुनियों के शेष सात मूलगुण निम्न होते हैं–

१. केशलौंच–सिर, दाढ़ी और मूँछ के बालों को दो से चार महीने के बीच में अपने हाथों से उखाड़ना।

२. अस्नान–होने वाली हिंसा से बचने के लिए तथा राग का त्याग करने के लिए स्नान का त्याग करना।

३ अदंतधावन–दातून-मंजन आदि के माध्यम से दाँतों का मल नहीं निकालना।

४. नग्नता–गर्मी, सर्दी या बारिश किसी भी समय में वस्त्रों का प्रयोग नहीं करना।

५. भूशयन–आवश्यकता पड़ने पर रात्रि के पिछले पहर में भू, पाषाण या लकड़ी के पाटे पर निद्रा लेना।

६. एक भुक्ति–दिन में एक बार ही विधिवत आहार लेना।

७. स्थिति भोजन–खड़े-खड़े पाणी-पात्र में ही आहार करना।

जिज्ञासा २. केशलौंच करना आवश्यक क्यों है?

शान्ति— ज्यादा बड़े बाल होने पर उनमें जीवों की उत्पत्ति सम्भव है अतः हिंसा से बचने के लिए तथा अपनी चर्या को स्वाश्रित रखने के लिए तथा अध्यात्म की दृष्टि से शरीर और चेतना भिन्न-भिन्न है ऐसे भेद विज्ञान का प्रयोग करने के लिए केशलौंच किया जाता है।

जिज्ञासा ३. स्नान करने का त्याग आवश्यक क्यों है?

शान्ति— अरे भाई! स्नान करने में जल-जीवों की हिंसा या घात होता है अतः साधु हिंसा से बचने के लिए स्नान नहीं करते तथा ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने के लिए भी स्नान नहीं करते।

जिज्ञासा ४. शरीर में मैल लगने पर क्या करते हैं?

शान्ति— शरीर में मैल लगने पर साधु उसका प्रतिकार नहीं करते किन्तु श्रावक या सेवक गण वैयावृत्ति के माध्यम से साधु को स्वस्थ रखते हैं।

जिज्ञासा ५. नग्न रहना आवश्यक क्यों है?

शान्ति— अरे भाई! जन्म के समय दिगम्बर, मृत्यु के समय दिगम्बर तो फिर बीच में आडम्बर क्यों तथा नग्न-दिगम्बर रहने में पूर्ण रूप से स्वतंत्रता होती है और अहिंसा धर्म का पालन होता है।

जिज्ञासा ६. सभी नारकी जीव, सभी तिर्यंच प्रायः दिगम्बर रहते हैं तो क्या उन्हें दिगम्बर साधु जैसा माना जाए?

शान्ति— जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! क्योंकि ये कर्म उदय के कारण दिगम्बर बने हैं। ये संकल्प पूर्वक दिगम्बर नहीं होने से उन्हें दिगम्बर साधु कभी नहीं कहना चाहिए।

जिज्ञासा ७. थिति भोजन मूलगुण क्या कहलाता है?

शान्ति— साधु खड़े होकर के ही भोजन करते हैं इस विधि को स्थिति भोजन या थिति भोजन कहते हैं।

जिज्ञासा ८. दिगम्बर साधु खड़े होकर भोजन क्यों करते हैं?

शान्ति— दिगम्बर साधुओं के खड़े होकर भोजन करने के पीछे यह रहस्य होता है कि जब तक हमारे पैरों में खड़े होने की क्षमता रहेगी तथा

हाथों में भोजन लेने की क्षमता रहेगी तभी तक हम आहार ग्रहण करेंगे। क्षमता के अभाव में हम समाधि मरण स्वीकार करेंगे किन्तु आहार के प्रति गृद्धता नहीं रखेंगे, आहार के प्रति आसक्ति भाव त्यागने को थिति भोजन कहते हैं।

जिज्ञासा ९. क्या बैठकर आहार करने में आसक्ति होती है?

शान्ति— बैठकर भोजन करने में सुविधा होती है इसलिए सामान्य मात्रा से कुछ अधिक आहार ग्रहण करने की क्षमता आ जाती है जो व्रतों में दोष के लिए आमंत्रण होता है अतः दिगम्बर साधु खड़े होकर आहार करते हैं।

जिज्ञासा १०. क्या आवश्यकता पड़ने पर दिगम्बर साधु दुबारा आहार नहीं कर सकता?

शान्ति— जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! दिगम्बर साधु दोबारा आहार स्वीकार नहीं करता भले ही मृत्यु स्वीकार कर लेता है।

जिज्ञासा ११. साधु को दोबारा आहार करने में क्या दोष आता है?

शान्ति— साधु को दोबारा भोजन करने में सारे ही दोष उत्पन्न होते हैं।

जिज्ञासा १२. दिगम्बर साधु को जैन धर्म के पता-पताका क्यों कहा गया जबकि इनसे बड़े-बड़े साधक भी जैन धर्म में होते हैं?

शान्ति— जैन धर्म बिना दिगम्बरत्व के कभी भी हो ही नहीं सकता और इस दिगम्बरत्व को दिगम्बर साधु के रूप में ही स्वीकार किया जाता है। कोई कितना बड़ा साधक ही क्यों ना हो यहाँ तक कि अरिहन्त परमेष्ठी ही क्यों ना हों उनका केवल दिगम्बर रूप ही दिखाई देता है इसलिए जिनधर्म के यह पता और पताका अर्थात् पता देने वाले हैं और स्वयं ध्वज रूप भी होते हैं।

जिज्ञासा १३. दिगम्बर साधु को चलते-फिरते तीर्थ क्यों कहा गया है?

शान्ति— परम पूज्य आचार्य श्री कुन्दकुन्द महाराज अष्टपाहुड़ में कहते हैं कि जिनेन्द्र भगवानों के बिम्बों के आलय-जिनमन्दिर तो औपचारिक तीर्थ हैं किन्तु साक्षात् तीर्थ तो दिगम्बर साधु ही माना जाता है इसलिए इन्हें चलते फिरते तीर्थ कहा गया है।

जिज्ञासा १४. दिगम्बर साधु और कौन-कौन से गुण या भावना धारण करते हैं ?

शान्ति— दिगम्बर साधु निम्न गुण या भावना धारण करते हैं–

१. बारह तप।

२. दसलक्षण धर्म।

३. बारह भावना।

४. सोलहकारण भावना।

५. बाईस परिषह विजय इत्यादि।

जिज्ञासा १५. तप किसे कहते हैं ?

शान्ति— वह साधना जिसके माध्यम से कर्मों का क्षय किया जाता है तथा कर्मों की निर्जरा की जाती है उसको तप कहते हैं।

जिज्ञासा १६. तप कितने प्रकार के होते हैं ?

शान्ति— तप दो प्रकार के होते हैं–

(क) बहिरंग तप या बाह्य तप—जो तप अन्य मतों में भी देखने में आते हैं तथा स्पष्ट रूप से देखने में आते हैं उन्हें बहिरंग या बाह्य तप कहते हैं, जो छह प्रकार के होते हैं–

१. अनशन—उपवास करना।

२. अवमौदर्य—भूख से कम भोजन करना।

३. वृत्ति परिसंख्यान—नियम पूर्वक भोजन करना।

४. रस परित्याग—रस त्याग कर भोजन करना।

५. विविक्तशय्यासन—एकान्त में सोना या बैठना।

६. कायक्लेश—शरीर को कष्ट देते हुए तप करना।

(ख) अंतरंग तप—जो तप बाह्य तपों के सहयोग के लिए होते हैं तथा जो अंदर से मन का नियम आदि बनाने पर होते हैं उन्हें अभ्यन्तर या अंतरंग तप कहते हैं, जो छह प्रकार के होते हैं–

१. प्रायश्चित—व्रतों में लगे दोषों का शोधन करना।

२. विनय—पूज्य पुरुषों का मन, वचन और काय से आदर करना।

३. **वैयावृत्ति**—शरीर तथा वस्तुओं से मुनियों की सेवा करना।
४. **स्वाध्याय**—आलस्य त्यागकर ज्ञान आराधना करना।
५. **व्युत्सर्ग**—सकल परिग्रह का त्याग करना।
६. **ध्यान**—चित्त की चंचलता रोक कर मन एकाग्र करना।

जिज्ञासा १७. दसलक्षण धर्म किसे कहते हैं?

शान्ति— मुनि जब ध्यान अवस्था से बाहर निकलते हैं तो समितियों का पालन करते हुए जिन धर्मों का पालन करते हैं उन्हें दसलक्षण धर्म कहते हैं। यह दस होने से इन्हें दसलक्षण कहते हैं–

१. **उत्तम क्षमा धर्म**—स्वार्थ रहित होकर क्रोध का त्याग करना।
२. **उत्तम मार्दव धर्म**—किसी भी प्रकार का मान नहीं करना।
३. **उत्तम आर्जव धर्म**—मायाचार या छल-कपट का त्याग करना।
४. **उत्तम शौच धर्म**—लोभ का त्याग कर आत्मा को पवित्र बनाना।
५. **उत्तम सत्य धर्म**—असत्य त्याग कर हित-मित-प्रिय बोलना।
६. **उत्तम संयम धर्म**—पंचेन्द्रिय और मन वश करते हुए षट् काय के जीवों की रक्षा करना।
७. **उत्तम तप धर्म**—कर्म निर्जरा या क्षय करने को तप करना।
८. **उत्तम त्याग धर्म**—स्वार्थ रहित होकर चार प्रकार का दान देना।
९. **उत्तम आकिंचन्य धर्म**—पर पदार्थों में मूर्च्छा या ममत्व का त्याग करना।
१०. **उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म**—स्त्री मात्र का त्याग कर अपनी आत्मा में रमण करना।

जिज्ञासा १८. भावना किसे कहते हैं?

शान्ति— जिनका बार-बार चिन्तन किया जाए उन्हें भावना कहते हैं। यह बारह प्रकार की पिछली ढाल में बताई गई हैं तथा सोलहकारण भावनाएँ भी होती हैं, जो तीर्थंकर प्रकृति के बन्ध में निमित्त बनती हैं जो निम्न है–

१. **दर्शनविशुद्धि भावना**—सम्यग्दर्शन निर्दोष धारण करते हुए विश्व कल्याण की भावना करना।

२. **विनयसम्पन्न भावना**—पूज्य पुरुषों की विनय करना।
३. **शीलव्रत भावना**—शील और व्रत निर्दोष पालना।
४. **अभीक्ष्णज्ञान भावना**—निरंतर ज्ञान अभ्यास करना।
५. **संवेग भावना**—संसार के दुखों से भयभीत रहना।
६. **त्याग भावना**—यथाशक्ति त्याग-दान करना।
७. **तप भावना**—यथाशक्ति तप करना।
८. **साधुसमाधि भावना**—दिगम्बर साधु पर आए हुए विघ्नों को दूर करना तथा संयम की रक्षा करना।
९. **वैयावृत्ति भावना**—रोगी या वृद्ध साधुओं की सेवा करना।
१०. **अर्हतभक्ति भावना**—अर्हंत-भगवंतों की भक्ति करना।
११. **आचार्यभक्ति भावना**—आचार्य परमेष्ठियों की भक्ति करना।
१२. **बहुश्रुतभक्ति भावना**—उपाध्याय परमेष्टियों की भक्ति करना।
१३. **प्रवचनभक्ति भावना**—जिनवाणी-शास्त्रों की सेवा-भक्ति करना।
१४. **आवश्यक-अपरिहाणि भावना**—समय से अपने आवश्यक करना।
१५. **मार्गप्रभावना भावना**—जिनशासन का प्रभाव प्रकाशित व उन्नत करना।
१६. **प्रवचनवात्सल्य भावना**—सहधर्मियों से गो-बछड़े के समान प्रीति करना।

जिज्ञासा १९. परिषह जय किसे कहते हैं ?

शान्ति— मुनियों के जीवन में आने वाले संकट या उपसर्गों को कर्म निर्जरा हेतु सहन करना परिषह विजय कहलाता है। यह बाईस होते हैं जो निम्न है-

१. **क्षुधा परिषहजय**—भूख लगने पर उसे सहन करना।
२. **तृषा परिषहजय**—प्यास लगने पर उसे सहन करना।
३. **शीत परिषहजय**—शीत की बाधा होने पर सहन करना।
४. **उष्ण परिषहजय**—गर्मी की बाधा होने पर सहन करना।

५. दंशमशक परिषहजय—मच्छर डांस आदि की बाधा को सहन करना।

६. नाग्न्य परिषहजय—नग्न रहने पर उसे सहन करना।

७. अरति परिषहजय—अरुचि होने पर भी संयम से प्रीति नहीं हटना।

८. स्त्री परिषहजय—स्त्रियों के हाव-भाव बिना मोहित हुए सहन करना।

९. चर्या परिषहजय—गमन या विहार करने में खेद-खिन्न नहीं होना।

१०. निषद्या परिषहजय—आसन लगाते समय परेशानियों को सहन करना।

११. शैया परिषहजय—सोते समय होने वाली परेशानियों को सहन करना।

१२. आक्रोश परिषहजय—दुष्टों के कठोर शब्दों को शांत भाव से सहन करना।

१३. वध परिषहजय—तलवार आदि से मारे जाने पर भी सहन करना।

१४. याचना परिषहजय—प्राण कण्ठ तक आने पर भी याचना नहीं करना।

१५. अलाभ परिषहजय—भिक्षा ना मिलने पर सहन करना।

१६. रोग परिषहजय—अनेक रोग होने पर भी उन्हें शांति से सहन करना।

१७. तृणस्पर्श परिषहजय—चलते समय पैरों में काँटे-कंकड़ आदि चुभने पर सहन करना।

१८. मल परिषहजय—शरीर में मल लगने पर उसे सहन करना।

१९. सत्कार पुरस्कार परिषहजय—सम्मान आदि ना मिलने पर खेद-खिन्न नहीं होना।

२०. प्रज्ञा परिषहजय—अधिक ज्ञान होने पर भी अभिमान नहीं करना।

२१. अज्ञान परिषहजय—ज्ञान नहीं होने पर खेद-खिन्न नहीं होना।

२२. अदर्शन परिषहजय—साधना करने पर भी ऋद्धि-सिद्धि ना होने पर खेद-खिन्न नहीं होना।

८. तेरह प्रकार चरित्र वर्णन

तेरहविध-चारित्र धार ज्यों, ध्यान गुप्ति आसीन हुये।
षट्-कारक के भेद मिटे त्यों, शुद्ध बुद्ध निज लीन हुये॥
वीतराग सम्यग्दर्शन ये, रहा शुद्ध उपयोग यही।
यही स्वरूपाचरण-चरित्रा, निश्चय रत्नत्रय है यही॥

अर्थ— मुनि-साधु परमेष्ठी तेरह प्रकार का चरित्र धारण कर जैसे ही गुप्ति में आसीन होते हैं वैसे ही षट्-कारक के भेद मिट जाते हैं और वे अपने शुद्ध-बुद्ध आत्मतत्व में लीन हो जाते हैं, इसको ही वीतराग सम्यग्दर्शन, शुद्धोपयोग, स्वरूपाचरण चारित्र या निश्चय रत्नत्रय कहते हैं।

भावार्थ— इस छन्द में मुनियों के तेरह प्रकार के चारित्र और ध्यान में लीन होने की बात कहते हुए कहा जा रहा है कि जैसे ही मुनि ध्यान में लीन होते हैं षट्-कारक के भेद समाप्त होकर के शुद्ध-बुद्ध आत्मतत्व में लीन हो जाते हैं, इसी ध्यान अवस्था को वीतराग सम्यग्दर्शन, शुद्धोपयोग, स्वरूपाचरण चारित्र या निश्चय रत्नत्रय कहते हैं।

जिज्ञासा १. तेरह प्रकार का चारित्र क्या कहलाता है?

शान्ति— पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ और तीन गुप्तियाँ मिलकर तेरह प्रकार का चारित्र कहलाता है।

जिज्ञासा २. गुप्ति किसे कहते हैं?

शान्ति— प्रवृत्ति को पूर्ण रूप से रोकने का नाम गुप्ति है।

जिज्ञासा ३. गुप्तियाँ कितने प्रकार की होती हैं?

शान्ति— गुप्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं—

१. मनो गुप्ति—मन की समस्त प्रवृत्तियों को रोकना।

२. वचन गुप्ति—वचन के पूर्ण व्यापार को रोकना।

३. काय गुप्ति—काय की पूर्ण प्रवृत्ति को रोकना।

जिज्ञासा ४. क्या गुप्ति बिना ध्यान नहीं हो सकता?

शान्ति— ध्यान तो हो सकता है लेकिन शुद्ध आत्मतत्व के योग्य ध्यान की

यहाँ चर्चा चल रही है, वह बिना गुप्ति के कभी नहीं हो सकता।

जिज्ञासा ५. षट्-कारक के भेद किसे कहते हैं?

शान्ति— संस्कृत व्याकरण में जो कारक आए हैं उन्हें षट्-कारक कहते हैं अर्थात् कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, सम्बन्ध और अधिकरण। ध्यान के समय ये कारक समाप्त हो जाते हैं।

जिज्ञासा ६. शुद्ध-बुद्ध क्या कहलाता है?

शान्ति— वह आत्मतत्व जो राग-द्वेष आदि विकारी भावों से रहित निर्मल होता है, उस आत्मतत्व को शुद्ध-बुद्ध आत्म कहते हैं।

जिज्ञासा ७. वीतराग-सम्यग्दर्शन, शुद्धोपयोग, स्वरूपाचरण चारित्र और निश्चय रत्नत्रय किसे कहते हैं?

शान्ति— यह सब पर्यायवाची नाम हैं और उसी शुद्ध-बुद्ध आत्मतत्व में लीन होने की अवस्था को कहते हैं।

९ . शुद्धोपयोग के स्वामी वर्णन

कायोत्सर्ग दशा निर्वृत्ति, में मुनियों को सम्भव ये।
वस्त्रधारि को कभी न होता, अतुलनीय आतम सुख ये॥
मुनिमुद्रा का दर्शन दुर्लभ, भव्य जीव को धन्य करे।
अभव्य जीवों को प्रभु जैसा, कहाँ मिले कब धन्य करे॥

अर्थ— मुनियों का शुद्धोपयोग कायोत्सर्ग अवस्था अर्थात् पूर्ण रूप से प्रवृत्ति का त्याग करने पर मुनियों को ही सम्भव हो सकता है। यह शुद्धोपयोग वस्त्रधारी को कभी नहीं हो सकता क्योंकि यह अतुलनीय आतम सुख है। ऐसे मुनियों की मुनिमुद्रा के दर्शन बहुत दुर्लभता से भव्य जीवों को धन्य करने वाले होते हैं किन्तु अभव्य जीवों को कभी भी प्राप्त नहीं होते जैसे साक्षात अरिहन्त भगवान के दर्शन अभव्य जीवों को प्राप्त नहीं होते।

भावार्थ— शुद्धोपयोग निर्वृत्ति या कायोत्सर्ग दशा में मुनियों को सम्भव होता है, वस्त्रधारी को यह अतुलनीय आतम सुख कभी नहीं होता। मुनिमुद्रा का दर्शन भव्य जीव को दुर्लभता से प्राप्त होता है तथा अभव्य को प्रभु के समान प्राप्त नहीं होता।

जिज्ञासा १. कायोत्सर्ग दशा या निर्वृत्ति दशा किसे कहते हैं ?

शान्ति— शरीर की वह अवस्था जिसमें शरीर के प्रति पूर्ण रूप से मूर्च्छा या आसक्ति का त्याग करके निश्चल भाव से खड़े हो जाना या बैठ जाना उस अवस्था को कायोत्सर्ग या निर्वृत्ति अवस्था या दशा कहते हैं।

जिज्ञासा २. यह अवस्था तो किसी को भी हो सकती है फिर मुनियों को ही क्यों मानी गई ?

शान्ति— निश्चल अवस्था तो किसी को हो सकती है किन्तु यह संयम के साथ राग-द्वेष की प्रवृत्ति त्याग करके होने वाली अवस्था का विषय है।

जिज्ञासा ३. वस्त्रधारी को शुद्धोपयोग क्यों नहीं होता ?

शान्ति— शुद्धोपयोग आचार्य श्री कुन्दकुन्द भगवान के अनुसार संयम

प्रत्यय के साथ ही होता है और वस्त्रधारी को कभी भी संयम लेश मात्र भी नहीं हो सकता इसलिए वस्त्रधारी को शुद्धोपयोग होने की सम्भावना नहीं रहती।

जिज्ञासा ४. शुद्धोपयोग अतुलनीय आतम सुख कैसे होता है ?

शान्ति– शद्धोपयोग में राग-द्वेष, मोह, कषायें और विकारी भावों का नहीं होना ही अतुलनीय आतम सुख कहलाता है जो शुद्धोपयोग में होता है।

जिज्ञासा ५. मुनिमुद्रा का दर्शन दुर्लभ कैसे होता है जबकि मुनियों के दर्शन तो सहज रूप से प्राप्त हो जाते हैं ?

शान्ति– बहुत पुण्य से भव्य जीवों के लिए मुनिमुद्रा का दर्शन होता है इसलिए उसको दुर्लभ माना गया है।

जिज्ञासा ६. मुनिदर्शन क्या मात्र भव्य जीवों को मिलता है ?

शान्ति– जी हाँ! आपने सत्य कहा, मुनिदर्शन मात्र भव्य जीवों को ही प्राप्त होता है जैसे चतुर्थ काल में अभव्य जीवों को साक्षात् अरिहन्त प्रभु के दर्शन नहीं होते इसी तरह से अभव्य जीवों को मुनिमुद्रा का दर्शन भी नहीं होता होगा।

जिज्ञासा ७. क्या मुनिमुद्रा के बिना अपना कल्याण नहीं कर सकते ?

शान्ति– आपने सत्य कहा, मुनिदर्शन किए बिना अथवा मुनि बने बिना कभी भी हम अपने आपको धन्य या अपने आप का कल्याण नहीं कर सकते।

१०. शुद्धोपयोग का प्रभाव

यों एकत्व-विभक्त आतमा, ज्ञाता-दृष्टा गुण-श्रेणी।
नय निश्चय व्यवहार पक्ष बिन, ध्याकर चढें क्षपकश्रेणी॥
घाति हरण कर बने केवली, समवसरण अरिहन्त हुये।
दिव्यध्वनि दे तीर्थ प्रवर्तन, करके सिद्ध महन्त हुये॥

अर्थ— शुद्धोपयोग के प्रभाव से एकत्व-विभक्त, ज्ञाता-दृष्टा, आत्मा, गुण श्रेणी को प्रकट करता हुआ निश्चय और व्यवहार-नय के पक्ष को अतिक्रान्त करके क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ होकर घातिया कर्मों का नाश करते हुए केवलज्ञान को प्राप्त होकर अरिहन्त पद से विभूषित होकर समवसरण में विराजमान होकर दिव्यदेशना देकर तीर्थ का प्रवर्तन करते हुए शेष अघातिया कर्मों को नष्ट करते हुए सिद्ध पद को प्राप्त करते हैं।

भावार्थ— शुद्धोपयोग के प्रभाव को बताते हुए कहा जा रहा है कि वह एकत्व-विभक्त, आत्मा ज्ञाता-दृष्टा रूप गुण श्रेणी को प्राप्त करते हुए व्यवहार-निश्चय नय के पक्ष का अतिक्रान्त कर क्षपक श्रेणी के माध्यम से घातिया कर्मों को नष्ट करके अरिहन्त बनकर केवलज्ञान प्राप्त करके समवसरण में विराजमान होकर दिव्यध्वनि के माध्यम से तीर्थ-प्रवर्तन करते हुए शेष कर्मों को नष्ट कर सिद्ध परमेष्ठी पद को प्राप्त करते हैं।

जिज्ञासा १. एकत्व-विभक्त आत्मा किसे कहते हैं?

शान्ति— ध्यान की वह अवस्था जिसमें आत्मा से पृथक सभी पदार्थों से विरक्त होते हुए अपनी ज्ञाता-दृष्टा, गुण श्रेणी की आत्मा का ध्यान किया जाता है उसे एकत्व-विभक्त आत्मा कहते हैं।

जिज्ञासा २. ज्ञाता-दृष्टा आत्मा किसे कहते हैं?

शान्ति— वह आत्मा जिसमें मात्र जानने और देखने के गुण से कार्य होता है, उसको ज्ञाता-दृष्टा आत्मा कहते हैं।

जिज्ञासा ३. गुण-श्रेणी किसे कहते हैं?

शान्ति— अपने आत्मा के अनन्त गुणों को प्रकट करने की प्रक्रिया को गुण-श्रेणी कहते हैं अथवा कर्मों की निर्जरा को गुण श्रेणी कहते हैं।

जिज्ञासा ४. क्या आत्मा व्यवहार और निश्चय के पक्ष के बिना होती है?

शान्ति– जी हाँ! आपने सत्य कहा, व्यवहार और निश्चयनय तो साधन है लेकिन साध्य रूप आत्मा के नयपक्षों से अतिक्रान्त होती है। (स.सा. १४९)

जिज्ञासा ५. क्षपक श्रेणी किसे कहते हैं?

शान्ति– मुनियों की ध्यान की वह अवस्था जिसमें कर्मों का नाश करते हुए साधक केवलज्ञान को प्राप्त करता है उस ध्यान प्रक्रिया की अवस्था विशेष को क्षपक श्रेणी कहते हैं।

जिज्ञासा ६. घातिया कर्म किसे कहते हैं?

शान्ति– कर्मों के आठ प्रकार को दो प्रकार से विभक्त किया गया है–
१. घातिया कर्म और २. अघातिया कर्म।

जिज्ञासा ७. घातिया कर्म किसे कहते हैं?

शान्ति– वे कर्म जो आत्मा के गुणों का घात करते हैं उन्हें घातिया कर्म कहते हैं। जो चार होते हैं–
१. ज्ञानावरणी २. दर्शनावरणी ३. मोहनीय और ४. अंतराय।

जिज्ञासा ८. अघातिया कर्म किसे कहते हैं?

शान्ति– वे कर्म जिनके रहते हुए जीव को मुक्ति प्राप्त नहीं होती, उन्हें अघातिया कर्म कहते हैं।

जिज्ञासा ९. केवली किसे कहते हैं?

शान्ति– जब मुनि चार घातिया कर्मों को नष्ट करके केवलज्ञान प्राप्त कर लेते हैं तो उस अवस्था को केवली या कैवल्य अवस्था कहते हैं।

जिज्ञासा १०. अरिहन्त किसे कहते हैं?

शान्ति– जिन्होंने घातिया कर्म रूपी शत्रुओं का नाश कर दिया है उन्हें अरिहन्त कहते हैं अथवा जो तीन लोकों से पूज्यता को प्राप्त हुए हैं, उन्हें अरिहन्त कहते हैं।

जिज्ञासा ११. समवसरण किसे कहते हैं?

शान्ति– अरिहन्त भगवान जब तीर्थ प्रवर्तन के लिए अथवा दिव्यदेशना देकर धर्म का उपदेश देने के लिए जिस सभा में विराजमान होते

हैं उस सभा को समवसरण सभा कहते हैं। इसमें बारह सभाएँ होती हैं। (ज्यादा विस्तार के लिए अन्य ग्रन्थों से अध्ययन किया जा सकता है।)

जिज्ञासा १२. दिव्यध्वनि किसे कहते हैं?

शान्ति– तीर्थंकर प्रभु समवसरण में विराजमान होकर संध्याकालों में जो तत्त्व की या धर्म की देशना देते हैं उस ओंकार रूप ध्वनि को दिव्यध्वनि कहते हैं।

जिज्ञासा १३. तीर्थ-प्रवर्तन किसे कहते हैं?

शान्ति– देशना के माध्यम से संसारी प्राणियों को धर्म का स्वरूप बताकर उन्हें उस पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं, इसी को तीर्थ-प्रवर्तन कहते हैं।

जिज्ञासा १४. क्या केवली भगवान सिद्ध बनते हैं?

शान्ति– जी हाँ! समवसरण त्याग कर अरिहन्त प्रभु योगनिरोध धारण कर ध्यान की मुद्रा में विराजमान होकर घातिया कर्मों का नाश कर सिद्ध बनते हैं।

जिज्ञासा १५. आप यह कहना चाहते हैं कि सिद्धप्रभु मध्यलोक में बनते हैं और विराजमान सिद्धशिला के ऊपर रहते हैं, क्या यह सत्य है?

शान्ति– जी हाँ! आपने सत्य कहा, वास्तव में सिद्धक्षेत्र तो ढाई दीप का पैंतालीस लाख योजन का क्षेत्र ही है यहाँ पर सिद्ध बनते हैं और लोकाग्र या लोकशिखर पर जाकर विराजमान हो जाते हैं।

११ . सिद्ध स्वरूप वर्णन

सिद्धों का क्या कहना भैया, अनुपम गति ध्रुव अचल रहे।
भव-शव-यात्रा विफल बनाकर, शिवयात्रा में सफल रहे॥
रहें अनन्तानन्त काल तक, प्रभु लोकाग्र शिखर धामी।
त्रय जग में संहार मचे पर, टस से मस ना हों स्वामी॥

अर्थ— सिद्धों का स्वरूप बतलाते हुए कहा जा रहा है कि सिद्धप्रभु अनुपम गति को प्राप्त होते हैं, ध्रुव-अचल होते हैं तथा संसार की मृत्यु रूप यात्रा का त्याग करके मोक्ष की यात्रा में सफल होते हैं। मोक्ष प्राप्त करके भी अनन्तानन्त काल तक लोकशिखर पर विराजमान रहते हैं तथा तीनलोक में कितना भी संहार हो जाए तो भी सिद्धप्रभु अपने स्थान से तथा अपने स्वरूप से बिल्कुल भी विचलित नहीं होते।

भावार्थ— सिद्धों का स्वरूप बताते हुए कहा जा रहा है कि सिद्ध अनुपमगति, ध्रुव-अचल होते हैं तथा संसार की यात्रा का त्याग कर मोक्ष की यात्रा में सफल होकर अनन्तानन्त काल तक लोकशिखर पर विराजमान रहते हैं। तीन लोक में संहार होने पर भी सिद्धप्रभु अपने स्वरूप से विचलित नहीं होते।

जिज्ञासा १. अनुपमगति किसे कहते हैं?

शान्ति— सिद्धप्रभु कि वह गति होती है। जिसकी किसी भी वस्तु से उपमा या तुलना नहीं की जा सकती, उस गति को अनुपमगति कहते हैं।

जिज्ञासा २. ध्रुव किसे कहते हैं?

शान्ति— वह व्यवस्था जिसमें कभी भी कोई परिवर्तन नहीं होता, उसको ध्रुव कहते हैं।

जिज्ञासा ३. अचल किसे कहते हैं?

शान्ति— वह अवस्था जो कभी भी किसी भी परिस्थिति में चलायमान या चंचल नहीं होती, उसे अचल कहते हैं।

जिज्ञासा ४. भवशव-यात्रा किसे कहते हैं?

शान्ति— संसार की मृत्यु के समान यात्रा को भवशव-यात्रा कहते हैं।

जिज्ञासा ५. शिव-यात्रा किसे कहते हैं ?

शान्ति— संसार का त्याग करके मोक्ष रूपी यात्रा को करते हुए अपनी आत्मा को मुक्त करने का नाम शिव-यात्रा होता है।

जिज्ञासा ६. क्या सिद्ध परमेष्ठी अनन्तकाल तक सिद्ध अवस्था में रहते हैं, उनका कभी अवतार नहीं होता ?

शान्ति— जी हाँ! आपने सही कहा, एक बार जो आत्मा कर्मों से पृथक हो जाती है तथा सिद्ध अवस्था को प्राप्त हो जाती है वह कभी भी पुनः संसार अवस्था में नहीं आती और जिनशासन में (तीर्थंकर-वाद) में अवतारवाद का कोई स्थान नहीं है।

जिज्ञासा ७. लोक-शिखर किसे कहते हैं ?

शान्ति— तीन लोक का ऊपरी हिस्सा जिसके आगे अलोक आकाश लग जाता है उसको लोकाग्र या लोकशिखर कहते हैं।

जिज्ञासा ८. क्या सिद्ध परमेष्ठी बिल्कुल भी विचलित नहीं होते ?

शान्ति— जी हाँ! आपने सत्य कहा कितना भी संहार, उपद्रव, उत्पात और प्रलयकाल क्यों ना आ जाए परन्तु सिद्धपरमेष्ठी अपने स्वरूप से या अपने स्थान से कभी भी विचलित नहीं होते।

जिज्ञासा ९. हमने तो सुना है कि प्रभु समय-समय पर संसार में आकर भक्तों का कल्याण करते हैं, परन्तु आप तो कह रहे हैं कि वह कभी नहीं आते, तो हम क्या सत्य माने ?

शान्ति— यद्यपि आपने सत्य कहा तथापि वह जिनशासन में मान्यता या धारणा मान्य नहीं है, एक बार मुक्त होने पर जीव मुख मोड़ करके भी संसार की ओर नहीं देखते इसका सीधा साधा प्रमाण यह है कि दीक्षा लेकर मुनि संसार की तरफ नहीं देखते तो क्या मुक्त आत्माएँ संसार की तरफ देखती होंगी, नहीं! ना!!

१२ . मनुष्य पर्याय की सार्थकता

नर-पर्याय धन्यकर डाली, धन्य चार पुरुषार्थ किए।
पंच परावर्तन दुख त्यागे, सार्थक निज परमार्थ किए॥
अनादि के मिथ्यादर्शन वा, मिथ्याज्ञान चरित तज के।
भेदाभेद धार रत्नत्रय, मोक्ष गये आतम भज के॥

अर्थ– सिद्ध स्वरूप को पाकर मनुष्य पर्याय की सार्थकता करते हुए जिन्होंने चार पुरुषार्थ को धन्य किया है तथा पंचपरावर्तन रूप दुख को त्यागा है और अपने परमार्थ को भी सार्थक किया है तथा अनादिकाल के मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र को त्याग करके भेद और अभेद रूप रत्नत्रय धारण करते हुए अपनी शुद्ध आत्मा का ध्यान करते हुए मोक्ष को प्राप्त किया।

भावार्थ– मनुष्य पर्याय की सार्थकता को बताते हुए कहा जा रहा है कि जिन्होंने चार पुरुषार्थ करके पंचपरावर्तन त्याग करके परमार्थ को सार्थक करके मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का त्याग करके भेद और अभेद रत्नत्रय धारण करके आत्मा का ध्यान करके मोक्ष को प्राप्त किया है उन्होंने अपनी पर्याय को सार्थक कर लिया है।

जिज्ञासा १. पुरुषार्थ किसे कहते हैं ?

शान्ति– पुरुष के द्वारा किए जाने वाले सार्थक कार्य को पुरुषार्थ कहते हैं।

जिज्ञासा २. क्या महिलाएँ पुरुषार्थ नहीं कर सकतीं ?

शान्ति– आपने सत्य ही कहा, यदि महिलाएँ पुरुषार्थ करने में पूर्ण रूप से सक्षम होतीं तो फिर पुरुषार्थ शब्द के स्थान पर महिलार्थ शब्द का प्रयोग करना उचित होता किन्तु ऐसा है नहीं अर्थात् चार पुरषार्थ को सार्थक करने में पुरुष ही अग्रणी भूमिका निभाता है।

जिज्ञासा ३. चार पुरुषार्थ कौन-कौन से होते हैं ?

शान्ति– चार पुरुषार्थ निम्न है–

१. धर्म पुरुषार्थ–वह पुरुषार्थ जिसमे धर्म करते हुए जीवन यापन करना।

२. अर्थ पुरुषार्थ—धर्म के साथ अर्थ अर्जन करते हुए जीवन यापन करना।

३. काम पुरुषार्थ—धर्म और अर्थ के साथ सांसारिक विषय भोगों में रहते हुए धर्म करना।

४. मोक्ष पुरुषार्थ—धर्म अर्थ और काम पुरुषार्थ के साथ अपनी आत्मा को मुक्त करना।

जिज्ञासा ४. परमार्थ किसे कहते हैं ?

शान्ति— चार पुरुषार्थ करते हुए मोक्ष पुरुषार्थ को प्राप्त करने का नाम ही परमार्थ है।

जिज्ञासा ५. भेद-अभेद रत्नत्रय किसे कहते हैं ?

शान्ति— मुनि बनकर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के अलग अलग स्वरूप को भेद तथा इनकी एकता के स्वरूप को अभेद रत्नत्रय कहते हैं।

जिज्ञासा ६. क्या रत्नत्रय के अभाव में मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता ?

शान्ति— जी नहीं! कभी नहीं!! स्वप्न में भी नहीं!!! रत्नत्रय के अभाव में मोक्ष प्राप्त होना असम्भव है।

जिज्ञासा ७. मोक्ष किसे कहते हैं ?

शान्ति— आत्मा के साथ अनादिकाल से जुड़े हुए कर्मों का पूर्ण रूप से पृथक् हो जाना ही मोक्ष कहलाता है।

१३. लेखक की अंतिम धर्मभावना

हमको पंचमकाल मिला तो, मोक्ष योग्य श्रम कर न सकें।
किन्तु महाव्रत अणुव्रत धरके, दुर्गति से तो बच हि सकें॥
इतना भी यदि कर न सकें तो, सम्यग्दर्शन प्राप्त करें।
फिर 'विद्या' के 'सुव्रत' बनकर, भव का भ्रमण समाप्त करें॥

अर्थ– श्री छहढाला का उपसंहार करते हुई लेखक अपनी प्रशस्त भावना को व्यक्त कर कह रहे हैं कि हम सभी लोगों को पंचमकाल मिला है। इस काल में मोक्ष के योग्य पुरुषार्थ नहीं कर सकते किन्तु महाव्रत-अणुव्रत धरके दुर्गतियों के भ्रमण से तो बच ही सकते हैं। यदि महाव्रत और अणुव्रत धारण करने में हम सक्षम नहीं हैं तो कम से कम सम्यग्दर्शन प्राप्त करना ही चाहिए और फिर विद्या अर्थात् रतनत्रय रूप 'सुव्रत' चारित्र को धारण करके भव का भ्रमण समाप्त करना चाहिए।

भावार्थ– लेखक अपनी भावना को व्यक्त करते हुए श्री छहढाला का उपसंहार करते हैं तथा पंचमकाल के बंधन के कारण मोक्ष के योग्य पुरुषार्थ नहीं हो पाने से घबराने की आवश्यकता नहीं किन्तु महाव्रत धारण कर दुर्गतियों के चक्कर से बचना चाहिए। यदि इतना नहीं कर सकते तो सम्यग्दर्शन प्राप्त कर अपनी आत्मविद्या को प्राप्त करने के लिए 'सुव्रत' रत्नत्रय धारण कर संसार का भ्रमण समाप्त करना चाहिए।

जिज्ञासा १. दुर्गति किसे कहते हैं?

शान्ति– संसार में चार गतियाँ होती हैं–
१. नरक गति २. तिर्यंच गति ३. मनुष्य गति और ४. देव गति। इनमें से नरक और तिर्यंच गति को भयंकर दुर्गति मानते हैं किन्तु संसार में मोक्ष की अपेक्षा से मनुष्य गति सर्वश्रेष्ठ मानी गई है तथा भोगों की अपेक्षा से देव गति श्रेष्ठ मानी गई है अतः नरक और तिर्यंच को दुर्गति कहते है।

श्री षष्टम ढाल का सारांश

षष्टम ढाल में मुनि चर्या का वर्णन करते हुए लेखक कह रहे हैं कि जब कोई भव्य जीव यह जान लेता है कि संसार तो सुख नहीं है, तो सुख कहाँ है इस भावना से ओतप्रोत होकर गुरु और भगवान के समीप जाकर अपनी जिज्ञासा को शान्त करता है। तो गुरु महाराज उसे मोक्षमार्ग के माध्यम से मोक्ष को प्राप्त करना ही सुख बतलाते हैं और सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र मोक्षमार्ग कहलाता है।

इस प्रकार से सम्यग्दर्शन को सराग और वीतराग के रूप से धारण करता हुआ वीतराग सम्यग्दर्शन को प्राप्त करने के लिए सराग चारित्र को धारण करता है और मुनियों के अट्ठाईस मूलगुणों को धारण करते हुए आत्मा का ध्यान करता है।

लेखक ने अट्ठाईस मूलगुणों के यहाँ पर नाम सहित वर्णन करने में काफी सराहनीय पुरुषार्थ किया है तथा उनके स्वरूप को बतलाया है, जिसमें पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ, पाँच इन्द्रियों का निरोध, छह आवश्यक और सात शेष मूलगुणों का बड़े सुन्दर तरीके से प्रस्तुतिकरण किया है। मुनियों के दसलक्षण धर्म, बारह भावना, बारह तप और सोलहकारण भावनाओं को भाते हुए बाईस परिषह का उल्लेख कर तेरह प्रकार के चारित्र के माध्यम से ध्यान अवस्था का वर्णन किया है। षट्-कारक के भेद से रहित शुद्धोपयोग की बड़ी अच्छी व्याख्या की है तथा शुद्धोपयोग के पर्यायवाची नामों का वर्णन करते हुए यह शुद्धोपयोग मुनियों को निर्वृत्ति अवस्था में ही होता है ऐसा आगम का शास्त्रीय प्रमाण देते हुए उल्लेख किया गया है। वस्त्रधारी को शुद्धोपयोग का निषेध करते हुए लेखक ने बहुत ही स्पष्ट सिद्धान्त का उल्लेख किया है तथा मुनि मुद्रा की दुर्लभता बताते हुए मुनियों का दर्शन मात्र भव्य जीवों को होता है यह उन्होंने एक विशेष बात कही है तथा अभव्य जीवों को मुनियों का दर्शन नहीं होता होगा इसकी बात आगम के शास्त्रीय प्रमाण के द्वारा आदि पुराण का उल्लेख कर कही है।

एकत्व विभक्त आत्मा शुद्धोपयोग के द्वारा क्षपक श्रेणी के लिए उद्यत होता हुआ साधक घातिया कर्मों को नष्ट करके समवसरण में अरिहन्त बनकर विराजमान होता है तथा दिव्यध्वनि देकर के तीर्थ का प्रवर्तन कर शेष कर्मों को नष्ट कर सिद्ध अवस्था को प्राप्त होता है। सिद्ध के स्वरूप के बारे में वर्णन पढ़कर

सचमुच ऐसा लगता है जैसे साक्षात समयसार का ही यहाँ पर वर्णन किया जा रहा हो। सिद्धों के स्वरूप सुनकर आत्मा गद्-गद् हुई और अपनी नर-पर्याय को जिन्होंने सार्थक किया है तथा जिन्होंने अनन्त सुख को प्राप्त किया है, ऐसे उन सिद्ध परमेष्ठियों को नमस्कार करते हुए और अपनी पर्याय को सार्थक बनाने के लिए लेखक अंत में यही कहते हैं कि अगर कोई बन्धन है तो उन बन्धनों में हम अपने आपको अपनी योग्यता के अनुसार पुरुषार्थ करके और संसार भ्रमण को समाप्त कर सकते हैं।

अंत में लेखक ने अपने गुरु-प्रभु परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणो में नमोस्तु निवेदित करते हुए और अपनी पर्याय को सार्थक करने के लिए तथा संसार का भ्रमण समाप्त करने की सभी की भावना रखते हुए श्री छहढाला का बड़े सुन्दर तरीके से विराम दिया है।

॥ इस प्रकार श्रीछहढाला की षष्टम ढाल समाप्त हुई ॥

❑ ❑ ❑

प्रशस्ति

(दोहा)

कोरोना के काल में, याद किए गुरु मंत्र।
लिखा जिनागम रूप में, श्री छहढाला ग्रन्थ॥१॥
अल्पबुद्धि छद्मस्थ मैं, श्रुत सिद्धान्त अपार।
कमियाँ अतः सुधार के, शुद्ध पढें हों पार॥२॥
स्वतंत्रता दिवस शिवपुरी, शनि दो हजार बीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥३॥

श्री छहढाला की समाप्ति पर उसकी प्रशस्ति लिखते हुए लेखक लिखते हैं कि जब सारे विश्व में कोरोना-वायरस की महामारी चल रही थी उस समय में जब सारे धार्मिक अनुष्ठानों पर प्रतिबन्ध लगा था तो लेखक ने अपने गुरु के द्वारा दिए गए मंत्रों को तथा शास्त्र सिद्धान्त को याद करके जिनागम के रूप में एक ग्रन्थ की रचना की और इसका नाम श्री छहढाला के रूप में रखते हुए उन्होंने अपनी लघुता व्यक्त की है कि मैं अल्पबुद्धि वाला हूँ तथा छद्मस्थ हूँ और श्रुत सिद्धान्त अपार-अनन्त है अतः मुझसे कमियाँ या भूलें होना स्वाभाविक हैं इसलिए सुधार करके शुद्ध पढ़ें तथा संसार सागर से पार होने के लिए उद्यत हों। जब पंद्रह अगस्त स्वतंत्रता दिवस की सारे भारत में खुशियाँ मनाई जा रही थीं उस दिन शनिवार दो हजार बीस के दिन यह रचना पूरी हुई और अपने गुरु महाराज के चरणो में नमोऽस्तु करते हुए लेखक मुनि सुव्रतसागर महाराज अपने प्रभु को भी नमोऽस्तु करके विश्व कल्याण की भावना भाते हुए अपनी वाणी-लेखनी को यहीं विराम देते हैं।

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥

❑ ❑ ❑